कर्मकाण्ड में एक वर्षीय डिप्लोमा

प्रश्नपत्र - 01 देवपूजन विधि

विषय-सूची

खण्ड -1

इकाई- 1 पूजन के पूर्व कर्म१ - 1
दिशाचयन, आसन, शुद्धीकरण, आचमन 1
इकाई- 2 पूजन के पूर्वकर्म२ - 17
पवित्रीकरण, पवित्रीधारण, यजमानभालतिलक 17
इकाई -3 पूजन के पूर्वकर्म -3 27
यज्ञोपवीतविधान, यज्ञोपवीतधारण 27
इकाई -4 पूजन के पूर्वकर्म -4 35
ग्रन्थिबन्धन, शिखाबन्धन, पंचगव्य प्राशन 35
इकाई -5 पूजन के पूर्वकर्म -5 43
गुरुध्यान, सूर्यध्यान, गड्गाध्यान, पितृदेवता- 43

खण्ड- 2

इकाई -6 देवपूजन1 - 59
भद्रसूक्तवाचन, श्रीगणेशस्मरण-कुलादि देवता- 59
इकाई -7 देवपूजन -2 67
द्वादशगणपतिमंगलश्लोक -, पृथ्वीपूजन-, संकल्प, पृथ्वीस्पर्श- 67
इकाई -8 देवपूजन -3 86
कलशस्थापन- 86
इकाई -9 देवपूजन -4 94
गौरीआवाहन एवं पूजन-गणपति- 94
इकाई -10 देवपूजन -5 113
दीपादि पंचांगदेवपूजन 113

खण्ड-3

इकाई -11 स्वस्तिपुण्याहवाचन -1........116
आचार्यपूजन-........116
इकाई 12 -स्वस्तिपुण्याहवाचन2 -........120
पुण्याहवाचन1 -........120
इकाई -13 स्वस्तिपुण्याहवाचन -3........128
पुण्याहवाचन -3........128
इकाई -14 स्वस्तिपुण्याहवाचन -4........140
षोडशमातृकापूजन........140
इकाई -15 स्वस्तिपुण्याहवाचन -5........164
सप्तघृतमातृका पूजन........164

खण्ड -4

इकाई -16 वेदिकास्थापन -पूजन-1........179
चतुष्षष्टियोगिनी, वास्तुपुरुष........179
इकाई -17 वेदिकास्थापन -पूजन-2........219
क्षेत्रपाल, कुण्डस्थ देवतापूजन-........219
इकाई -18 वेदिकास्थापन -पूजन-3........244
नवग्रह, स्थापन एवं पूजन........244
इकाई -19 वेदिकास्थापन -पूजन-4........261
असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-स्थापन-हनुमत्ध्वज........261
इकाई -20 वेदिकास्थापन -पूजन-5........296
प्रधानपीठस्थापनपूजन-........296
परिशिष्ट........318

खण्ड - 1

इकाई- 1 पूजन के पूर्व कर्म- 1

दिशाचयन, आसन, शुद्धीकरण, आचमन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पूजा के समय दिशा का चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है तथा आसन इत्यादि का स्थान निहित होता है और शुद्धीकरण और आचमन यह भी पूजा का महत्वपूर्ण अंग है। इस इकाई में पूजन के पूर्व क्रम में इसका प्रयोग कैसे किया जाय इस प्रकाश डाला गया है। इस इकाई से निम्न बातों की जानकारी प्राप्त होगी।

क. कौन सी दिशा पूजा के लिए महत्वपूर्ण होती है।
ख. पूजा के समय कर्ता का मुख किस तरफ होना चाहिए।
ग. पूजा में शुद्धिकरण का प्रयोग कैसे किया जाता है।
घ. पूजा से पूर्व आचमन का विधान क्या है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध हो सकेगा।
क. दिशा के चयन का।
ख. आसन का।
ग. शुद्धीकरण का।
घ. आचमन का।

दिशा एवं स्थान चयनः-

किसी भी याज्ञिक कर्म में (पूजा-पाठ) में स्थान एवं दिशा बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाती है यद्यपि सारी दिशायें शुद्ध एवं शक्तिमान है मगर ऋषि परम्परानुसार सनातन धर्म में देवार्चन के लिए पूर्व एवं उत्तर और ईशान कोण का विशेष महत्व है और पितृ क्रिया में ऋषियों ने श्राद्ध की दिशा दक्षिण सबसे उत्तम मानी है।

स्नान

स्नान की आवश्यकता प्रातः काल स्नान करने के पश्चात् - मनुष्य शुद्ध होकर जप, पूजापाठ आदि समस्त कर्मों के योग्य बनता - है, अतएव प्रातः स्नान की प्रशंसा की जाती है।

नौ छिद्रों वाले अत्यन्त मलिन शरीर से दिनरात मल निकलता - रहता है, अतः प्रातः काल स्नान करने से शरीर की शुद्धि होती है।

प्रातः स्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकरं हि तत्।

सर्वमर्हति शुद्धात्मा प्रातः स्नायी जपादिकम्।।

(दक्षस्मृ0 21 9)

अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः।

स्त्रवत्येष दिवारात्री प्रातः स्नानं विशोधनम्।।

(दक्षस्मृति अ० 21 7)

शुद्ध तीर्थ में प्रातः काल स्नान करना चाहिये, क्योंकि यह मलपूर्ण शरीर शुद्ध तीर्थ में स्नान करने से शुद्ध होता है। प्रातः काल

स्नान करने वाले के पास आसुरी शक्तिया नहीं आती ।

दृष्टिफल - शरीर की स्वच्छता, अदृष्टफलपापनाश तथा पुण्य की -
हैं ये दोनों प्रकार के फल मिलते -प्राप्ति, अतः प्रातःस्नान करना
चाहिये।

प्रातःस्नानं चरित्वाथ शुद्धे तीर्थे विशेषतः।

प्रातःस्नानाद्यतः शुद्धेयेत् कायोैयं मलिनः सदा।।

नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातःस्नायिजनं क्वचितः।

दृष्टादृष्टफलं तस्मात् प्रातःस्नानं समाचरेत्।।

(दक्ष०)

रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्न
का नाश, तप और मेधाये दस गुण स्नान करने वालों को प्राप्त होते -
-हैं

गुणा दश स्नानपरस्य साधोरूपं च ! तेजश्च बलं च शौचम्।

आयुष्यमारोगयमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मेधाः।।

(दक्षस्मृति अ० 21 13)

वेदमें कहे गये समस्त कार्य स्नान मूलक हैं स्मृति-, अतएव
लक्ष्मी, पुष्टि एवं आरोग्य की वृद्धि चाहने वाले मनुष्य को स्नान
सदैव करना चाहिये।

स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रतिस्मृत्युदिता नृणाम्।

तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्टयारोग्यवर्धनम्।।

स्नान के भेद- मन्त्रस्नान, भौमस्नान, अग्निस्नान, वायव्यस्नान, दिव्यस्नान, वारुणस्नान और मानसिक स्नान- ये सात प्रकार के स्नान हैं। 'आपो हिष्ठा०' इत्यादि मन्त्रों से मार्जन करना मन्त्रस्नान, समस्त शरीर में मिट्टी लगाना भौमस्नान,, भस्म लगाना अग्निस्नान, गाय के खुर की धूलि लगाना वायव्यस्नान, सूर्यकिरण में वर्षा के जल से स्नान करना दिव्यस्नान, जल में डुबकी लगाकर स्नान करना वारुणस्नान, आत्मचिन्तन करना मानसिक स्नान कहा गया है।

मान्त्रं भौमं तथाग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च।

वारुणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्।।

आपो हि ष्ठादिभिर्मान्त्रं मृदालम्भस्तु पार्थिवम्।

आग्नेयं भस्मना स्नानं वायव्यं गोरजः स्मृतम्।।

यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद् दिव्यमुच्यते।

अवगाहमे वारुणं स्यात् मानसं ह्मात्मचिन्तनम्।।

(आचारमुख, पृ० 47-48, प्रयोगपारिजात)

अशक्तों के लिये स्नान स्नान में असमर्थ होने पर सिर के -
चे से ही स्नान करना चाहिये अथवा गीले वस्त्र से शरीर को पोंछ नी
-लेना भी एक प्रकार का स्नान कहा गया है

अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम्।

आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः।।

स्नान की विधि - उषा की लाली से पहले ही स्नान करना उत्तम माना गया है1। इससे प्राजापत्य का फल प्राप्त होता है2। तेल लगाकर तथा देह को मल-मलकर नदी में नहाना मना है। अतः नदी से बाहर तट पर ही देह-हाथ मलकर नहा लें, तब नदी में गोता लगायें3। शास्त्रों ने इसे 'मलापकर्षण' स्नान कहा है। यह अमन्त्रक होता है। यह स्नान स्वास्थ्य और शुचिता दोनों के लिये आवश्यक है। देह में मल रह जाने से शुचिता में कमी आ जाती है और रोमछिद्रों के न खुलने से स्वास्थ्य में भी अवरोध हो जाता है। इसलिये मोटे कपड़े से प्रत्येक अंग को खूब रगडरगड़कर तट पर नहा लेना चाहिये। - कर लें। निवीती होकर बेसन आदि से यज्ञोपवीत भी स्वच्छ

इसके बाद शिखा बाँधकर दोनों हाथों में पवित्रियाँ पहनकर आचमन आदि से होकर दाहिने हाथ में लेकर पृष्ठ 21 के अनुसार संकल्प करें-
अद्‌य......गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोहम्,
श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं च प्रातः,
(मध्याह्ने, सायं) स्नानं करिष्ये।'

संकल्प के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर सभी अंगों में मिट्‌टी लगायें-

अश्वक्रान्ते! रथक्रान्ते! विष्णुकान्ते वसुन्धरे!

मृत्तिके! हर में पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।

(दक्षस्मृ० 21 46, पद्‌यपु०, सृ० 20 1214)

इसके पश्चात् गंगाजी की उन उक्तियों को बोलें, जिनमें उन्होंने कह रखा है कि स्नान के समय मेरा जहाँकहीं कोई स्मरण - करेगा, वहाँ के जल में मैं आ जाऊँगी-

नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा।

विष्णुपादाब्जसम्भूता गंगा त्रिपथगामिनी।।

भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी।

द्वाद्वशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये।।

स्नानेद्यतः स्मरेन्नित्यं तत्र तत्र वसाम्यहम्'।।

(आचारप्रकाश, आचारेन्दु, पृ० 45)

जल की सापेक्ष श्रेष्ठता - कुएँ से निकाले हुए जल से झरने का जल, झरने के जल से सरोवर जल, सरोवर के जल से नदी का जल, नदी के जल से तीर्थ का जल और तीर्थ के जल से गंगाजी का जल अधिक श्रेष्ठ माना गया है –

बोध प्रश्न

1- देवआर्चन के लिए कौन सी दिशा उपयुक्त मानी जाती है

1 पश्चिम 2 दक्षिण

3 अग्नि कोण 4 उत्तर और पूर्व

2- यज्ञ मण्डप मे चतुःष्षठ यौगिनी वेदी कि दिशा होती है।

1 अग्नि कोण 2 वायत्य कोण

3 नैकृत्य कोण 4 ईशान कोण

3- पितरो के लिए उपयुक्त दिशा होती है।

1 उत्तर 2 दक्षिण

3 पूर्व 4 पश्चिम

4- चारो दिशाओ के नाम कौन से है।

1 उत्तर अग्नि कोण नैकृत्य कोण

2 वायत्य कोण

3 ईशान कोण पश्चिम

4 उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम

5- पूजा के समय यजमान का मुख होना चाहिए

1 पश्चिम की तरफ 2 दक्षिण की तरफ

3 अग्नि कोण मे 4 उत्तर या पूर्व

यज्ञ के लिए मण्डप एवं देवताओं का स्थान चयनः-

मण्डप 16 हाथ का चतुरस्त्र होना चाहिए विशिष्ट आयोजनों के लिए द्विगणित मान के मण्डप का भी विधान (विधान-पारिजात) में

बतलाया गया है मण्डप की लम्बाई चौड़ाई रस्सी द्वारा माप कर चिन्ह कर लेना चाहिए प्रत्येक दिशा के द्वार पर पांच पांच हाथ के चूर्ण सहित दो दो स्तम्भ मिला कर आठ स्तम्भ तथा चारों कोनों पर चार स्तम्भ सभी को मिलाकर 12 स्तम्भ होते हैं। मण्डप के मध्य के लिए चूर्ण सहित आठ हाथ का स्तम्भ प्रधान वेदी के चारों तरफ गाड़ना चाहिए बीच वाले खम्भों के ऊपर लकड़ी का शिखर बनाकर उसके हिंदू से चार लकड़ी निकालकर चारों खम्भों को एक कर देना चाहिए मण्डप के पूर्वादि दिशाओं में चारों द्वार के एक हांथ आगे तोरण द्वार बनाया जाता है। पूर्व में पीपल का दक्षिण में गूलर का पश्चिम में पाकड़ का तथा उत्तर में बरगद की लकड़ी से तोरण द्वार बनाना उत्तम होता है। दो हाथ चौड़ी, पांच हाथ लम्बी ध्वजा द्विगपालों के वेदी के समीप लगाना चाहिए। कुछ आचार्यो ने इसके आधे मान (माप) को भी प्रसस्त माना है। पूरब में हाथी चित्रित पीली ध्वजा, अग्निकोष में मेघ चित्रित लाल ध्वजा, दक्षिण में महिष चित्रित काली तथा नैऋत्य में सिंह चित्रित नीली और पश्चिम में मछली चित्रित श्वेत तथा वायव्य कोण में हरे रंग का हिरण अंकित ध्वजा तथा उत्तर में घोड़ा अंकित सफेद तथा पूरब ईशान के मध्य हंस अंकित लाल तथा पश्चिम नैऋत्य मध्य गरूड़ अंकित पीत ध्वजा दस हाथ के बांस में लगानी चाहिए।

स्तम्भ पर देवताओं का स्थानः-

मण्डप के मध्य जो चार स्तम्भ होंगे उनमें सर्वप्रथम ईशान स्तम्भ पर ब्रम्हा का. अग्निकोण पर विष्णु का, नैऋत्य कोण पर शंकर का, वायव्य कोण पर इन्द्र का आवाहन, स्थापन, पूजन होगा। बाहर के 12 स्तम्भों की पूजा ईशान कोण से दक्षिणावर्त प्रारम्भ होगी पहले स्तम्भ पर सूर्य, दूसरे पर गणपति, तीसरे पर यम, चौथे पर

नागराज, पांचवे पर स्कन्ध, घंठे पर वायु, सातवें पर सोम, आठवें पर वरुण, नौवें पर अष्टवसु, दसवें पर धनद, ग्यारहवें पर बृहस्पति और बारहवें पर विश्व- कर्मा की पूजा होती है। चारों दरवाजों पर पूर्व - आदिक कर्म में ऋग, जयर्पु, साम तथा अथर्व वेद की पूजा होती है।

देवताओं के निमित्त वेदियों का स्थान चयन:-

मण्डप के मध्य प्रधान वेदी तथा अग्निकोण में चतुर्षष्ठ योगिनी, वास्तु, वायव्य में क्षेत्रपाल तथा ईशान में नवग्रह 1 की वेदी बनाने का विधान है। स्थानाभाव साधक शास्त्र सम्मत नियमों का पालन करते हुए अपने अनुरूप वेदियों का निर्माण कर सकता है।

आसन:-

पूजा में आसन का बड़ा महत्व होता है किसी भी साधना या पूजा को पूर्ण करने में आसन बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं शास्त्रों में कहा गया है:-

जितासनो जितत्वासो जित संगो जितेन्द्रियः

जब टक आसन शुद्ध, सुविधायुक्त तथा शास्त्र सम्मत न हो तो साधना या पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती शास्त्रों में बतायी गयी विद्या द्वारा ही आसन का चयन उत्तम माना गया है। कुश, कम्बल, मृगचर्म, व्याघ्रचर्म, रेशम का आसन जप तथा पूजा के लिए उत्तम माना गया है। इसमें भी हर आश्रम' के लिए अलग अलग व्यवस्था बतायी गयी है।

वंशासने टु दारिद्रयं पाषाणे व्याधिरेव च ।

धरण्यां तु भवेद दुख्यम् दौर्भग्यमंद्रिदारुणे ।।

कपड़े के आसन से दरिद्रता तथा पाषाण से व्याधि और जमीन पर बैठ कर पूजा करने से दुख की प्राप्ति होती है।

वृणे धन यशो हानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः ।

तिनके पर बैठ कर पूजा करने से धन की हानि तथा पत्ते पर बैठने से चित्त भ्रम युक्त हो जाता है। इस लिए आसन का चयन जो शास्त्रों में बताया गया हो उसी का करना चाहिए कभी कभी हम किसी को देखकर वैसा करने का प्रयास करते हैं जबकि हमारे यहां हर आश्रम के लिए आसन का अलग विधान है:-

मृगचर्म प्रयत्नेन वर्जयेत् पुत्रवान गृहिः

गृहस्थ के लिए तथा पुत्रवान के लिए मृगचर्म पर बैठकर साधना, पूजा निरोध मानी गयी है। मृगचर्म का आसन महात्माओं, वैरागियों और संतो के लिए उत्तम माना गया है ।

गोशकृन्मृन्मयं भिन्नं तथा पालाशपिप्पलम् ।

लोहबद्धं सदैवार्क वर्जयेदासनं बुधः ।।

बांस, मिट्टी पत्थर, वृण, गोबर, प्लाश, पीपल के पत्ते और जिसमें लोहे की कील लगी हो ऐसे आसन पर बैठकर साधना नहीं करनी चाहिए। कुशा एवं रेशम तथा कम्बल का आसन गृहस्थ के लिए उत्तम माना गया है।

बोध प्रश्न

1 गृहस्थ के लिए कौन सा आसन उपयुक्त है।

1 बास 2 पत्थर

3 पलाश 4 कुशा रेशम कम्बल

2 किस आसन पर बैठकर साधना नही करनी चाहिए।

1रेशम 2 कम्बल

3 मृगचर्म 4 बास मिट्‌टी लोहे की कील लगी

3 गृहस्थ और पुत्रवान को किस आसन पे नही बैठना चाहिए

1 मृगचर्म 2 कम्बल

3 कुश 4 रेशम

4 महत्माओ के लिए कौन सा आसन उपयुक्त है।

1पीपल का पत्ता 2 पलाश का पत्ता

3 बास 4 मृगचर्म

5 जमीन पर बैठकर पूजा करने से प्राप्त होता है।

1 धन 2 यश

3 विजय 4 दुख

शुद्धीकरण

जिस स्थान पर बैठकर व जिस आसन पर बैठकर साधना या पूजा की जाये उस स्थान अथवा आसन को पवित्र करने का विधान शास्त्रों में बतलाया गया है आचार्य को यजमान की कार्य सिद्धि की भावना हृदय में रखते हुए पूरी श्रद्धा के साथ दाहिने हाथ में जल देकर विनियोगः चाहिएः-

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः

कूर्मो देवता आसन पवित्र करणे विनियोगः।

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ आचार्य यजमान को आदेशित करे कि यजमान इस जल को पूरी श्रद्धा के साथ सामने छोड़ दे। तत्पश्चात् हाथ में कुशा अथवा किसी पात्र द्वारा या तो हाथ से ही जल लेकर ही

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि! पवित्र कुरु चासनम् ।।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर आसन तथा स्थान आदि को पवित्र करना चाहिये ।

सनातन धर्म में ऐसा माना जाता है शुद्धि का हमारे जीवन में बहुत बड़ी आवश्यकता होती है वैसे तो शास्त्रों में मनः पूतं समाचरेत जैसे शब्दों से बतलाया गया है मन की शुद्धता सबसे बड़ी शुद्धता है परन्तु कर्म- में कर्म के माध्यम से, मन्त्रों के माध्यम से स्थान एवं आसन को शुद्ध करने का विधान है।

बोध प्रश्न

1 शुद्धिकरण किस विद्या से उत्तम माना जाता है।

1 दूध छिड़क कर 2 दही छिड़क कर

3 इत्रच छिड़क कर 4 कुशा से जल या गंगाजल छिड़क के

2 शुद्धिकरण के लिए उपयुक्त है।

1 पीपल का पत्ता 2 आम का पत्ता

3 अन्य पत्र 4 कुशा एवं दूर्वा

3 वाह्य शुद्धि मे आता है ।

1 आत्म शुद्धि 2 मानसिक शुद्धि

3 मुख शुद्धि 4 आसन पात्र सामाग्री शुद्धि

4 शुद्धिकरण का उत्तम द्रव्य है।

1 दूध 2 दही

3 घी 4 जल एवं गंगाजल

5. शुद्धिकरण में महत्प होता है।

1. जल 2. कोप जल

3. गंगा जल 4. अन्य पदार्थ

आचमनः-

प्रत्येक साधना तथा पूजा पाठ में आचमन का विधान है आचमन से केवल अपनी ही शुद्धि नहीं। ब्रम्हा से लेकर वृण तक को तृप्त कर देते हैं। आचम न करने पर हमारे समस्त कृत्य व्यर्थ हो जाते हैं। 1 ईशान या पूर्व की ओर मुख करके बैठ जाए हाथ घुटनों के भीतर रखे दक्षिण और पश्चिम की ओर मुख करके आचमन न करें।

यः क्रियां कुरुते मोहादनाचम्यैव नास्तिकः ।

भवन्ति हि वृथा तस्य क्रियाः सर्वा न संशयः ।।

पुराणसार

ऐशानाभिमुखो भूत्वोपस्पृशेच्च यथाविधि ।।

हारीता

आचमन के लिए जल की मात्राः-

आचमन के लिए जल की मात्रा सभी वर्णो के लिए अलग अलग बतायी गयी है ब्राम्हण के लिए आचमन का जल हृदय तक पहुंचे, क्षत्रिय के लिए कष्ठ तक, वैश्य के लिए तालू तक, शूद तथा महिलाओं के लिए जिह्वा तक पहुंच जाये इतना जल लेना चाहिए।

हृत्कष्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः ।

शुध्येरन् स्त्री च शूद्रश्य सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः ।।

(याज्ञवल्क्यस्मृति, आचाराध्याय)

आचमन करने की विधिः-

हथेली को मोड़कर गौ के कान की तरह बना ले कनिष्ठिका और अंगूठे को अलग कर लें शेष अंगुलियों को सटाकर मन्त्रों के माध्यम से एक-एक मन्त्र बोलते हुए आचमन करें। आचमन करते समय आवाज नहीं होनी चाहिए:-

ॐ केशवाय नमः

ॐ नारायणाय नमः

ॐ माधवाय नमः

आचमन के बाद अंगूठे के मूल भाग से होठों को दो बार पोंछ लें और कर हाथ धुल लें। पुनः ॐ हृषीकेशाय नमः बोल

आचमन बैठकर करना चाहिए किन्तु यदि नदी या जलाशय के मध्य कोई कार्य हो तो घुटने के ऊपर जल में खड़े होकर के तथा घुटने के नीचे जल में बैठकर आचमन का विधान है।

बोध प्रश्न

1 आचमन कितने बार किया जाता है।

1 एक बार 2 दो बार

3 पाच बार 4 तीन बार

2 आचमन के समय किस अँगुली से दाहिने हाथ का जल स्पर्श करने से सोमपान का फल मिलता है।

1 मध्यमा से 2 कनिष्ठका से

3 अनामिका से 4 तर्जनी स

3 आचमन किस तरह करना चाहिए

1 आचमन पात्र से 2 अन्य किसी पात्र से

3 बाए हाथ से 4 दाहिने हाथ से

4 आचमन न करने से क्या होता है

1 पाप लगता है। 2 पूण्य क्षीण होता है।

3 कोर्द दोष नही 4 समस्त कृत्य व्यर्थ होता है

5. आचमन कब-कब करना चाहिए।

1. पूजा में 2. भोजन में

3. सयन में 4. गमन में

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पूजा के लिए उत्तम दिशा कौन सी मानी जाती है।

प्रश्न - 2 गृहस्थ को कौन से आसन पर बैठ कर पूजा करनी चाहिए।

प्रश्न - 3 शुद्धीकरण और आचमन में अन्तर बतायें।

प्रश्न - 4 उत्तर और पूर्व के कोने वाली दिशा का नाम बताओ।

प्रश्न - 5 आचमन भगवान के किन नामों को बोल कर करना चाहिए।

♦♦♦

इकाई- ०२ पूजन के पूर्वकर्म- २
पवित्रीकरण, पवित्रीधारण, यजमानभालतिलक

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पूजन के पूर्व कर्म में पवित्रीकरण और पवित्रीधारण तथा यजमान के मस्तक पर तिलक के विधान के विषय में प्रकाश डाला गया है। सनातन परंपरा में क्रम का बडा महत्व होता है। पवित्रीकरण के पश्चात पवित्रीधारण तथा और विधि कैसी की जाय इस पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई से हमें निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. पवित्रीकरण क्या है।

ख. पवित्रीकरण और पवित्रीधारण दोनों में अंतर।

ग. पवित्रीधारण का नियम क्या है ।

घ. यजमान के मस्तक पर तिलक कैसा होना चाहिए।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध हो सकेगा।

क. पवित्रीकरण का।

ख. पवित्रीधारण का।

ग. यज्ञमान के मस्तक पर तिलक का।

पवित्रीकरणः-

किसी भी साधना एवं पूजा में आसन, स्थान शुद्धि के बाद पवित्रीकरण का विधान बताया गया है जो त्रिकुश अथवा पंचकुश के माध्यम से जल छिड़कते हुए पवित्री करण किया जाता है पवित्रीकरण में उपयोग होने वाला कुशा एक निश्चित मुहुर्त पर, निश्चित समय पर लाया गया हो हो सालभर अथवा नये कुरा के माध्यम से पवित्रीकरण का विधान है।

यज्ञादिक कर्म में पवित्र एवं पवित्री के लिए कुश का चयनः-

यज्ञादिक कर्म में उपयोग किये जाने वाला कुशा या तो भाद्रपद की अमावस्या को लाया गया हो जो साल भर प्रयोग में लाया जाया जाएगा अगर अमावस्था के दिन सोमवार हो तो सोमवती अमावस्या के दिन लाया गया कुशा 12 वर्ष तक प्रयोग में लाया जा सकता है यदि इनका अभाव हो तो व्यक्ति नया कुशा लाकर करके कार्य होने तक उसका प्रयोग कर सकता है प्रयोग के उपरान्त यह पूजा के उपयोग के लिए नहीं रह जाटाः-

कर्मान्त पुनरादाय पवित्रद्वितयं द्विजः
शुचौ देशे विनिक्षिप्य दद्यादेतत् पुनः पुनः ।।

अतएव पूजा कर्म में प्रयुक्त होने वाले कुश का विशेष ध्यान देकर चयन करना चाहिए।

पूजा में प्रयोग करने योग्य कुश:-

जिस कुश का अ अग्र भाग कटा न हो, जला न हो जो मार्ग गन्दी जगह पर न हो और जो गर्भित न हो ऐसा कुरा पूजा में ग्रहण करने योग्य होता है।

पवित्र करने की विधि:-

त्रिकुश अथवा पंचकुश को एक करके मूल भाग की तरफ पलों को पह के अग्र भाग से जल द्वारा निम्न हुआ आचार्य यजमान को पवित्र करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः वा ॥

मन्त्रोपरान्त यजमान तथा पूजन सामग्री को जल से प्रोक्षण करने पर वह स्पर्शया स्पृश्य तथा अन्य दोषों से शुद्ध माना जाता है।

पूजन के पूर्व इस विद्या के माध्यम से पवित्र करके यजमान और सामग्री को पूजन के उपयुक्त बनाया जाता है। बिना पवित्र हुए पूजा अथवा साधना शुभ फल दायी नहीं होती इसलिए पूजन के पूर्व बतायी गयी विधा द्वारा पवित्र करण किया जाए।

यदि पवित्र करने में कुशा न मिले तो कहीं कहीं दूर्वा के माध्यम से भी पवित्रीकरण का विधान है।

बोध प्रश्न

1 पवित्री करण से किस रिषी का तात्पर्य है।

1 गौतम रिषी 2 भरद्वाज रिषी

3 नारायण रिषी 4 वामदेव रिषी

2 पवित्री करण किस द्रव्य से उत्तम माना गया है।

1 दूध 2 दही

3 गोमूत्र 4 जल या गंगा जल

3 पवित्री करण से किस देवता का तात्पर्य है।

1 ब्रह्मजी 2 कृष्ण जी

3 रामचन्द्र जी 4 विष्णु जी

4 पवित्री करण से सम्बंध है।

1 शरीर का 2 मन का

3 वास्तविक वस्तु का 4 हृदय का

5. शुद्धिकरण में महत्प होता है।

1. जल 2. कोप जल

3. गंगा जल 4. अन्य पदार्थ

पवित्रीधारणः-

साधना, पूजा, जप इत्यादि में तथा पितृ कर्म में पवित्रीधारण का विधान है। पवित्री कुश से तैयार की जाती है कहीं कहीं पवित्री के स्थान पर स्वर्ण मुद्रिका को भी पवित्री के स्थान पर मान्यता दी गयी है दो कुशों से बनायी हुयी पवित्री दायें हाथ की अनामिका तथा तीन कुशों से बनी पवित्री बायें हाथ की अनामिका मूल में पहनना चाहिए

यदि बिना पवित्री धारण के पूजा या साधना की जाये वह शास्त्र सम्मत नहीं है ब्रम्हपुराण में बताया गया है कि:-

मन्त्रं विना धृतं यत् तत् पवित्रमफलं भवेत् ।

तस्मात् पवित्रे मन्त्राभ्यां धारयेदभिमन्त्य च ।।

पवित्र ते तु' इत्यादि मन्त्रद्वितयमस्य तु ।

प्रणवस्त्वस्य मन्त्रः स्यात् समस्तव्याहतिस्तु वा ।।

(ब्रद्मपुराण)

समूलाग्रौ विगर्भौ तु कुशौ छौ दक्षिण करे।

सत्ये चैव तथा तीन वै विभृयात् सर्वकर्मसु ।।

(छान्दोग्यपरिशिष्ट)

तस्मिन् क्षीणे क्षिपेत् तोये वौ वा यज्ञसूत्रवत्।

भूमिं खात्वा तथा शुद्धां मृदिस्तारेण पूरयेत् ।

(आश्वलायन)

पूजा के लिए पवित्री अति आवश्यक है में प्रयोग होने वाले कुश पूर्व वर्णित नियमानुस एकत्रित किये जाए उसी से पवित्री का हो तथा पूजनोपरान्त यदि नये कुश की पविती है तो उसे जल में या तो जमीन में खोदकर ॐ कहकर दबा दें अमावस्या द्वारा संग्रहीत श के द्वारा निर्माण की गयी पवित्री वर्ष पर्यन्त तक उपयोग में आती है तथा नये कुशा की पवित्री (पैंटी) कार्य के उपरान्त त्याज्य है।

पवित्रीकरण धारण करने की विधिः-

कुशद्‌वारा निर्मित पवित्री को लेकर बायें हाथ से दाहिने हाथ की अनामिका तथा दायें हाथ से बायें हाथ की अनामिका में निम्न मंत्र पढ़ते हुए धारण करना चाहिएः-

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव,
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य
यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

निम्न मन्त्रों से पवित्री धारण करने के उपरान्त हि व्यक्ति पूजन का अधिकारी होता है पवित्री पहन कर आचमन करने से पवित्री जूठी नहीं होती तथा स्वर्ण मुद्रिका भी पवित्री के स्थान पर धारण की जा सकती है जिसका वर्णन शक्ति कमलाकर में दर्शाया गया हैः-

’यथेष्टेन सुवर्णेन कारयेदङ्गुलीयकम् ।”

(शान्तिकमलाकर)

तथा पवित्रीधारण करके आचमन करने पर भी पवित्री शुद्‌ध रहती है मार्कण्डेय जी ने कहा हैः-

सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम् ।

नोच्छिष्टं तत् पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत् ॥

एतावता निम्न सिद्‌धान्तानुसार वैदिक कर्म की संम्पूर्णता के लिए शास्त्र सम्मत विद्‌या द्‌वारा कुरा निर्मित पवित्री पूरी श्रद्‌धा के साथ धारण करके पूजन कर्म प्रारम्भ करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 पवित्री धारण किस अँगुली मे करना चाहिए

1 तर्जनी 2 मध्यमा

3 अनामिका 4 कनिष्ठिका

2 पवित्री किस द्रव्य कि उत्तम मानी जाती है।

1 दूब 2 लोहे कि

3 चादी 4 कुश

3 पूजा के समय पवित्री धारण अनामिका मे क्यों करते है। कौन से देवत का वास होता है।

1 इन्द्र 2 नारायण

3 ब्रह्म 4 सूर्य

4 पवित्री कहा तक अँगुली मे होनी चाहिए।

1 ऊपरी हिस्से मे 2 निचले हिस्से मे

3 मध्य मे

यजमान भाल तिलक:-

"प्रयोग पारिजातानुसार पूर्ण कर्म में पूजा प्रारम्भ के पूर्व तिलक, चन्दन या भस्म धारण का विधान बताया गया है:-

ललाटे तिलकं कृत्वा संध्याकर्म समाचरेत् ।

अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम् ।।

जब तक ललाट पर तिलक, चन्दन या भस्मन लगी हो उसके द्वारा किया गया पूजा कर्म निरर्थक बतलाया गया है इसलिए पूजा कर्म में तिलक धारण अति आवश्यक है यह तिलक आचार्य साथ नहीं तो व्यक्ति स्वयं तिलक धारण करे। द्वारा मन्त्रों के

तिलक धारण के प्रकार:-

गंगा मृतिका या गोपीचन्दन से ऊर्ध्वपुन्द्र भस्म से त्रिपुंड और श्रीखण्ड चन्दन से दोनों प्रकार का तिलक कर सकते हैं चन्दन के अभाव हरिद्रा (हल्दी) तथा कुमकुम तथा रोली से भी तिलक का विधान शास्त्रों में बतलाया गया है ब्रम्हाण्ड पुराण में बतलाया गया:-

मृत्तिका चन्दनं चैव भस्म तोयं चतुर्थकम् ।

एभिर्द्रव्यैर्यथाकालमूर्वपुण्ड्रं समाचरेत् ।।

(ब्रम्हाण्ड पुराण)

तिलक धारण के बिना पूजा कर्म सिद्ध नहीं माना जाता है।

भस्मादि तिलक विधिः-

तिलक हमेशा बैठकर लगाना चाहिए अपने अपने आचार्यों के अनुसार तिलक लगाना चाहिए चन्दन स्वयं के लिए नहीं घिसना चाहिए भगवान की सेवा से बचे हुए चन्दन का प्रयोग ही स्वयं के लिए करना चाहिए।

अंगूठे से नीचे से ऊपर की ओर ऊर्ध्व पुण्ड्र लगाना चाहिए तथा तीनों अंगुलियों के सहारे त्रिपुण्ड लगाना चाहिए। प्रायः पूजा तथा यज्ञादिक कर्म में भस्म का प्रयोग ज्यादा किया जाता है तो यहां पर भस्म धारण विधि विस्तार से बतायी जा रही हैं

दोपहर से पहले जल मिलाकर, मध्यान में चन्दन मिलाकर भस्म लगाने का विधान है अंगूठे से ऊर्ध्वपुण्ड्र करने के बाद मध्यमा और अनामिका से बायीं ओर से प्रारम्भ कर दाहिने ओर लगायें

यदि चन्दन और भस्म इत्यादि की व्यवस्था न हो तो जल तथा पवित्र तीर्थ मृत्तिका से भी तिलक का विधान है पूजा कर्म की सिद्धि में सहायक होता है आचार्य के मतानुसार या अपने सम्प्रदाय के मतानुसार ही तिलक धारण करें।

तिलक धारण के उपरान्त ही व्यक्ति पूजा कर्म का अधिकारी होता है।

बोध प्रश्न

1 यजमान को तिलक लगने कि दिशा कौन सी है

1 अग्नेय कोण 2 ईशान कोण

3 वायत्य कोण 4 नैऋत्य कोण या पूर्व

2 यजमान को तिलक कितने प्रकार से लगाया जाता है।

1 एक 2 दो

3 तीन 4 या उससे अधिक

3 यजमान को तिलक लगते समय किस देवता का ध्यान करना चाहिए।

1 इन्द्र 2 राम जी

3 कृष्ण 4 ब्रह्म विष्णु महेश

4 पूजा के समय तिलक न लगाने से क्या होता है।

1 पूजा अधूरी रहती है2 पुण्य नही मिलता

3 पाप लगता है। 4 कार्य निरर्थक माना जाता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पवित्री करण को विधान विस्तार से बतायें।

प्रश्न - 2 पवित्री धारण करते समय किन मंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न - 3 पवित्री दोनों हाथ के किन अंगुलियों में धारण की जाती है।

प्रश्न - 4 तिलक कितने प्रकार के होते हैं।

प्रश्न - 5 तिलक धारण करने का मंत्र।

♦♦♦

इकाई- 3 पूजन के पूर्वकर्म- 3
यज्ञोपवीतविधान, यज्ञोपवीतधारण

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पूजन के पूर्व कर्म में यज्ञोपवीत का महत्व तथा निर्माण की विधि तथा यज्ञोपवीत बदलने की प्रक्रिया और यज्ञोपवीत धारण कैसे किया जाय इस पर प्रकाश डाला गया है। यज्ञोपवीत हमारी सनातन परंपरा का का महत्वपूर्ण अंग है। इस इकाई से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. यज्ञोपवीत क्या है।

ख. यज्ञोपवीत का निर्माण कैसे होता है।

ग. यज्ञोपवीत धारण कैसे करना चाहिए।

घ. यज्ञोपवीत बदलना कैसे चाहिए।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. यज्ञोपवीत बनाने के विधि का।

ख. यज्ञोपवीत धारण करने की विधि का।

यज्ञोपवीत का विधान:-

उपनयन के समय तथा वेदाध्ययन 1 से पूर्व आचार्य द्वारा यज्ञोपवीत धारण करवाया जाता है ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तीनों

आश्रमों में अनिवार्यता अखण्ड रूप में धारण करने का आदेश है किन्तु धारण किया हुआ यज्ञोपवीत अवस्था विशेष में बदलकर नवीन यज्ञोपवीत धारण करना पड़ता है

यज्ञोपवीत निर्माणः-

कच्चे सूत से दाहिने हाथ के अंगूठे को छोड़कर चारों अंगुलियों को एक करके 96वे चौवे को गिने बिना तोड़े उस धागे को तीन गुना कर लें जो छोटा बड़ा न रहे एक समान रहे तथा तकली के माध्यम से बर लें बरने के उपरान्त उस धागे को बिना तोड़े तीन सामान भागों में बांट लें तथा तीनों को एक करके पुनः बर लें फिर उतारकर अपने प्रवरानुसार गांठ लगालें तथा ब्रम्ह गांठ लगाकर पहनने योग्य बना लें।

यज्ञोपवीत कब बदलें:-

यदि यज्ञोपवीत कन्धे से सरककर बायें हाथ के नीचे आ जाये, गिर जाए, कोई धागा टूट जाए शौच आदि के समय कानपर डालना भूल जाए और अस्पृश्य से स्पर्श हो जाए तो नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रमवाले को दो यज्ञोपवीत पहनना आवश्यक है। ब्रम्हचारी एक जनेऊ पहन सकता है। चादर और गमछे के लिए एक यज्ञोपवीत और धारण करे। चार महीने बीतने पर नया यज्ञोपवीत पहन लें इसी तरह उपाकर्म में, जनना शौच और मरणा शौच में, श्राद्ध में, यज्ञ आदि में चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण के उपरान्त भी नये यज्ञोपवीतों का धारण करना अपेक्षित है और यज्ञोपवीत कमर तक रहे।

वामहस्ते व्यतीते तु तत् त्यक्त्वा धारयेत् नवम्।

पतितं त्रुटितं वापि ब्रम्हासूत्रं यदा भवेत्।

नूतनं धारयेद्विप्रः स्नात्वा संकल्पपूर्वकम् ।।

मलमूत्रे त्यजेद् विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक् ।

उपवीतं तदुत्सृज्य दध्यादन्यन्नवं तदा ।।

(आचारेन्द्र)

बोध प्रश्न

1 यज्ञोपवीत मे कितने धागे होते है।

1 एक 2 दो

3 तीन 4 चार

2 यज्ञोपवीत हमे कितने रिण को प्रतिदिन याद दिलाता है

1 एक 2 दो

3 तीन 4 या उससे अधिक

3 यज्ञोपवीत का द्वितीय सूत्र किस रिण से मुक्त होने कि सूचना देता है।

1 देव रिण 2 पितृरिण

3 रिषी रिण 4 आचार्य रिण

4 यज्ञोपवीत का तीसरा सूत्र किस रिण से मुक्त होने कि सूचना देता है।

1 देव रिण 2 पितृरिण

3 रिष्रिण 4 आचार्य रिण

5 यज्ञोपवीत कितने रिषी का आवाहन होता है।

1 एक 2 दो

3 तीन 4 सप्तरिषी

यज्ञोपवीत धारणः-

यज्ञोपवीत पूर्व लिखित विधानुसार द्वारा तैयार होने के बाद यज्ञोपवीत में देवताओं का आवाहन करें।

नोटः-

जैसे पत्थर ही भगवान नहीं होता प्रयुक्त मन्त्रों से भगवान को उसमें प्रतिष्ठित किया जाता है वैसे ही यज्ञोपवीत धागा मात्र नहीं होता प्रयुक्त निर्माण के समय से ही यज्ञोपवीत में संस्कारों का आधान होने लगता है इसकी ग्रन्थियों में और नवतन्तुओं में ओंकार, अग्नि आदि भिन्न भिन्न देवताओं के आवाहनादि कर्म होते हैं सर्वप्रथम यज्ञोपवीत को प्लाश आदि के पत्ते पर रखकर जल से प्रच्छालित करें फिर निम्नलिखित मन्त्रों से चावल अथवा पुष्प के माध्यम से अभिमंत्रित करें।

प्रथमतन्तौ ॐ ओंकारमावाहयामि । द्वितीयतन्तौ ॐ अग्नि-मावाहयामि । तृतीयतन्तौ ॐ सर्पानावाहयामि । चतुर्थतन्तौ ॐ सोममावाहयामि पञ्चमतन्तौ ॐ पितृनावाहयामि । घष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतिमावाहयामि । सप्तमतन्तौ ॐ अनिलमावाहयामि । अष्टमतन्तौ ॐ सूर्यमावाहयामि । नवमतन्तौ ॐ विश्वान् देवानावाहयामि । प्रथमग्रन्थौ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाह- यामि । द्वितीयग्रन्थौ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि । तृतीयग्रन्थौ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि । इसके बाद 'प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः - इस मन्त्र से 'यथास्थानं न्यसामि' कहकर उन-उन तन्तुओंमें न्यास कर चन्द्रन

इसके बाद प्रणवाधावाहित देवताभ्यो नमः इस मन्त्र से यथा

स्थानं न्यसामि कहकर उन उन तन्तुओं में न्यास कर चन्दन आदि से पूजा करें। फिर जनेऊ को दस गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करें इसके उपरान्त धारण करने का विनियोग पढ़कर नूतन यज्ञोपवीत को जल गिरायें।

विनियोग - **ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः- लिङ्गोक्ता देवताः, त्रिष्टुप् छन्दः, यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ।**

विनियोग के उपरान्त मन्त्र बोलते हुए एक एक यज्ञोपवीत धारण करें पहले यज्ञोपवीत धारण । के बाद आचमन करें पुनः दूसरा यज्ञोपवीत धार करें और आचमन कर लें।

यज्ञोपवीत धारण मंत्र:-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि जीर्ण यज्ञोपवीतका त्याग-

इस प्रकार की विद्या द्वारा यज्ञोपवीत धारण किया जाना चाहिए शास्त्रों में तथा आचार्य कर्म में रत आचार्यगण पूर्व में बतलायी गयी विधा से श्रावणी कर्म के समय यदि जनेऊ (यज्ञोपवीत) का पूजन कर लेते हैं तो वह वर्ष पर्यन्त सिद्ध माना जाता है

सम्भव हो तो श्रावणी उपाकर्म में शामिल होकर यज्ञोपवीत पूजन करें श्रावणी उपाकर्म यजुर्वेदीय ब्राम्हणों के लिए श्रावण मास के पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र में मनाया जाता है। गंगा या नदी या जलाशय के तट पर बैठकर महासंकल्प द्वारा प्रायश्चित के उपरान्त उपाकर्म सम्पन्न होता है कुशल आचार्यों के निर्देशन में यज्ञोपवीत पूजन किया जाता है श्रावणी उपाकर्म के समय पूजित यज्ञोपवीत वर्ष

पर्यन्त सिद्ध माना जाता है।

उसको धारण करने में आवाहन या पूजन की आवश्यकता 'नहीं पड़ती है। एतावता साधक अपनी सुविधानुसार यज्ञोपवीत की व्यवस्था कर पूजन पूर्व यज्ञोपवीत धारण करें।

जीर्ण-यज्ञोपवीत-त्यागः-

यज्ञोपवीत धारण के उपरान्त ही जो पहले से पहना हुआ यज्ञोपवीत है उसको बड़ी साव- धानी और श्रद्धा के साथ उतारकर विसर्जित करना चाहिए। मनु जी महराज कहते हैं, यज्ञोपवीत का त्याग भी शास्त्रोस्त पद्धति से यदि न किया जाए तो उसका भी दोष लगता है:-

मन्त्रेण धारणं कार्यं मन्त्रेण च विसर्जनम् ।

च सदा सद्भिर्नात्र कार्या विचारणा ।।

(मनु)

मन्त्र के द्वारा यज्ञोपवीत धारण तथा मन्त्र के द्वारा ही यज्ञोपवीत का विसर्जन भी करना चाहिए।

यज्ञोपवीत त्यागने की विधा:-

पुराने यज्ञोपवीत को मालाकार बना कर (दाहिना हाथ जनेऊ से बाहर कर लें वह मालाकार बन जाएगा) मालाकार होने के बाद यज्ञोपवीत नीचे से पकड़े बीच में बांया हाथ रखकर उस हाथ के ऊपर से नीचे पकड़े हुए जनेऊ को पुनः माला जैसे पहन ले बाया हाथ निकालने के उपरान्त जनेऊ को दाहिने कन्धे से निकाल दें। और जल

में निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए जल में प्रवाहित कर दें।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

इसके बाद यथा संख्या गायत्री मन्त्र का जप करें और भगवान को समर्पित कर दें। बतलायी गये विद्या में जनेऊ की गांठ इत्यादि अपने प्रवर के अनुसार लगायें यज्ञोपवीत अपने चौवे (चारो अंगुली से पढवे भाप कर बनाया जाए तभी वह आपके पहनने योग्य बनता है या तो सुविधानुसार बाजार इत्यादि से भी व्यवस्था कर यज्ञोपवीत धारण कर सकते हैं। बिना यज्ञोपवीत धारण के पूजा सफल नहीं मानी जाती इसलिए पूजन के पूर्व यज्ञोपवीत धारण आवश्यक है।

बोध प्रश्न

1 यज्ञोपवीत के सूत्र कि लम्बाई कितनी अंगुल होती है।

1 दस अंगुल 2 बीस अंगुल
3 पचास अंगुल 4 छानवे अंगूल

2 यज्ञोपवीत धारण करते समय बालक के हाथ मे क्या होता है।

1 पात्र 2 खड्ग
3 कुशा 4 देड़

3 यज्ञोपवीत संस्कार किस मंत्र से शुरू होता है।

1 मृत्युंजय 2 नवार्ण
3 द्वादशाक्षर 4 गायत्री

4 यज्ञोपवीत मे कौन से देवता रहते है।

1 इन्द्र 2 हनुमान
3 कृष्ण 4 ब्रह्म विष्णु महेश

5 यज्ञोपवीत से किस रिषी का तात्पर्य है।

1 नारायण रिषी	2 नामदेव रिषी
3 मेरूपृष्ठ रिषी	4 परमेष्ठी रिषी

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 यज्ञोपवीत के विनयोग का मंत्र बतायें।

प्रश्न - 2 यज्ञोपवीत धारण करने की विधा का वर्णन करें।

प्रश्न - 3 यज्ञोपवीत कितने सूत्रों से मिलकर तैयार होते हैं।

प्रश्न - 4 यज्ञोपवीत बनाने की विधा का वर्णन करें।

प्रश्न - 5 यज्ञोपवीत धारण के बाद आचमन कितने बार करना चाहिए।

♦♦♦

इकाई- 4 पूजन के पूर्वकर्म- 4
ग्रन्थिबन्धन, शिखाबन्धन, पंचगव्य प्राशन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पूजन के पूर्व कर्म में ग्रन्थिबंध, ग्रन्थिबंध के उपरांत शिखा बन्धन का महत्व और आत्मशुद्धि के लिए पंचगव्य का पान कैसे किया जाय तथा इसका क्या महत्व है इस विषय पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. ग्रन्थिबंधन कैसे और कब करना चाहिए।

ख. ग्रन्थिबंधन के समय पति और पत्नी की दिशा क्या रहेगी।

ग. शिखाबंधन पर प्रकाश।

घ. पंचगव्य पान विधि।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. ग्रंथिबंधन का।

ख. शिखा बंधन का।

ग. पंचगव्य प्राशन का।

ग्रन्थि बन्धनः-

सनातन परम्परा में पत्नी को अर्धांगनी बताया गया है यदि किसी पूजा कर्म में पत्नी को साथ न लें तब भी पूजा सफल नहीं मानी जाती यदि विवाह कर्म हो गया है तो पूजा के समय पत्नी का साथ रहना अति आवश्यक है विवाह के समय अग्नि को साक्षी मानकर यह वचन कन्या अपने पति से मांगती है पूजा, व्रतोद्यापन तथा समस्त शुभ कर्म में यदि आप मुझे साथ रखोगे तभी मैं आपकी वामांगी बनूंगी तब वर अग्नि को साक्षी मानकर इस वचन को स्वीकार करता है विवाह की विधा में ही चौथी परिक्रमा में ही आचार्य के निर्देशन में ग्रन्थि बन्धन होता है जिसको किसी भी शुभ कार्य विशेष में किया जाता है।

पूजा के समय यजमान पत्नी के साथ आसन पर बैठ जाये तथा यजमान पत्नी को अपने दाहिने बैठाये पूजा कार्य में दाहिने बैठने का विधान है और आशीर्वाद के समय बायें बैठाये।

पूर्व कथानुसार यजमान को बैठा कर उनकी पत्नी को दाहिने हाथ की तरफ बैठा दे फिर किसी कन्या द्वारा य खुद के आचार्य द्वारा फूल, चावल, सुपारी, पैसा आदि लेकर यजमान के परके (गमछा) और पत्नी के चुनर में बाँध देना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 ग्रन्थिबंधन क्यों होता है क्या है

1 लोकरीत 2 वेदरीत

3 पारम्परिक 4 या इनमे से कोई नही

2. ग्रन्थिबंधन में पत्नी पति के किस भाग में होती है।

1. सामने 2. पीछे

3. दाहिने 4. बाएँ

3. ग्रन्थिबंधन में वस्त्र होने चाहिए।

1. एक 2. दो

3. बहुत सारे 4. एक भी नहीं

4 . शिखाबंधन करना चाहिए

1. पूजा समय 2. स्ना न समय

3. सयन समय 4. अन्य कार्य

5. पंचगव्यय निर्माण होता है

1. पूजा समय 2. सशन समय

3. भोजन समय 4. सांध्योहपासन

पंचगव्यः-

सनातन धर्मानुसार किसी पूजा में बैठने पर पूजन से पूर्व पंचगव्य पान को विधान है। आचार्य के मतानुसार पंचगव्य पान मात्र से शरीर तथा अस्थि में स्थित सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

देशी गाय के मूत, गोबर, दही, दूध, घी से इसका निर्माण होता है।

सबसे पहले गोबर लें एक विशेष निर्देश सारे पदार्थ देशी गाय के होने चाहिए पंचगव्य उन्हीं से बनता है। सबसे पहले गोबर लेकर उसको साथ कपड़े पर रखें, कपड़ा सात परत का होना चाहिए गोबर के ऊपर गोमूत्र डालें अब गोबर और गोमूत्र मिलाने के बाद उसमें दही डालें फिर दूध और फिर घी।

गोबर का दो गुना मूत्र, मूत्र को दो गुना दही, दही को दो गुना दूध, दूध का दो गुना घी डाल कर पंचगव्य तैयार किया जाता है।

तैयार पंचगव्य को पात्र में रख लें फिर निम्न मंत्रों द्वारा पान करना चाहिए और समस्त पूजन सामग्री पर भी छिड़काव करना चाहिए पंचगव्य पूजा के पहले का ही विधान है।

और पूजा कई दिनों की हो तो पहले दिन ही पंचगव्य लिया जाता है।

देहि अस्थि गतं पापम्, देहे तिष्ठिति मामकीम्।

प्राश्यनात् पंचगव्यस्थ, दहति अग्निर्वेन्धनम्।।

पंचगव्य पान से मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके छिड़काव से घर में शन्ति आती है।

पूजन के पहले पंचगव्य पीने से सिद्धी की प्रप्ति होती है।

बोध प्रश्न

1 पंचगव्य का निर्माण किस धातु के पात्र मे नही करना चाहिए।

1 लोहे 2 पीतल

3 ताम्र 4 चादी

2 पंचगव्य का यज्ञादि कार्यो मे महत्व है।

1 देह शुद्धि 2 मन शुद्धि

3 आत्म शुद्धि 4 इनमे से कोई नही

3 पंचगव्य किस द्रव्य से बनता है।

1 गंगाजल 2 जल

3 मधु शर्करा 4 या दूध दही घी गोमूत्र गोबर से

4 पंचगव्य पूजा कर्म मे कब करना चाहिए

1 पविचत्रीकरण के पश्चात 2 आचमन के पश्चात

3 पवित्री धारण के पश्चात 4 या अन्य

5. पंयगव्यं का निर्माण किससे करें

1. गाय के प्राप्त द्रव्यों से 2. भैस के प्राप्त द्रव्यों से
3. अन्य किसी द्रव्य से 4. गंगा जल से

शिखा बन्धनः-

सनातन धर्म में पूजा से पहले शिखा बन्धन का विधान बताया गया है।

स्नाने दाने जपे होमे संध्यायां देवतार्चने।

शिखाग्रन्थि बिना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन।।

स्नान, दान, जप, होम, संध्या, और देवार्चन में य पूजा के किसी काम में शिखा का बड़ा महत्व है। बिना शिखा बंधन के पूजा सफल नहीं मानी जाती शिखा सनातन धर्म में सर के ऊपर समस्त केशों को हटवाने के बाद सर के मध्य में गाय के खुर के बराबर केश छोड़ दिये जाते हैं, जिन्हें शिखा की संज्ञा दी जाती है। बाल बार-बार बढ़ने पर कटवाए जाते हैं मगर शिखा नहीं काटी जाती जिसके कारण शिखा के केश बड़े हो जाते हैं पूजन के समय इन केशों को इकट्ठा करके निम्न मन्त्रों से शिखा बांधने का मंत्र यह है-

चिद्रपिणी महामाये! दिव्यतेजःसमन्विते!

तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व में।।

बाँध लेना चाहिए तत पश्चात पूजा कर्म में लगना चाहिए यदि किसी कारण वश शिखा न हो तो कहीं-कहीं उसके स्थान पर कुशा रखने को विधान है, यदि मंत्र न आते हों तो गायत्री मन्त्र से भी शिखा बाँधने का विधान है। सनातन धर्मावम्बियों को शिखा रखना अत्यन्त आवश्यक है। शिखा शाखा और सूत्र यह तीन सनातन धर्म सोपान हैं। इनके बिना पूजा सिद्ध नहीं मानी जाती अतएव पूजन के पहले यज्ञोपवीत धारण और शिखा बन्धन अत्यन्त आवश्यक होता है,

समस्त आचार्यों को पूजने के पूर्व कर्म में शिखा बंधन करवाना आवश्यक है। समस्त आचार्यों को इसका विशेष ध्यान देना चाहिए तथा शिखा रखने के लिए समाज को प्रेरित करना चाहिए पूजा पूर्व कर्म से शिखा बन्धन अत्यन्त आवश्यक है।

बोध प्रश्न

१. शिखा कहते है

1. सम्पूर्ण केश को   2. बगल के केश को

3. पीछे के केश को   4. सिर के मध्य के केश को

2 यज्ञादि कार्य मे शिखा बाधने का नियम क्या है।

1 खडे होकर   2 बैठकर

3 झुक कर   4 इनमे से कोई नही

3 यज्ञादि कर्म मे शिखा से शिखा कब बाधनी चाहिए

1 पवित्र के बाद   2 आचमने बाद

3 पवित्री धारण के बाद   4 आचमन के पहले

4 शिखा कब खुली होनी चाहिए।

1 जप करते समय   2 पूजा करते समय

3 भोजन करते हुए   4 सोते हुए

5. शिखा होनी चाहिए

1. गोखुर के सामान   2. आंवले के सामान

3. सम्पूर्ण् सिर में   4. अत्यंत पतली

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 ग्रन्थि बंधन के समय पत्तनी यजमान के किस भाग में बैठती है।

प्रश्न - 2 ग्रन्थि बान्धते समय किस मंत्र का उपचारण करना चाहिए।

प्रश्न - 3 ग्रन्थि का महत्तव विस्तार को बताइए।

प्रश्न - 4 शिखा बन्धन करते समय किस मंत्र का उपचारण करना चाहिए।

प्रश्न - 5 पन्चगद्य बनाने की विधा स्यिस्ट बताइए।

♦♦♦

इकाई- 5 पूजन के पूर्वकर्म- 5
गुरुध्यान, सूर्यध्यान, गड्गाध्यान, पितृ-देवता

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पूजन के पूर्व कर्म में गुरूध्यान तथा सूर्यध्यान, गंगाध्यान तथा पित्र देवता ध्यान पर प्रकाश डाला गया है। यह भी हमारी सनातन परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। इस इकाई के अध्ययन से ध्यान परंपरा की विधि का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. गुरू का ध्यान कब करना चाहिए।

ख. सूर्य के ध्यान की विधि।

ग. गंगा के ध्यान की विधि।

घ. पित्र के ध्यान की विधि।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को ज्ञान होगा।

क. गुरू के ध्यान का।

ख. सूर्य के ध्यान का।

ग. गंगा के ध्यान का।

घ. पित्र देवताओं के ध्यान का।

गुरदरब्रह्म, गुरुरविष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु साक्षात्ण्म् ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

समस्त तैयारियों के उपरान्त पूजा कर्म से प्रयुक्त होने से पूर्व गुरु ध्यान का विधान है, गुरु वह तत्व होता है। जो हमको सनमार्ग सही रास्ता तथा परमात्मा की प्राप्ति में सहायक होता है। जिसके बताए गए रास्ते पर चल कर हम शक्ति एवं आनन्द की प्राप्ति करते हैं, हमारे प्रत्येक कर्म गुरु को समर्पित होते हैं, वैसे तो गुरु शब्द का अर्थ जो अज्ञान रूपी अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाए उसे गुरु की संज्ञा दी जाती है। हमारी सनातन परम्परा में कुल गुरु का विधान है। जिससे हमारे परिवार के लोगों ने दीक्षा ग्रहण की हो तथा जो हमारे परिवार द्वारा या स्वयं विवेक से चयनित सन्त महात्मा या आचार्य जो दीक्षित करे उसे गुरु कहते हैं, गुरु हमेशा तपस्वी बनाना चाहिए तथा यदि परिवार में किसी सन्त मठ से गुरु परम्परा चल रही हो तो उन्हीं से गुरु मन्त्र लेना चाहिए यदि गुरु परम्परा में कोई न रह गया हो खुद ही दूसरे गुरु का चयन करना चाहिए पूजा के पूर्व कर्म में पूर्व लिखित मन्त्र द्वारा गुरु का ध्यान करना चाहिए। गुरु शब्द की व्याख्या कतिपय शब्दों से नहीं की जा सकती इसलिए सांकेतिक भाषा में वस गुरु के ध्यान के उपरान्त ही पूजा प्रारम्भ करनी चाहिए, मानव मात्र ही नहीं अपितु ब्रह्मा, विष्णु,

महेश भी किसी न किसी को अपना पाथेय और आधार मानते हैं। ऋषियों की परम्परानुसार गुरुपूजन, गुरुध्यान किसी भी पूजा का मूल होता है, इस लिए पूजन के पूर्व आचार्य के निर्देशन में गुरु का ध्यान करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 गुरू शब्द का अर्थ क्या है।

1 शिक्षक 2 निर्देशक

3 अंधकार से प्रकाश 4 इनमें से कोई नही

2 गुरू का महत्व क्या है हमारे जीवन मे

1 पढ़ने के लिए 2 आत्मबल

3 मार्गदर्शक के रूप मे 4 इनमे से कोई नही

3 गुरू कितने प्रकार के होते है।

1 एक 2 दो

3 तीन 4 या इससे अधिक

4 गुरू को किसक रूप दिया गया है।

1 रिषी 2 संत

3 भगवान 4 इनमे से कोई नही

5 गुरू में देखना चाहिए

1 ज्ञान 2 आयु

3 रंग 4 वैभव

सूर्य ध्यान

गुरु के ध्यानोपरान्त इस संसार को प्रकाशित एवं प्रकाशवान करने वाले भगवान सूर्य का ध्यान भी पूजन के पहले बताया गया है। यद्यपि जो सध्या करते हैं, वह सूर्य उपासना करते ही हैं और समस्त सनातन धर्मविलम्बियों को सूर्य की उपासना करनी चाहिए सूर्यार्ध देना चाहिए अगर प्रतिदिन यह कर्म नहीं कर पा रहे तो पूजा के दिन सूर्य का ध्यान निम्न मन्त्रों द्वारा करना चाहिए-

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं

रूपं हि मण्डलमृचाऽथ तनुर्यजूंषि

सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं

ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्

सूर्य का ध्यान पूरी श्रद्धा के साथ करते हुए प्रार्थना करनी चाहिए हे प्रभु भाष्कर आप पूरे जगत को प्रकाशित करते हैं, मेरे अन्तर मन में भी जो नाना प्रकार के अन्धकार हैं उनको हटाकर के ज्ञान का प्रकाश श्रजित करें आप समस्त कर्मों के साक्षी हैं हमारा मन सदैव आपके चरणों में लगा रहे इसे भावान के साथ सूर्य का ध्यान करना चाहिए। कर्म में उनका ध्यान करके उनको प्रणाम निम्न मन्त्रों द्वारा करना चाहिए-

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

पूजन पूर्व कर्म में पितृ ध्यान अत्यन्त आवश्यक है।

बोध प्रश्न

1 सूर्य का ध्यान करने से हमे क्या प्राप्त होता है।

1 धन 2 पुत्र

3 कीर्ति 4 सिद्धि

2 सूर्य किस रंग के आसन पे आसीन है।

1 हरा 2 पीला

3 श्वेत 4 लाल

3 सूर्य को किस प्रकार अर्घ्य देना चाहिए

1 बैठकर 2 झुककर

3 खडे होकर 4 इनमे से कोई नही

4 प्रातः काल और सायंकाल सूर्य को कितने अंजलि जल देना चाहिए

1 एक 2 दो

3 तीन 4 या इससे अधिक

5 सूर्य की साधना उत्तम मानी जाती है

1 प्रात:काल 2 मध्य काल

3 सायंकाल 4 किसी भी समय

हाथों में तीर्थ

शास्त्रों में दोनों हाथों में भी कुछ देवादितीर्थोंं के स्थान बताये गये हैं। चारों अँगुलियों के अग्रभाग मंे देवतीर्थ, तर्जनी अँगुली के मूलभाग में 'पितृतीर्थ', कनिष्ठिकाके मूलभाग में 'प्रजापतितीर्थ' और अँगूठे के मूलभाग में 'ब्रह्मतीर्थ' माना जाता है। इसी तरह दाहिने हाथ के बीच में 'अग्नितीर्थ' और बायें हाथ के बीच में 'सोमतीर्थ' एवं अँगुलियों के सभी पोरों और संधियों में 'ऋषितीर्थ' है। देवताओं को तर्पण में जलांजलि 'देवतीर्थ' से, ऋषियों को प्रजापति तीर्थ से (काय) और पितरों को'पितृतीर्थ' से देने का विधान है।1

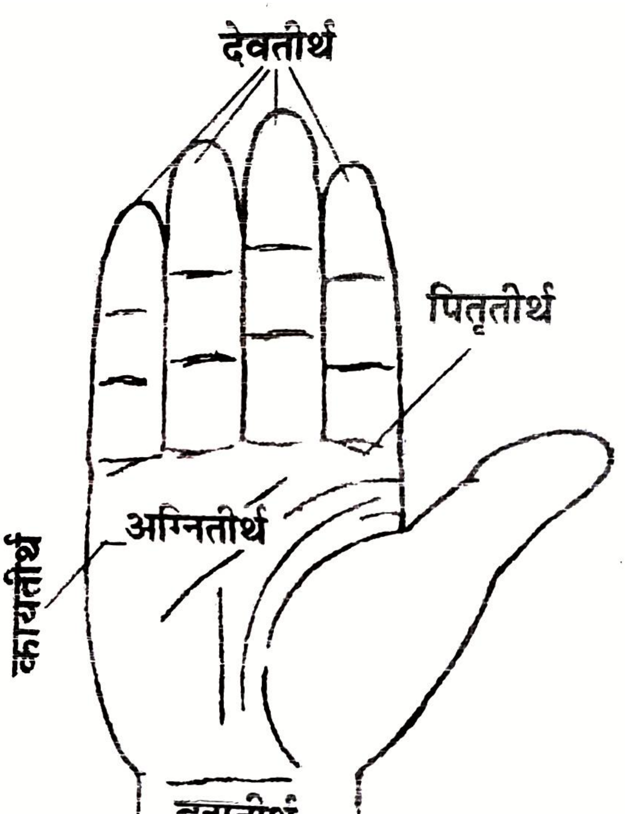

जप विध -

जप तीन प्रकार का होता है- वाचिक उपांशु और मानसिक। वाचिक जप धीरे-धीरे बोलकर होता है। उपांशु-जप इस प्रकार किया जाता है, जिससे दूसरा न सुन सके। मानसिक जप में जीभ और ओष्ठ नहीं हिलाते। जपों में पहले की अपेक्षा दूसरा और दूसरे की अपेक्षा तीसरा प्रकार श्रेष्ठ है।

प्रातः काल दोनों हाथों को उत्तान कर, सायंकाल नीचे की ओर करके और मध्याह्न में सीधा करके जप करना चाहिये। प्रातः काल हाथ को नाभि के पास, मध्याह्न में हृदय के समीप और सायंकाल मुँह के समानान्तर में रखें। जप की गणना के चन्दन, अक्षत्, पुष्प, धान्य, हाथ के पोर ओर मिट्टी से न करें। जप की गणना के लिये लाख, कुश, सिन्दूर और सूखे गोबर को मिलाकर गोलियाँ बना लें। जप करते समय दाहिने हाथ को जप माली में डाल लें अथवा कपड़े से ढक लेना आवश्यक होता है, किंतु कपड़ा गीला न हो। यदि सूखा वस्त्र न मिल सके तो सात बार उसे हवा में फटकार लें तो वह सूखा-जैसा मान लिया जाता है। जप के लिए माला को अनामिका अँगुली पर रखकर अँगूठे से स्पर्श करते हुए मध्यमा अँगूली से फेरना चाहिये। सुमेरु का उल्लंघन न करे। तर्जनी न लगावे। सुमेरु के पास से माला को घुमाकर दूसरी बार जपें। जप करते समय हिलना, डोलना, बोलना निषिद्ध है। यदि जप करते समय बोल दिया जाय तो भगवान् स्मरण कर फिर से जप करना चाहिये।

यदि माला गिर जाय तो एक सौ आठ बार जप करें। यदि माला पैर पर गिर जाय तो इसे धोकर दुगुना जप करें1।

स्नान-भेद से जप की श्रेष्ठता का तारतम्य - घर में जप करने

से एक गुना, गोशाला में सौ गुना, पुण्यमय वन या वाटिका तथा तीर्थ में हजार गुना, पर्वत पर दस हजार गुना, नदी-तट पर लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना तथा शिवलिंग के निकट अनन्त गुना पुण्य प्राप्त होता है-

गृहे चैकगुणः तथा गोष्ठे शतगुणः स्मृतः।

पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्त्रगुणमुच्यते।।

अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः।

कोटिर्देवालये प्राप्ते अनन्तं शिवसंनिधौ।।

माला वादन -निम्नलिखित मन्त्र से माला की बन्दना करें -

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

ॐ अविघ्नं कुरू माले त्वं गृहांमि दक्षिणे करे।

जप काले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

शक्तिमन्त्र की करमाला

अङ्गुलयगे्र च यज्जपतं यज्जप्तं मेरुलंषनात्।.

पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।।

अँगुलियों के अग्रभाग तथा पर्व की रेखाओं पर और सुमेरुका उल्लंघन कर किया हुआ जप निष्फल होता है।

यस्मिन् स्थाने जपं कृर्याद्धरेच्छक्रो न तत्फलम्।

तन्मुदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृतिम्।।

जिस अस्थान पर जप किया जाता है, उस स्थान की मृत्तिका जप के अनन्तर मस्तक पर लगाये अन्यथा उस जप का फल इन्द्र ले लेते है।

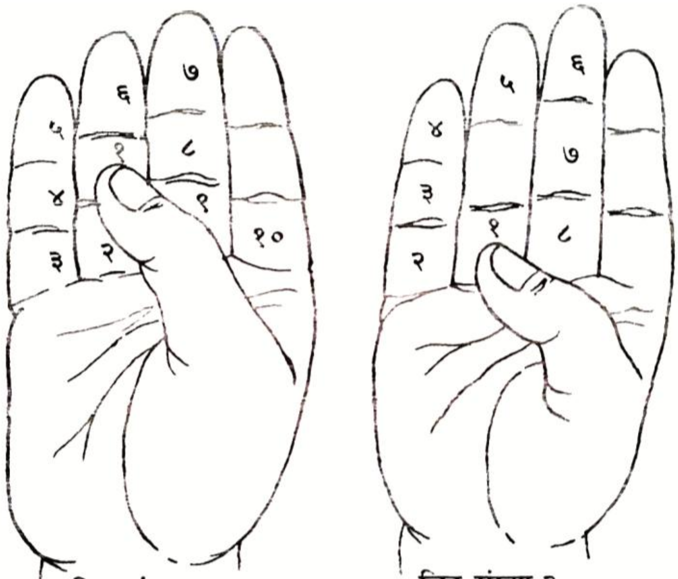

चित्र-संख्या १ चित्र-संख्या २

ऊपर के चित्र सं. 1 के अनुसार अंक 1 से आरम्भ कर 10 अंक तक अँगूठे से जप करने से एक करमाला होती है। इसी प्रकार दस करमाल जप करके चित्र संख्या 2 के अनुसार 1 अंक से आरम्भ करके 7 अंक तक जप करने से 108 संख्या की माला होती है।

अनामिका के मध्यवाले पर्व से आरम्भ कर क्रमशः चारों अँगुलियों के दसों पर्वपर (अँगूठे को घुमावे) और तर्जनी अंगुलिके मध्य तथा अग्रके जो दो हैं, उन्हें मेरु मानकर उसका उल्लंघन न करें। यह यामलतन्त्र के अनुसार करमाला है, जिसका वर्णन ऊपर के चित्र में

दिखाया गया है। मूल वचन इस प्रकार हैं-

अनामायास्त्रयं पर्व कनिष्ठायास्त्रिपर्विका।।

मध्यमायास्त्रयं पर्व तर्जनीमूलपर्वणि।

प्रादक्षिण्यक्रमेणैव जपेद् दशसु पर्वसु।।

शक्तिमाला समाख्याता सर्वमन्त्रप्रदीपिका।

पर्वद्वयं तु तर्जन्या मेरुं तद्धिद्धि पार्वति।।

(याममतन्त्र)

अनामामूलमारभ्य प्रादक्षिण्क्रमेण तु।

मध्यमामूलपर्यन्तं जपेदष्टसु पर्वसु।।

(श्यामारहस्य)

स्नानांगतर्पण-

गंगादि तीर्थों में स्नान के पश्चात् स्नानांग-तर्पण करें। संध्या के पहले इसका करना आवश्यक माना गया है। यही कारण है कि अशौच में भी इसका निषेध नहीं होता तथा जीवित-पितृकों के लिए भी यह विहित है।

जीवितमृतकों के लिये केवल इसका अन्तिम अंश त्याज्य होता - है, जिसका आगे कोष्ठक में निर्देश कर दिया गया है। इसमें तिलक जल से ही किया जाता है। बायें हाथ में जल लेकर दाहिने अँगूठे से ऊध्वपुण्ड्र कर लें। तदनन्तर तीन अंगुलियों से त्रिपुण्ड्र करें।

गंगादि तीर्थों में स्नान के पश्चात् स्नानांग-तर्पण करें। संध्या के पहले इसका करना आवश्यक माना गया है। यही कारण है कि अशौच में भी इसका निषेध नहीं होता तथा जीवित-पितृकों के लिए भी यह विहित है।

देव-तर्पण- (इसे सपितृक भी करें) सव्य होकर, पूरब की ओर मुँह कर अंगोछे को बायें कंधेपर रखकर देवतीर्थ से मन्त्र पढ़-पढ़कर एक-एक जलांजलि दें-

ॐ ब्रह्मदयो देवास्तृप्यन्ताम् (1) ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् (1)। ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् (1)। ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् (1)। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् (1)।

ऋषि-तर्पण- (इसे सपितृक भी करें)- उत्तर की ओर मुँह कर निवीती होकर (जनेऊ को माला की तरह गल में पहलकर) और गमछे को भी माला की तरह लटकाकर प्रजापतितीर्थ से दो-दो जलांजलि जल में छोड़े।

ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम् (2)। ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (2)।

ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (2) । ॐ स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (2)।

ॐ भूर्भुवः स्वर्ऋषययस्तृप्यन्ताम् (2)।

पितृ-तर्पण- (सपितृक इसका कुछ अंश करे) - दक्षिण की ओर मुँह कर अपसव्य होकर (जनेऊ को दाहिने कंधे और बायें हाथ के नीचे करके) गमछे को भी दाहिने कंधे पर रखकर पितृतीर्थ से तीन-तीन जलांजलि दें। (सपितृक जनेऊ को केवल पहुंच तक ही रखें, बायें हाथ के नीचे न

करें) - 'प्राचीनावीती त्वाप्रकोष्ठात्' (आचाररत्न)।

बोध प्रश्न

1 पितरो को देवत कब माना जाता है।

1 मरण के पश्चात 2 अन्त्येष्ठि के बाद

3 सपिण्डन के बाद 4 इनमे से कोई नही

2 पितृ तर्पण किस ओर मुख करके किया जाता है।

1 पूर्व 2 पश्चिम

3 उत्तर 4 दक्षिण

3 पितृतर्पण के समय हमारा जनेऊ किस अवस्था मे रहेगा

1 बाऐ कंधे पर 2 दाहिने कंधे पर

3 मालाकार 4 कोई नही

4 पितृ तर्पण हाथ के किस जगह से किया जाता है

1 ब्रह्मतीर्थ 2 पितृतीर्थ

3 रिषी तीर्थ 4 कोई नही

5 पितृ के लिए किया जाता है

1 हवन 2 पूजन

3 पिण्डदान 4 आरती

ॐ कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् (3)। ॐ चतुर्दशयमास्तृप्यन्ताम् (3)। ॐ भूः पितरस्तृप्यन्ताम् (3)। ॐ भुवः पितरस्तृप्यन्ताम् (3)। ॐ स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् (3)। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् (3)।

(इसके आगे का कृत्य जीवित-पितृक न करे)

ॐ अमुक गोत्रा अस्मत्पितृपितामहमस्तृप्यन्ताम् (3)।

ॐ अमुक गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् (3)।

ॐ अमुक गोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातातमहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृप्यन्ताम् (3)।

ॐ ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम् (3)1।

इसके बाद तट के पास आकर जल में स्थित होकर भूमि पर एक जलांजलि दें, जिसका मन्त्र यह है-

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम।

भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु परां गतिम्।।

जल से बाहर आकर निम्नलिखित मन्त्र से दाहिनी ओर शिखा को पितृतीर्थ (अँगूठे और तर्जनी के माध्य भाग) - से निचोड़ें-

लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः।

ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः।।

तीर्थ के बादका कृत्य - अब उपवीती होकर (जनेऊ को बायें कंधे पर और दाहिने हाथ के नीचे कर) आचमन करें और बाहर एक अंजलि यक्ष्माको दें1।

यन्मया दूषितं तोयं शारीरं मलसम्भवम्।
तस्य पापस्य शुद्धयर्थ यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्।।
(विश्वामित्रस्मृ० 1 । 84)

जीवितपितृक वस्त्र निचोड़कर संध्या करने बैठे- 2, किन्तु जिन्हें तर्पण करना है, वे अभी वस्त्र को न निचोड़ें, तर्पण के बाद निचोड़ें।

स्नान के बाद यदि देह न पोंछी जाय, जल को यों ही सूखने दिया जाय तो अधिक अच्छा है, क्योंकि सिर से टपकने वाले जल को देवता, मुखभाग से टपकने वाले जल को पितर, बीच वाले भाग से टपकने वाले जल को गन्धर्व और, नीचे निरने वाले जल को सभी जन्तु पीते हैं। यदि शक्ति न हो तो गीले अथवा धोये गमछे से पोछकर सूखा वस्त्र पहनें1। गंगादि तीर्थों में स्नान करने पर शरीर न पोंछने का विषेश ध्यान रखना चाहिये। अन्य स्थलों पर कुछ क्षण रुककर गमछे से शरीर पोंछ सकते हैं। स्नान के बाद गीले वस्त्र से मल-मूत्र न करें।

शक्ति के लिये स्नान- यदि कोई उदार व्यक्ति माता, पिता, गुरु, भाई, मित्र आदि के लिये स्नान करना चाहें तो शास्त्रों में इसकी भी व्यवस्था बतलायी गयी है। जिनके लिये स्नान किया जाता है, स्नान का आठवाँ भाग उसे मिलता है। जीवित व्यक्तियों के लिये स्नान की विधि भिन्न है और मृत व्यक्तियों के लिये। यहाँ दोनों विधियाँ लिखी जाती हैं।

जीवित व्यक्ति के लिये - जीवित व्यक्ति के नाम का इस प्रकार (अद्य.....अमुक शर्मणः, (वर्मणः, गुप्तस्य, दासस्य) कृते......स्नानं करिष्यामि) संकल्प कर स्नान करें)

मृत व्यक्ति के लिये - मृत व्यक्ति के लिये कुश में गाँठ देकर, उस कुश में उसका ध्यान कर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर कुश को नहला दें-

कुशोसि कुशपुत्रोसि ब्रह्मणा निर्मितः स्वयम्।
त्वयि स्नाते स च स्नातो यस्येदं ग्रन्थिबन्धनम्।।

इसके बाद ग्रन्थि का विसर्जन कर दें।

बोध प्रश्न

1 गंगा ध्यान का नियम क्या है।

1 पवित्रीकरण के बाद 2 आचमन क्रिया के बाद

3 आशन शुद्धि के बाद 4 या सर्वप्रथम

2 गंगा के दर्शन मात्र से ही क्या प्रप्त होता है।

1 धन 2 वैभव

3 दुख 4 मुक्ति

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 सूर्य का ध्यान किन मंत्रों से किया जाता है।

प्रश्न - 2 गुरु का ध्यान करने की विधा बताओ।

प्रश्न - 3 पितृ तीर्थ किसे कहते हैं।

प्रश्न - 4 गंगा का जल किन-किन प्रयोगों में आता है।

प्रश्न - 5 पंचगद्य का पाठ करने का मंत्र बताओ।

♦ ♦ ♦

खण्ड- 2

इकाई- 6 देवपूजन- 1

भद्रसूक्तवाचन, श्रीगणेश-कुलादि देवता-स्मरण

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन के के समय भद्रसूक्त, गणेश तथा कुल देवता के स्मरण पर प्रकाश डाला गया है। यह भी हमारी सनातन परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी पूजा में इनका क्रम क्या रहता है इसका ज्ञान प्राप्त होगा।

क. भद्रसूक्तवाचन।

ख. श्री गणेश का स्मरण।

ग. कुल देवता का स्मरण।

घ. इनके स्मरण का क्रम।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. भद्रसूक्त वाचन का।

ख. गणेश कुल आदि देवताओं के स्मरण का।

भद्र सुक्त वाचनः-

पूजन प्रारम्भ में सबसे पहले भद्रसूक्त वाचन या स्वस्ति वाचन

करना चाहिए, यजमान के हाथ मे पुष्प, चावल, रोली इत्यादि देकर सूक्त का पाठ करना चाहिए-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवाना भद्रा सुमतिऋजूयतां देवाना रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तन्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्ववसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुद्याम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरगड.स्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ- रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पंच जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। (शु० य० 25। 14-23) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। (शु० य० 26। 17) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।। (शु० य० 36। 22)

सूक्त के पाठ के उपरान्त हाथ में लिए हुए पुष्प इत्यादि को पूरी श्रद्धा के साथ जमीन पर छोड़ते हुए प्रणाम करना चाहिए और फिर पुनः बायें हाथ में चावल लेकर दो-दो दाना जमीन पर डालते हुए गणेश ग्राम प्रथा कुल देवता को प्रणाम करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 भद्र का अर्थ क्या होता है।

1 भेद　　2 मोक्ष

3 कल्याण　　4 इनमे से कोई नही।

2 भद्र सूक्त किस जगह से लिया गया है ।

1 मनुस्मृति　　2 पराशर

3 पाराशर संहिता　　4 वेद से

3 भद्र सूक्त का पाठ पूजा के प्रथम क्रम मे क्यों

1 मंगल हेतु　　2 कार्य सिद्धि

3 देव पितृ दोनो के ध्यान हेतु

4 इनमे से कपई नही

4 भद्र पश्ये क्या होगा

1 श्रणुयाम देवा　　2 माक्ष भिजत्राः

3 कर्णेभिः　　4 इनमे से कोई नही

5. भद्र सूक्त का प्रयोग होता है

1. पूजन में　　2. भोजन में

3. शयन में　　4. स्नान में

श्री गणेश आदि कुल-देवता-स्मरण

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धि बुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणांधिपतये नमः।

तत् पश्चात पुनः पूरी श्रद्धाभाव से गणेश कुलाधि देवताओं का स्मरण करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 पूजा मे सर्व प्रथम गणेश ध्यान हि क्यो।

1 रोग नाश हेतु 2 कार्य प्रारम्भ हेतु

3 निर्विध्न 4 इनमे से कोई नही

2 गणेश कितने होते है।

1 एक 2 पाच

3 सात 4 आठ

3 कुल देवता का ध्यान का क्रम क्या है।

1 गंगा ध्यान से पहले 2 सूर्य ध्यान के बाद

3 गणेश ध्यान के बाद 4 मंगल पाठ के बाद

4 कुल देवता का ध्यान पूजा मे क्यो कराया जाता है।

1 सिद्धि हेतु 2 नियमानुसार

3 संरक्षक के रूप मे 4 इनमे से कोई नही

5. गणेश पूजा में विहित है।

1. पुष्प 2 दुर्बा

3. बेलपत्र	4. तुलसीदल

पंचमहायज्ञ

गृहस्थ घर में पाँच स्थल ऐसे हैं, जहाँ प्रतिदिन न चाहने पर भी जीव-हिंसा होने की सम्भावना रहती है। चूल्हा (अग्नि जलाने में), चक्की (पीसने में), बुहारी (बुहारने में), ऊखल (कूटने में), जल रखने के स्थान (जलपात्र रखने पर नीचे जीवों के दबने) से जो पाप होते हैं, उन पापों से मुक्त होने के लिए ब्रह्मयज्ञ-वेद वेदांगादि तथा पुराणादि तथा पुराणादि आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय, पितृयज्ञ-श्राद्ध तथा तर्पण, देवयज्ञ- देवताओं का पूजन एवं हवन, भूतयज्ञ- बलिवैश्वदेव तथा पंचबलि, मनुष्ययज्ञ- अतिथि-सत्कार-इन पाँचों यज्ञों को प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये।

पंच सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः।

कण्डनी चोदकुम्भश्च बध्यते वास्तु वाहयन्।।

तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।

पंच क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।।

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।

होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोतिथिपूजनम्।।

(मनु० 3। 68-70)

ब्रह्मयज्ञ

संध्या-वन्दन के बाद द्विजमात्र को प्रतिदिन वेद-पुराणादि का

पठन-पाठन करना चाहिये अथवा नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ करें। (समयाभाव होने पर केवल गायत्री महामन्त्र के जपने से भी ब्रह्मयज्ञ की पूर्ति हो जाती है'।)

देश-काल के स्मरणपूर्वक 'अथ ब्रह्मयज्ञाख्यं कर्म करिष्ये' -

ऐसा उच्चारण कर संकल्प करें।

ऋग्वेद - ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। हमोतारं रत्नधातमम्। यजुर्वेद - ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बहनीर्यजमानस्य पशून पाहि।

सामवेद -ॐ अग्न आ आहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि हमोता सत्सि बर्हिषि।

अथर्ववेद -ॐ शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।

निरुक्तम् -समाम्नायः समाम्नातः।

छन्द - मयरसतजभनलगसंमितम्।

निघण्टु -गौः ग्मा।

ज्यौतिषम् -पंचसंवत्सरमयम्।

शिक्षा - अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि।

व्याकरणम् -वृद्धिरादैच्।

कल्पसूत्रम्   -अथातोधिकारः फलयुक्तानि कर्माणि।

गृह्यसूत्रम्   -प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयव-

तर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्वज्ञानान्निः श्रेयसाधिगमः।

वैशेषिकदर्शनम् - अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः। यतोभ्युदयनिःश्रेयसिद्धिः स धर्मः।

योगदर्शनम्   अथ योगानुशासनम्। योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। -

सांख्यदर्शनम्   - अथ त्रिविधदुः खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।

भारद्वाजकर्ममीमांसा - अथातो धर्मजिज्ञासा। धारो धर्मः।

जैमिनीयकर्ममीमांसा - अथातो धर्मजिज्ञासा, चोदना-लक्षणोैर्थो धर्मः।

ब्रह्ममीमांसाअथातो ब्रह्मजिज्ञासा। जन्माद्यस्यस यतः। - यात्।शास्त्रयोनित्वात्। तत्तु समन्व

स्मृतिः -

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः।
प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्।।

रामायणम् -

तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।

नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुंवम्।।

भारतम् -

नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम्।

देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।

पुराणम् -

जन्मादयस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्

तेने ब्रह्म हदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।

तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा

धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।।

तन्त्रम् -

आचारमूला जातिः स्यादाचारः शास्त्रमूलकः।

वेदवाक्यं शास्त्रमूलं वेदः साधकमूलकः।।

साधकश्च क्रियामूलः क्रियापि फलमूलिका।

फलमूलं सुखं देवि सुखमानन्दमूलकम्।।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 भद्र सूत्र तथा द्वादश गणेश नाम पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 2 कुल देवता का स्मरण किसके बाद किया जाता है।

प्रश्न - 3 वैदिक मंत्र द्वारा गणेश के आवाहन पर प्रकाश डालें।

♦♦♦

इकाई- 7 देवपूजन- 2
द्वादशगणपति- मंगलश्लोक, पृथ्वी-पूजन, संकल्प, पृथ्वी-स्पर्श

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में गणपति का ध्यान, मंगल श्लोक आदि के वाचन की परंपरा क्या है और इनका क्या महत्व है। इस विषय पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न विषयों की जानकारी होगी।

क. द्वादश गणपति के प्रणाम की परंपरा।

ख. मंगल श्लोक की पाठ की विधि।

ग. पृथ्वी का विधान।

घ. संकल्प और पृथ्वी स्पर्श का विधान।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त होगा।

क. द्वादश गणपति के ध्यान का।

ख. मंगलश्लोक वाचन का।

ग. पृथ्वी पूजन का।

घ. पृथ्वी स्पर्श का।

ड. संकल्प का।

द्वादश गणपति पूजन

भद्र सूक्त तथा कुलाधि देवता स्मरण के पश्चात पुनः हाथ में पुष्प लेकर के द्वादशि गणपति तथा मंगल स्लोको के द्वारा गणेश तथा अन्य देवताओं का ध्यान रखना चाहिए।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।

सड.ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थसिद्धयर्थ पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्वमंगल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्रयम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

बोध-प्रश्न

१ .द्वादश गणपति कहते है।

१. गणेश जी के बारह स्वरूप को

२. विष्णु के स्वरूप को

3. दुर्गा के स्वरूप को

4. शिव के स्वरूप को

2 .द्वादश गणपति का पाठ होता है।

१. पूजा में　　　2. तर्पण में

3. पिण्डदान में　　　4. किसी भी समय

3. द्वादश गणपति का पाठ होता है

1. शांति के लिए　　　2. उन्नति के लिए

3. ज्ञान के लिए　　　4. सभी विषयों के लिए

4 .द्वादश गणपति का पाठ करना चाहिए

1. गृहस्थ को　　　2. संयासी को

3. विद्यार्थी को　　　4. सभी को

5. द्वादश गणपति के पाठ से प्राप्त होती है

1. शांति　　　2. ज्ञान

3. धन　　　4. सब कुछ

मंगल-श्लोक

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।

येषां हदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ.घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नितयाभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।

पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।

विश्वेशं माधवं ढृण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।

वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

गणपति के ध्यानोपरान्त हाथ में लिया हुआ पुष्प गणेश जी के सम्मुख छोड़ देना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 मांगलिक श्लोक क्या है।

1 स्वस्तिवाचन 2 पुरूषशूक्त

3 शुमुखश्चैव कदन्तहम 4 या इनमे से कोई नही

2 मांगलिक श्लोक से किस देवता का तात्पर्य है।

1 विष्णु 2 राम

3 हनुमान 4 गणेश

3 मांगलिक श्लोक का पाठ क्यो होता है।

1 पूजन के लिए 2 धन प्राप्ति के लिए

3 यश विनय प्राप्ति के लिए 4 कार्य निविघ्न के लिए

4 मांगलिक श्लोक मे किस देवता ध्यान नही होता है।

1 गणेश जी का 2 विष्णु जी का

3 शंकर जी का 4 नवग्रह का

5. मांगलिक श्लोक का पाठ कर सकते है।

1. गृहस्थ 2. विद्यार्थी

3. संयासी 4. सभी

पृथ्वी पूजनः-

पुनः हाथ में पुष्प लेकर पृथ्वी का ध्यान करें निम्न मन्त्र द्वारा पृथ्वी का ध्यान करें-

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशिनी।

यच्छानः शर्म्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

स्नान चार बार पृथ्वी पर जल डालें फिर जल के उपरान्त हल्दी रोली सिन्दूर तथा चावल चढ़ाए और दूध द्वीप नैवेद्य से पूजन करें तथा पूजन का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए दक्षिणा चढ़ाए तथा पुनः पृथ्वी को प्रणाम करें और हाथों द्वारा हाथ को पृथ्वी की तरफ सीधा करके हाथों से परिक्रमा करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य

भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ह पृथिवीं मा हि सीः।।

बोध प्रश्न

1 पृथ्वी पूजन का क्रम क्या है।

1 गणेश पूजा के बाद 2 कलश स्थापन के बाद

3 संकल्प के पहले 4 संकल्प के बाद

2 पृथ्वी मानी जाती है।

1 विष्णु पत्नी	2 विद्या
3. यज्ञ देवी	4. इनमें से कोई

3. पृथ्वी पूजन का विधान लिया गया है।

1. वेदों से	2. पुराणों से
3. लोक मान्यताओं से	4. अन्य मतानुसार

4. पृथ्वी पूजन होती है।

1. श्राद्ध एवं पूजन में	2. भोजन में
3. शयन में	4. स्नान में

5. पृथ्वी पूजा से प्राप्त होती है।

1. शांति	2. लक्ष्मी
3. बल	4. सब कुछ

फूल तोड़ने का मन्त्र -प्रातः कालिक स्नानादि कृत्यों के बाद तोड़ने से पहले हाथपैर धोकर आचमन कर लें।-

पूरब की ओर मुँह कर हाथ जोड़कर मन्त्र बोले-

मा नु शोकं कुरुष्व त्वं स्थानत्यागं च मा कुरु।

देवता पूजनार्थाय प्रार्थयामि वनस्पते।।

पहला फूल तोड़ते समय 'ॐ वरुणाय नमः' ,दूसरा फूल तोड़ते समय 'ॐ व्योमाय1 नमः' और तीसरा फूल तोड़ते समय 'ॐ पृथिव्यै नमः' बोले2।

तुलसी दलस्कन्दपुराण का वचन है कि जो हाथ पूजार्थ -चयन- नते हैंतुलसी चु, वे धन्य हैं-

तुलसीं ये विचिन्वन्ति धन्यास्ते करपल्लवाः।

तुलसी का एक-एक पत्ता न तोड़कर पत्तियों के साथ अग्रभाग को तोड़ना चाहिये। तुलसी की मंजरी सब फूलों से बढ़कर मानी जाती है। मंजरी तोड़ते समय उसमें पत्तियों का रहना भी आवश्यक माना गया है3। निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पूज्य भाव से पौधे को हिलाये बिना तुलसी के अग्रभाग को तोड़े। इससे पूजा का फल लाख गुना बढ़ जाता है4।

तुलसी दल तोड़ने के मन्त्र -

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।

चिनोमि केशवस्यार्थे वरदा भव शोभने।।

त्वदंगसम्भवैः पत्रैः पूजयामि यथा हरिम्।

तथा कुरु पवित्रांगिकलौ मलविनाशिनि।। !

(आह्निक सूत्रावल)

तुलसीदल- चयन में निषिद्ध समय - वैधृति और व्यतीपात- इन दो योगों में, मंगल, शुक्र और रवि- इन तीन वारों में, द्वादशी, अमावस्या एवं पूर्णिमा- इन तीन तिथियों में, संक्रान्ति और जननाशौच तथा मरणाशौच में तुलसीदल तोड़ना मना है1। संक्रान्ति अमावास्या, द्वादशी, रात्रि और दोनों संध्यायों में भी तुलसीदल न तोड़ें2, किन्तु तुलसी के बिना भगवान् की पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती, अतः निषिद्ध समय में तुलसी वृक्ष से स्वयं गिरी हुई पत्ती से पूजा करें3, (पहले दिन के पवित्र स्थान पर रखे हुए तुलसी दल से भी भगवान् की पूजा की जा सकती है)। शालग्राम की पूजा के लिये निषिद्ध तिथियों में तुलसी

तोड़ी जा सकती है4। बिना स्नान के और जूता पहनकर भी तुलसी न तोड़ें1।

बिल्वपत्र तोड़ने का मन्त्र-

अमृतोद्धव! श्रीवृक्ष! महादेवप्रियः सदा।

गृह्णमि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात्।।

(आचारेन्दु)

बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल - चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावास्या तिथियों को, संक्रान्ति के समय और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें। किन्तु बिल्वपत्र शंकरजी को बहुत प्रिय है, अतः निषिद्ध समय में पहले दिन का रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये। शास्त्र ने तो यहाँ तक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाये हुए बिल्वपत्र को ही धोकर बार-बार चढाता रहे।

बासी जल, फूल का निषेध जो फूल -, पत्ते और जल बासी हो गये हो, उन्हें देवताओं पर न चढायें। किन्तु तुलसीदल और गंगाजल बासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्यका दोष नहीं आता1।

माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता। दौना तुलसी की ही तरह एक पौधा होता है। भगवान् विष्णु को यह बहुत प्रिय है। स्कन्दपुराण में आया है कि दौना की माला भगवान् को इतनी प्रिय है कि वे इसे सूख जाने पर भी स्वीकार कर लेते हैं। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदि से बनाये गये फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिये।

नारद जी ने ‘मानस‘ (मन के द्वारा भावित) फूल को सबसे श्रेष्ठ फूल माना है। उन्होंने देवराज इन्द्र को बतलाया है कि हजारों-करोड़ों बाह्य फूलों को चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जा सकता है, वह केवल एक मानस-फूल चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है। इससे मानस-पुष्प ही उत्तम पुष्प है। बाह्य पुष्प ते निर्माल्य भी होते हैं। मानस-पुष्पों में बासी आदि कोई दोष नहीं होता। इसलिये पूजा करते समय मन से गढ़कर फूल चढ़ाने का अद्भुत आनन्द अवश्य प्राप्त करना चाहिये।

सामान्यतया निषिद्ध फूल - यहाँ उन निषेधों को दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजा में सब फूलों पर लागू होते हैं। भगवान् पर चढ़ाया हुआ फूल ‘निर्माल्य‘ कहलाता है, सूँघा हुआ या अंगन में लगाया हुआ फूल भी इसी कोटि में आता है। इन्हें न चढ़ाये। भौंरे के सूँघने से फूल दूषित नहीं होता। जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुड़ियाँ बिखर गयी हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिसमें खट्टी गंध या सड़ाँध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गन्धवाला हो, ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिये। जो फूल बायें हाथ, पहनने वाले अधोवस्त्र, आक और रेंड़ के पत्ते में रखकर लाये गये हों, वे फूल त्याज्य हैं। कलियों को चढ़ाना मना है, किंतु यह निषेध कमल पर लागू नहीं है।

यहाँ पूजा सामान्य रूप से पूजा की विधि दी जा रही है। साथ-साथ नाम मन्त्र भी हैं। जो श्लोकों का उच्चारण न कर सकें, वे नाम-मन्त्र से षोडशोचार पूजन करें।

गृह - पूजा-मन्दिर में स्थित पंचदेव-

यदि गृह का मन्दिर हो तो पूजा गृह में प्रवेश करने से पहले

बाहर दरवाजे पर ही पूर्वोक्त प्रकार से आचमन कर ले और तीन तालियाँ बजाये और विनम्रता के साथ मन्दिर में प्रवेश करे। ताली बजाने के पहले निम्नलिखित विनियोगसहित मन्त्र पढ़ लें-

विनियोग- अपसर्पन्त्विति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, शिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भूतादिविघ्नोत्सादने विनियोगः।

भूतोत्सादन-मन्त्र-

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

पश्चात् देवताओं का ध्यान करें, साष्टांग प्रणाम करें। बाद में निम्नलिखित विनियोग और मन्त्र पढ़कर आसन पर बैठकर उसको जल से पवित्र करें।

आसन पवित्र करने का विनियोग एवं मन्त्र-

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः,

कूर्मो देवता, आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

पूजा की बाहरी तैयारी

बैठने के पूर्व पूजा की आवश्यक तैयारी कर लें। ताजे'जल को कपड़े छानकर कलश में भरे। आचमनी से शंख में भी जल डालकर फूल को जल में डुबाकर धोना मना है। केवल जल से इसका प्रोक्षण

कर देना चाहिये।

पुष्पादि चढ़ाने की विधि - फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिये। उत्पन्न होते समय इसका मुख ऊपर की ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिये। इनका मुख नीचे की ओर न करें। दूर्वा एवं तुलसीदल को अपनी ओर बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये। इनसे भिन्न पत्तों को ऊपर मुख कर या नीचे मुख कर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है। दाहिने हाथ के करतल को उत्तान कर मध्यमा, अनामिका और अँगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिये।

उतारने की विधि चढे हुए फूल को अँगूठे और तर्जनी की - सहायता से उतारें।

पंचदेव-पूजा (आगमोक्त-पद्धति)

प्रतिदिन पंचदेव-पूजा अवश्य करनी चाहिये। यदि वेद के मन्त्र अभ्यस्त न हों तो आगमोक्त मन्त्र से, यदि वे भी अभ्यस्त न हों तो नाम मन्त्र से और यदि यह भी सम्भव न हो तो बिना मन्त्र के ही जल, चन्दन आदि चढ़ाकर पूजा करनी चाहिये।

पूजा- सामाग्री के रखने का प्रकार पूजन की किस वस्तु को किधर रखना चाहिये, इस बात का भी शास्त्र ने निर्देश दिया है। इसके अनुसार वस्तुओं को यथास्थान सजा देना चाहिये।

बायीं ओर -(1) सुवासित जल से भरा उदकुम्भ जलपात्र) 3), (2) घंटा 4 और (3) धूपदानी। (4) तेल का दीपक भी बायीं ओर रखें।

दायीं ओर -(1) घृतका दीपक और (2) सुवासित जल से भरा शंख7।

सामने - (1) कुंकुम (केसर) और कपूर के साथ घिसा गाढ़ा चन्दन। (2) पुष्प आदि हाथ में तथा चन्दन ताम्रपात्र में न रखें।

भगवान् के आगेचैकोर जल का घेरा डालकर नैवेद्य की वस्तु रखे। -

पूजा की भीतरी तैयारी

शास्त्रों में पूजा को हजार गुना अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिये एक उपाय बतलाया गया है। वह उपाय है, मानसपूजा। जिसे पूजा से पहले करके फिर बाह्य वस्तुओं से पूजन करें।

पहले पुष्पप्रकरण में शास्त्र का एक वचन उद्धृत किया जाता - है, जिसमें बतलाया गया है कि मनः कल्पित यदि एक फूल भी चढ़ा दिया जाय तो करोड़ों बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर होता है। इसी प्रकार मानस चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य भी भगवान् को करोड़ गुना अधिक संतोष दे सकेंगें। अतः मानसपूजा बहुत अपेक्षित है।

मानसपूजा

वस्तुतः भगवान् को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, वे तो भाव के भूख हैं। संसार में ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्ध नहीं हैं, जिनसे परमेश्वर की पूजा की जा सके। इसलिये पुराणों में मानसपूजा का विशेष महत्व माना गया है। मानसपूजा में भक्त अपने इष्टदेव को मुक्तमणियों से मण्डितकर स्वर्णसिंहासन पर विराजमान कराता है। स्वर्गलोक की मन्दाकिनी गंगा के जल से अपने आराध्य को स्नान कराता है, कामधेनु गौ के दुग्ध से पंचामृत का निर्माण करता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते हैं। पृथ्वीरूपी गन्ध का अनुलेपन करता है। अपने आराध्य के लिये कुबेर की पुष्पवाटिका से स्वर्ण कमल पुष्पों का चयन करता है। भावना से वायु रूपी धूप, अग्निरूपी

दीपक तथा अमृतरूपी नैवेद्य भगवान् को अर्पण करने की विधि हैं इसके साथ ही त्रिलोक की सम्पूर्ण वस्तु सभी उपचार सच्चिदानन्दघन परमात्म-प्रभु के चरणों में भावनासे भक्त अर्पण करता है। यह है मानसपूजा का स्वरूप। इसकी एक संक्षिप्त विधि भी पुराणों में वर्णित है। जो नीचे लिखी जा रही है-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं पृथ्वीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।)

ॐ हं आकाशत्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।)

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं वायु देव के रूप में धूप आपको प्रदान करता हूँ।)

ॐ रं वह्नयात्मकं दीपं दर्शयामि।

(प्रभो! मैं अग्निदेव के रूप में दीपक आपको प्रदान करता हूँ।)

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

(प्रभो! मैं अमृत के समान नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।)

ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

(प्रभो! मैं सर्वात्माके रूप में संसार के सभी उपचारों को आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।) इन मन्त्रों से भावनापूर्वक मानपूजा की जा सकती है।

मानसपूजा से चित्त एकाग्र और सरस हो जाता है, इससे बाह्य पूजा में भी रस मिलने लगता है। यद्यपि इसका प्रचार कम है, तथापि इसे अवश्व अपनाना चाहिये’।

संकल्पः-

अब पूजा कर्म में आगे बढ़ने के पूर्व जिस कार्य की सिद्धी के लिए पूजा करने चल रहे हैं। उस कार्य के निमित्त संकल्प लेना चाहिए। संकल्प दो प्रकार के होते हैं सकाम एवं निष्काम।

बोध प्रश्न

1 संकल्प क्यों किया जाता है।

1 पुण्य के लिए 2 कार्य अर्पण के लिए

3 कार्य पूरा होने हेतु 4 इनमें से कोई नही

2 सकाम संल्पि क्यो होता है।

1 पूर्णता के लिए 2 रक्षा के लिए

3 कामना विशेष के लिए 4 इनमे से कोई नही

3 संकल्प मे अहंकरिष्ये और का मतलब क्यो होता है।

1 मैं करूंगा 2 दूसरे के द्वारा कराऊगा

3 या इनमे से करूंगा 4. हम सब के द्वारा होगा

4. संकल्प की विधा प्राप्त हुई।

1. वेदों से 2. पुराणों से

3. उपनिषद से 4. नाटयकाव्य से

5. संकल्प करना चाहिए

1. पूजा के समय　　2. भोजन के समय

3. शयन के समय　　4. प्रत्येक कार्य में

सकाम संकल्पः-

जिस संकल्प में विशेष कार्य सिद्धी तथा किसी विशेष साधना का उल्लेख किया गया हो या किसी समस्या का समाधान का उल्लेख हो कार्य विशेष की प्राप्ति हो ऐसे संकल्प को सकाम संकल्प कहते हैं।

निष्काम संकल्पः-

वो संकल्प जिसमें मात्र और मात्र ईश्वर प्राप्ति की चर्चा की गयी हो उसे निष्काम संकल्प कहते हैं।

संकल्प पद्धतिः-

दाहिने हाथ में पुष्प, फल, चावल, सुपारी और कुस रखकर संकल्प किया जाये कुशा की जड बीचो बीच हथेली या गदोरी में रखनी चाहिए वाकदत्तम्, मनोदत्तम् दत्तम पाणि कुशोदकम् कुशा की जड़ जल में डूबी रहनी चाहिए कुशा का अग्रभाग देव तीर्थ से सामने की ओर रखना चाहिए सब पदार्थों के उपरान्त दक्षिणा लेकर संकल्प वाचन निम्न विधा द्वारा करना चाहिए-

ॐ विष्णुर्विष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवश्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमे युगे कलियुगे कलि-प्रािमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे (प्रयाग/काशी/क्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे

अमुक अयने श्री सूर्ये अमुक-ऋतौ महामांगल्यप्रद-मासोत्तमे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा/गुप्तः) ऽहं श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्तर्थ दैहिक-दैविक-भौतिक-तापत्रय विनाशाय धर्मार्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थम्, मम जन्म राशि-वर्ष-गोचर दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा-सूक्ष्मदशा योगिन्यादि दशा मध्ये च ये केचन् सूर्यादि अरिष्टप्रदाः ग्रहाः तेषां सकलारिष्ट वारणपूर्वकं शुभता-संसिद्ध्यर्थ, ग्रहकृता-राजकृता-शत्रुकृता च पीडा नाशार्थं सर्वविध-भयापमृत्युरोगादि-दूरीकरणाय सर्वत्र सुखशान्ति प्राप्तये च, मम समस्त-पापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल-धन-धन्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-बहुकीर्तिलाभ-शत्रु-पराजय-सदभीष्ट-सिद्धयर्थं मनोभिलषितं समस्त-कामना-सिद्धयर्थंच सपररिवारस्य सर्वविध-कल्याणार्थं श्री अमुक देवता-कृपा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं प्रसनार्थंच ब्राह्मण द्वारा अमुक मंत्रस्य/स्तोत्रस्य अमुक संख्याकं जपं/पाठं कारयिष्ये तदंगत्वेन वास्तुयोगिनी-क्षेत्रपाल-नवग्रह-सर्वतोभद्र/लिंगतोभद्र मण्डल देवानां आवाहन स्थापन, पूजन पूर्वकं प्रधान-वेद्यामुपुरि सुवर्ण-रजत-ताम्रमयीं वा अमुक देवस्य प्रतिमां अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा-पूर्वकं यथोपचार-पूजनं तत्रादौ च निर्विघ्नतायै गणपत्यादि-पंचांग-देवानां आवहनं स्थापनं पूजनं पुण्याह-वाचनं दिग्ररक्षणं साचार्यस्य ब्राह्मणानां वरणांग करिष्ये।

(संकल्प द्रव्यादि गणेश जी के सामने रख देवें।)

पृथ्वी स्पर्शः-

सबसे पहले दोनों हाथों से प्रणाम की मुद्रा में पृथ्वी का स्पर्श निम्न मंत्रों से करना चाहिए-

ॐ मही द्योः पृथिवी च न ऽइमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्।

पितृतान्नों भरीमभिः।।

इस मन्त्रों को पढ़ता हुआ पृथ्वी का स्पर्श करें, पृथ्वी के स्पर्श के उपरान्त कलश स्थापन की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए।

बोध प्रश्न

1 किस मुद्रा मे पृथ्वी स्पर्श करना चाहिए

1 मृगि मुद्रा 2 सुरभि

3 प्रणाम कि मुद्रा 4 या अन्य मुद्रा

2 पृथ्वी स्पर्श का मन्त्र क्या है।

1 नाभ्या आसीत 2 चन्द्रमा मनसो

3 मानस्तोके 4 मही द्यौ

3 पृथ्वी स्पर्श का नियम क्या है।

1 पृथ्वी पूजन के बाद 2 गणेश पूजन से पहले

3 कलश स्थापन से पहले 4 इनमे से कोई नही

4 पृथ्वी स्पर्श परंपरा प्राप्त है।

1. वेद से 2. पुराण से

3. इतिहास से 4. अन्य ग्रन्थों से

5 पृथ्वी स्पर्श करना चाहिए

1. पूजा के समय 2. भोजन के समय

3. शयन के समय 4. प्रत्येक कार्य में

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पृथ्वी पूजन का विधान क्या है।

प्रश्न - 2 संकल्प में प्रयुक्त होने वाली सामाग्री।

प्रश्न - 3 सकाम सकल्प किसे कहते हैं।

प्रश्न - 4 निश्काम संकल्प किसे कहते हैं।

प्रश्न - 5 संकल्प में प्रयोजन का प्रयोग कैसे होता है। विधि पूर्वक बतायें।

♦♦♦

इकाई- 8 देवपूजन- 3

कलश-स्थापन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में कलश स्थापन की परंपरा पर प्रकाश डाला गया है। कलश में सामग्रियों का समावेश तथा डालने का क्रम विधि पूर्वक बतलाया गया है। इस इकाई के अध्ययन से कलश पूजन कितना महत्वपूर्ण है तथा कलश स्थापन की परंपरा क्या है इसका ज्ञान प्राप्त होगा।

क. कलश स्थापन की विधि क्या है।

ख. कलश में किस पर किस देवता का आवाहन का विधान है।

ग. कलश में क्या-क्या डालना चाहिए।

घ. कलश के नीचे किन-किन पदार्थों को रखना चाहिए।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त होगा।

क. कलश स्थापन विधि का।

ख. कलश विधि पूजन का।

कलश में रोली से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर गले में तीन धागों वाला मौली लपेट लें, तथा जिस जगह कलश स्थापित करना हो उस भूमि अथवा पाँटे पर कुमकुम या रोली से स्पष्ट जल कमल

बनाएं, तथा उसके ऊपर कलश स्थापित करके निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी स्पर्श

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ह पृथिवीं मा हि सीः।।

भूमि स्पर्श के पश्चात् उसी अष्टदल या कलश के नीचे भूमि पर सप्त धान्य डालें

सप्त धान्यः-

जौ, धान, तिल, कंगनी, मूँग, चना, साँवा यह सप्त धान्य कहलाता है। इसके अभाव में गेहूं तथा चावल और जौ डालने का भी विधान है, निम्न मन्त्र द्वारा सप्त धान्य कलश के नीचे डालें।

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलश रखने के पश्चात् कलश में निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीर्थ अथवा कूप जल निम्न मंत्र को पढ़ता हुआ डालें।

ॐ वरुणास्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो।

वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

जल डालते समय ध्यान दें आवश्यकता से अधिक जल कलश

में न रहे तथा जल के उपरान्त कलश में चन्दन निम्न मन्त्र पढ़ते हुए चन्दन डालें।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत

फिर चन्दन के बाद कलश के अन्दर सर्वोषधि निम्न मंत्र के द्वारा डाली जानी चाहिए-

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामह शतं धामानि सप्त च।।

सर्वोषधिः-

मुरा जटा माषी वच कुष्ट शिला जीत हल्दी दारु हल्दी सठी चम्पक मुस्ता यह सर्वोषधि कहलाती है, इनके अभाव में सतावर डालने से सर्वोषधि मानी जाती है, सर्वोषधि के उपरान्त कलश में दुर्बा डाली जाए।

ॐ काण्डात्काणत्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दुर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

इस मन्त्र द्वारा कलश के अन्दर दूर्बा डालें दूर्बा का ऊपर का भाग कोमल का भाग डालना चाहिए तथा इसके उपरान्त कलश में पंच पल्लव डालना चाहिए।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ यह पंच पल्लव कहलाते हैं, इसके उपरान्त कलश में निम्न मन्त्र द्वारा कुशा स्थापित करें, कुशा उत्तर की दिशा की तरफ लगाए।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

कुशा डालने के पश्चात् कलश में सप्तमृत्तिका डालने का विधान है, निम्न मन्त्रों द्वारा कलश में डालें।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथाः। (सप्तमृत्तिका छोड़ें।)

सप्तमृत्तिका साथ स्थानों की मिट्टी को कहते हैं, घोड़साल, हाथीसाल, बॉबी नदियों की मिट्टी, तालाब तथा राजदरबार और गोसाला इन स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका की संज्ञा की गयी है, अगर इनका अभाव हो तो संगम की मिट्टी डालें। मिट्टी डालने के उपरान्त कलश में सुपारी निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए डालें-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व हसः।। (सुपारी छोड़ें।)

सुपारी डालने के पश्चात् कलश में पंचरत्न निम्नलिखित मन्त्रांे को पढ़कर डालना चाहिए-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।

दूधद्रत्नानि दाशुषे। (पंचरत्न छोड़ें।)

पंचरत्न सोना, हीरा, मोती, पदमराग, नीलम यह पंचरत्न माने जाते हैं इनके अभाव में सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, मोती भी पंचरत्न माना जाता है।

पंचरत्न डालने के पश्चात् कलश में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए द्रव्य डालना चाहिए-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। (द्रव्य छोड़े।)

द्रव्य डालने के उपरान्त कलश का वस्त्र से अलंकृत करना चाहिए वस्त्र लपेटने का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।

वासो अग्ने विश्वरूप सं व्ययस्व विभावसो।

वस्त्र के उपरान्त कलश के ऊपर पूर्ण पात्र स्थापित करना चाहिए मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।

वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज शतक्रतो।।

पूर्ण पात्र के बाद कलश के ऊपर नारियल या फल निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ स्थापित करना चाहिए-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व हसः

अब कलश में देवी देवताओं आवादन करने के लिए हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा वरुण का आवाहन करना चाहिए-

कलशमें वरुणा ध्यान और आवहन-

ॐ तत्त्वा यामि ब्रहमणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश स मा न आयुः प्र मोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

मन्त्र बोलने के पश्चात अक्षत पुष्प कलश में छोड़ दें, तथा पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी देवताओं का आवाहन करना चाहिए।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रहमा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रितः।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।

इस तरह जलाधिपति वरुण देव तथा वेदों तीर्थों, नदियों, सागरों तथा देवताओं के आवाहन के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं

यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो ॐप्रतिष्ठा।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः

यह कर अक्षत पुष्प कलश के पास छोड़ दें।

बोध प्रश्न

1 कलश मे किस देवता का आवाहन होता है।

1 गणेश जी 2 हनुमान जी

3 वरूण 4 अन्य

2 कलश स्थापन मे ताम्बूल पेटिका क्रम कौन से है।

1 प्रथम 2 पंचम

3 सप्तम 4 एकादश

3 कलश मे पंचरत्न कौन से डाले जोते है।

1 ज्यादी 2 पन्ना

3 मूगा 4 सांना हीरा मोती पद्‌मराग और नीलम

4 कलश स्थापन के समय जव क्यो बोया जाता है।

1 सिद्‌धि के लिए 2 धन के लिए

3 मंत्राकक्षत देने के लिए 4 इनमे से कोई नही

5. कलश स्थापन किया जाता है।

1. पूजन के समय 2. स्नान में

3. युद्‌ध में 4. किसी भी समय

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 कलश के नीचे क्या डाला जाता है।

प्रश्न - 2 कलश में प्रयुक्त होने वाली पवित्री किस दिशा में होनी चाहिए।

प्रश्न - 3 कलश में सफल ताम्बूल डालने का मंत्र बतायें।

प्रश्न - 4 कलश में सर्व औसधी किसे कहते हैं सर्व औसधी के अभाव में क्या डालने चाहिए।

प्रश्न - 5 कलश आवाहन का मंत्र बतायें।

♦♦♦

इकाई- 9 देवपूजन- 4
गौरी-गणपति-आवाहन एवं पूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में गौरी-गणपति का आवाहन एवं पूजन बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। इस पर विधिपूर्वक प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों की ज्ञान प्राप्त होगा।

क. गौरी एवं गणेश का निर्माण।

ख. गौरी और गणेश का स्थान।

ग. गौरी और गणेश के आवाहन का नियम।

घ. आवाहन के पश्चात पूजा की विधि।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त होगा।

क. गौरी और गणपति आवाहन का।

ख. गौरी और गणपति पूजन का।

सर्वप्रथम गौर गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्तवा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणन्त्वा

प्प्रियपति गुं निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवामहे व्वसो

मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

हे हेरम्ब त्वमेह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।

सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।

भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांगकुश-परश्वधैः।।2।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।

इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्।

ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकांगम्पील-वासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स ऽइहमादयन्तामों ॐ प्रतिष्टठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश की ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्ध आचमी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

बोध-प्रश्न

1 गौरी गणेश का पूजन क्यो पहले होता है।

1 वास्तु क्रम से 2 धनप्रप्ति हेतु

3 कार्य सिद्धि हेतु 4 अन्य के लिए

2 गौरी गणेश का प्रथम पूजन का नियम किस देवता के कारण से हुआ ।

1 विष्णु 2 रामचन्द्र जी

3 श्री कृष्ण जी 4 शंकर जी।

3 गणेश जी का अवाहन किसके साथ होता है।

1 विष्णु जी 2 शंकर जी

3 रिद्धि सिद्धि के साथ 4 या इनमे से कोई नही

4 गणेश पूजन मे सर्वप्रथम हल्दी क्यों चढायी जाती है।

1 कार्य सिद्धि हेतु 2 गणेश जी को प्रिय है

3 पीला रंग शुभ का प्रतीक है। 4 या अन्य 5 गणेश जी के किस और माता गौरी का आवाहन होता है। 1 बाये 2 सामने 3 दाहिने 4 पीछे

गंधोदक-स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धोदक-स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्घु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा

सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्त्विन्दद्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भिन्दत्रूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम गुं सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के

अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गड्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु्र्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषिंगणः।

तेषा गुं सहस्र-योजनेऽव धन्न्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्धपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्ध डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्येघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेधासि देति विदिताखिल शास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौर संगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान प्रणाम करें।

बोध प्रश्न

1. गौरी गणपति कहते है।

    1. लक्ष्मी गणेश को 2. लक्ष्मी नारायण को

    3. शिव पार्वती को 4. पार्वती और गणेश को

2. गौरी को नहीं चढाया जाता है।

    1. पुष्प 2. हल्दी

    3. अक्षत 4. दर्बा

3. गौरी और गणेश की पूजा होनी चाहिए

    1. बाद में 2. पहले

    3. साथ में 4. किसी समय

4. गौरी गणेश पूजन क्रम आता है।

    1. पंचाग पूजन में 2. अन्तिम में

    3. किसी समय 4. विसर्जन में

5. गौरी गणेश की पूजा से प्राप्त होता है

    1. शांति 2. विद्या

    3. लक्ष्मी 4. आदि

अभ्यास प्रश्

प्रश्न - 1 गौरी गणेश पूजा में गौरी एवं गणेश की दिशा का चयन उदाहरण सहित समझायें।

प्रश्न - 2 दूर्बा किस पर चढ़ती हैं।

प्रश्न - 3 विशेष आर्ध कब दिया जाता है।

प्रश्न - 4 गणेश पूजा की विधा विधि पूरवक समझायें।

प्रश्न - 5 गणेश बंदना लिखें।

♦♦♦

इकाई- 10 देवपूजन- 5
दीपादि पंचांगदेवपूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में दीप तथा पंचागदेव पूजन पर प्रकाश डाला गया है। पंचाग देवता कौन है तथा दीप की महत्वा क्या है। इन सब विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. दीप का स्थान।

ख. दीप के पूजन का विधान।

ग. पंचाग पूजन का विधान।

घ. पंचाग देवता के स्थान एवं पूजन की विधि।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त होगा।

क. दीपादि पंचाग देव आवाहन का।

ख. दीपादि पंचाग देव पूजन का।

पूजा के समय ही कलश के बगल कलश के दाहिनी यजमान के बाएं द्वीप स्थापना करें, द्वीप स्थापना करें मन्त्र-

यो दीप देवरुपस्त्वम् कर्म साक्षी अविधकृत।

यावत कर्म समाप्तिष्चात्, सुस्थिरो भव सर्वदा।।

तथा उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ते हुए दीपक पर छोड़ दें और पूर्व लिखित पूजा विधा द्वारा ही पूजन कर लिया जाए।

पांचांग देव पूजन-

गौरी गणेश कलश नवग्रह और मात्रिका ये पूजा के पांच अंग माने जाते हैं इनको पंचांग की संज्ञा दी जाती है पूजा चाहे वृहद (बड़ी) अथवा निसार यज्ञायोजन हो वहां पर पंचांग देव पूजन का विधान है। इसको करना चाहिए सनातन परम्परा में गौरी गणेश के साथ फोडस मात्रिका कलश एवं नवग्रह इनका पूजन वैदिक मन्त्रों द्वारा क्रमशः करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 दीप कि पूजा किस रूप मे कि जाती है।

1 कार्य सिद्धि 2 धन प्राप्ति

3 कर्म साक्षी 4 या अन्य

2 दियादि पंचाग देवता कौन है।

1 गौरी गणेश नवग्रह 2 हनुमान भैरव

3 गौरी गणेश रक्षा कलश दीपक

4 या इनमे से कोई नही

3 पंचाग देव पूजन मे कलश का स्थान कहा होना चाहिए

1 गौरी के बगल 2 रक्षा के बगल

3 दीपक के आगे 4 या गणेश के पीछे

4 पंचाग देवता को आसन के लिए क्या दिया जाता है।

1 बेलपत्र	2 दूर्वा
3 कुश	4 अक्षत
5 दीपक मे किस देवी का आवाहन होता है।	
1 गौरी	2 लक्ष्मी
3 दुर्गा	4 ज्वाला

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 दीप पूजा स्थान पर किस दिशा में होनी चाहिए।

प्रश्न - 2 दीप आवाहन मंत्र बतायें।

प्रश्न - 3 पंचांग पूजन में किन-किन देवताओं की पूजा होती है।

प्रश्न - 4 पंचांग देवताओं का आवाहन मंत्र कौन-कौन सा है।

प्रश्न - 5 दीप पूजन का विधान पर प्रकाश डालिए।

♦♦♦

खण्ड-3

इकाई- 11 स्वस्तिपुण्याहवाचन- 1
आचार्य-पूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में स्वस्तिपुण्याहनवाचन के क्रम में आचार्य पूजन के विधान पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से आचार्य पूजा में निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. आचार्य-पूजन का क्रम।

ख. आचार्य-पूजन की विधि।

ग. आचार्य-पूजा का महत्व।

घ. आचार्य-चयन की विधि।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. आचार्य-पूजन का।

किसी भी पूजा का आधारभूत निर्देशक आचार्य होता है। उसी के निर्देशन में पूजा प्रारम्भ होती है उसके बताए गए मार्ग में चल करके साधक अपनी साधना पूर्ण करता है, देवादि यज्ञ में आचार्य भगवान के समान माना गया है। देवताओं के समान श्रद्धा रखकर आचार्य का पूजन एवं वरण करना चाहिए आचार्य पूजन में मन्त्रों के

द्वारा आचार्य का तिलक तथा ससंकल्प आचार्य को दक्षिणा देकर उसका पूजन करना चाहिए, और उसकी अपनी श्रद्धा से संतुष्ट करना चाहिए तथा प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा कार्य निर्विघन रूप से प्रारम्भ हो और उकसी पूर्णतः ही निर्विघन रूप से हो आपके बताए गए नियमानुसार हम पूजन को तैयार हैं आचार्य हमको उचित निर्देशन देते हुए हमारी पूजा सम्पन्न करवाए, ऐसा मन में भाव लेकर आचार्य का पूजन करना चाहिए।

आचार्यः-

आचार्य किसी भी पूजा में मुख्य भूमिका का निर्वाहन करता है आचार्य को अपने यजमान के कल्याण हेतु लोभ, मोह और क्रोध से परे होकर यजमान के कल्याण के लिए साथ आए हुए नित्युज्यो (पण्डित सहायक) का सम्मान करते हुए यजमान की कल्याण की कामना के लिए जो ब्राह्मण के नवगुण हैं उनसे मुक्त होकर किसी भी या या पूजा का व आचार्यदल करना चाहिए क्रोध तथा लोभ और काम को त्यागकर वह अपने वैदिक मन्त्र तथा कर्मकाण्ड के माध्यम से साधक की साधना पूर्ण करवाना ही उसका लक्ष्य होना चाहिए।

विशेषः-

आचार्य चयन में ध्यान में देना चाहिए हम उसकी योज्ञता और साधना और कार्य कुशलता जो हमारे पूजन के लिए अत्यन्त आवश्यक है प्रयास यह रहे आचार्य पढ़ा लिखा तथा कुशल वैदिक विद्वान हो जरूरी नहीं की वो पुरोहित या सम्बन्ध में आने वाले आचार्य को ही हम वरण करें। प्रायः आचार्य की योग्यता को ध्यान में रखते हुए चाहिए पुरोहित का का परित्याग नहीं करना चाहिए यदि वह योग्य नहीं भी है तब भी पूजा में उसको अस्थान देकर के गणेश तथा सरल

मन्त्रों को उससे जप करवाया जाए।

ब्राहमण-पूजन-मन्त्र:-

ॐ आब्रहमन् ब्राहमणो ब्रहयवर्चसी जायतामाराष्टे[a] राजन्यः शूर ऽइषव्योति याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पंचन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः।।

बोध प्रश्न

1. आचार्य पूजन परंपरा है

    1. वेदों से 2. पुराणों से

    3. इतिहास से 4. अन्य ग्रन्थ से

2. आचार्य पूजा की जाती है

    1. पूजन के समय 2. शयन के समय

    3. भोजन के समय 4. अन्य समय

3. आचार्य पूजन किया जाता है

    1. कार्यो की सिद्धि 2. आचार्य की प्रसन्नता के लिए

    3. पूजा की पूर्णता के लिए 4. उपरोक्त सभी

4. आचार्य का पूजन करना चाहिए

1. देव पूजानुसार   2. पित्र पूजानुसार

3. सामान्य पूजानुसार   4. उपरोक्त में से कोई नहीं

5. आचार्य कहते है

1. जिसकी देख-रेख में यज्ञ का कार्य हो

2. जिससे विद्या प्राप्त की जाय

3. जिससे धन प्राप्त किया जाय

4. उपरोक्त सभी प्राप्त किया जाय

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 आचार्य पूजन कब किया जाता है।

प्रश्न - 2 आचार्य पूजन की विधि।

प्रश्न - 3 आचार्य पूजन की संकल्प की विधा।

प्रश्न - 4 आचार्य पूजन के श्लोक कौन से है।

प्रश्न - 5 आचार्य शब्द किसके लिए होता है।

♦♦♦

इकाई- 12 स्वस्तिपुण्याहवाचन- 2

पुण्याहवाचन- 1

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में स्वस्तिपुण्यावाचन दों में आचार्य की पूजा के उपरांत सामग्री के माध्यम से तथा अभिषेक तथा प्रथम एवं द्वितीय पात्र की विधि का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. प्रथम पात्र का ज्ञान।

ख. द्वितीय पात्र का ज्ञान।

ग. त्रिवाच्य परंपरा।

घ. अभिषेक का निमय।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. वाचन का।

यज्ञ की सम्पूर्णतः के लिए पूर्णः वाचन का विधान है पूर्णः वाचन ब्राह्मण या आचार्य द्वारा वचनों के माध्यम सेयजमान के कल्याण की कामना तथा वाचिक संकल्प द्वारा पूर्व अंकित आचार्य पूजन से सम्बन्धित है पूर्णः वाचन में वरुण कलश के साथ ही एक धातु कलश (लोटा) स्थापना करनी चाहिए जिस प्रकार पूर्व लिखित कलश प्रतिष्ठा में वरुण कलश की प्रतिष्ठा होती है उन्हीं मन्त्रों के द्वारा और उसी विधा से सन्ति कलश की स्थापना एवं पूजन किया

जाए साधारण शब्दों में पूजन के समय ही पूजन जिस दिन प्रारम्भ हो उसी दिन कलश के बगल ही एक जल पात्र और रखकर उसकी भी कलश के समान ही पूजन करना चाहिए तथा उसी जलपात्र से पूर्णयः वाचन करना चाहिए।

पूर्णयः वाचन प्रारम्भः-

यजमान पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुख करके वज्र आशन या बीर आसन पर बैठ जाए तथा अपने हाथ की अंगुलियों को कमलवत बना ले कहने का अभिप्राय ये है कि अंजलि न बनाते हुए दोनों हाथों को तजर्नि को तजर्नि अंगूठे से अंगूठे को जोड़ दें बाकी अंगुलियां खुली रहें। आचार्य पूर्व पूजित जल पात्र यजमान के हाथों में रख दें तथा यजमान उस पात्र को अपने सर पर स्पर्श करवाने तथा ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र के माध्यम से अपने दीर्घ आयु की कामना करता हुआ प्रार्थना करे तथा ब्राह्मणों को निम्न मन्त्र का वाचन करना चाहिए-

वरुण प्रार्थना- ॐ पाशपाणे नमस्तभ्यं पद्मिनीजीवनायक।

पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।

तेनाऽऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

मन्त्र के उपरान्त या हो सके तो यह मन्त्र यजमान द्वारा ही बोलवाया जाए वह ज्यादा उत्तम होगा। यदि बोलने में न सक्षम हो तो आचार्य यजमान का प्रतिनिधित्व करे मन्त्र के पूर्ण होने के उपरान्त ही सभी ब्राह्मण

अस्तु दीर्घामायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।।

ॐ त्रीणि पदा विचक्क्रमे विष्ण्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

इस वाक्य को कहकर के आशीर्वाद प्रदान करें, पुनः हाथ जोड़कर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ आशीर्वाद मांगे-

ब्राह्मण-पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

यजमान और ब्राह्मणों का यह संवाद कल्याणप्रद है।

बोध प्रश्न

1 पुष्याहवाचन कलश का क्या नाम है।

1 वरूण कलश 2 रूद्र कलश

3 शांति कलश 3 इनमे से कोई नही

2 पुष्याहवाचन मे कितने पात्र होते है।

1 एक 2 तीन

3 दो 4 पाच

3 यच्छ्रेयस्तदस्तु का प्रयोग पुष्याहवाचन मे है या नही

1 हा 2 नही

4 पुष्याहवाचन कर्म का क्रम क्या है।

1 पृथ्वी 2 संकल्प के बाद

3 गणेश पूजन के बाद 4 या अन्य

5 पुष्याहवाचन कलश यजमान के किस ओर रखा जाता है।

1 आगे दाहिने 2 पीछे बाये

3 गणेश जी के दाहिने 4 या अन्य जगह

ब्राह्मणः-

इस वाक्य को तीन बार बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करें तथा कलश जमीन पर रखकर यजमान सभी ब्राह्मणों के हाथ में निम्न मन्त्र वाचन करता हुआ जल दे-

यजमान- ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः।।

ॐ शिवा आपः सन्तु। ऐसा कहकर यजमान ब्राह्मणों के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण ब्राह्मण-सन्तु शिवा आपः तीन बार इस वाक्य का उच्चारण करें तथा फिर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ पुष्प प्रदान करे-

यजमान - लम्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्कर।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।। सौमनस्यमस्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - अस्तु सोमनस्यम् पुनः तीन बार इन वाक्यों द्वारा पुष्प स्वीकार करें, तथा पुनः यजमान ब्राह्मण के हाथों में निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ अक्षत प्रदान करे-

यजमान - अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।

यद्यच्छेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'। - ऐसा स्वीकार करें। निम्न

वाक्यों द्वारा तीन बार बोलकर हाथ में गंध प्राप्त करे कहने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक सामग्री यजमान द्वारा मन्त्रों के माध्यम से ब्राह्मणों को प्रदान की जाए तथा ब्राह्मण वैदिक वाक्यों से तीन बार बोलकर आशीर्वाद देते जाए निम्न सामग्री यजमान ब्राह्मण को निम्न लिखित वाक्यों से प्रदान करें-

यजमान - (चन्दन) गन्धाः पान्तु।

ब्राह्मण - सौमंगल्यं चास्तु।

यजमान - (अक्षत) अक्षताः परन्तु।

ब्राह्मण - आयुष्यमस्तु

यजमान - (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु।

ब्राह्मण - सौश्रियमस्तु।

यजमान - (सुपारी-पान) सफलताम्बूलानि पान्तु।

ब्राह्मण - ऐश्वर्यमस्तु।

यजमान - (दक्षिणा) दक्षिणाः पान्तु।

ब्राह्मण - बहुदेयं चास्तु।

यजमान - (जल) आपः पान्तु।

ब्राह्मण - स्वर्चितमस्तु।

यजमान - (हाथ जोड़कर) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

विप्राः - ॐ तथाऽस्तु। तथाऽस्तु।

यजमान:- (हाथ जोड़कर) यं कृत्वा सर्व वेद-यज्ञ-क्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंगारमादिं कृत्वा ऋग्-यजुः सामऽऽथर्वाऽशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - ॐ वाच्यताम्। वाच्यताम्। वाच्यताम्।

यजमानः (हाथ जोड़कर) - ॐ व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-वशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः - ॐ समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः।

यजमानः - ॐ प्रसीदत्त भवन्तः।

ब्राह्मणाः - ॐ प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः।

इसके बाद जल पात्र उठा करके यजमान के सम्मुख दो पात्र रखें जाएं जिसको प्रथम और द्वितीय की संज्ञा दी जाए निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ जल प्रथम पात्र को डाले।

पुष्याहवाचन

बोध प्रश्न

1 पुष्याहवाचन कलश का क्या नाम है।

1 वरूण कलश 2 रूद्र कलश

3 शांति कलश 3 इनमे से कोई नही

2 पुष्याहवाचन मे कितने पात्र होते है।

1 एक 2 तीन

3 दो 4 पाच

3 यच्छेयस्तदस्तु का प्रयोग पुष्याहवाचन मे है या नही

1 हा 2 नही

4 पुष्याहवाचन कर्म का क्रम क्या है।

1 पृथ्वी 2 संकल्प के बाद

3 गणेश पूजन के बाद 4 या अन्य

5 पुष्याहवाचन कलश यजमान के किस ओर रखा जाता है।

1 आगे दाहिने 2 पीछे बाये

3 गणेश जी के दाहिने 4 या अन्य जगह

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पूण्याद्ववाचन में प्रयुक्त कलश पूजा का विधान बतायें।

प्रश्न - 2 पूण्याद्ववाचन में जल देते समय कौन से शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्न - 3 पूण्याद्ववाचन में गंध देते समय कौन से शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्न - 4 पूण्याद्ववाचन किस आसन पर बैठ कर करना चाहिए।

प्रश्न - 5 पूण्याद्ववाचन में प्रयुक्त सामाग्री के नाम लिखो।

♦♦♦

इकाई- 13 स्वस्तिपुण्याहवाचन- 3

पुण्याहवाचन- 3

पुण्याह वाचन कलश उत्थाप्य दक्षिणपाख्े एकस्मिन कांस्यपात्र शराववः (दक्षिणभागे संस्थापति पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमान:- ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्ममस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ॐ इष्टसम्पदस्तु।

तथा अब निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए द्वितीय पात्र में

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रथम पात्र में -

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पांचालयौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु-पुरोगाः सर्वे-देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्।

ॐ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयतन्ताम्।

तथा द्वितीय पात्र में निम्न मन्त्रां द्वारा-

ॐ **हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शा**म्यन्तूपद्रवाः।

पुनः निम्न मन्त्र द्वारा प्रथम पात्र जल डाला जाए-

पात्रे - ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽंगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रायः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद कलश बगल रख दें तथा प्रथम पात्र का जल घर तथा परिवार के लोगों के ऊपर छिड़कवा दें तथा द्वितीय पात्र का जल नैपित्य था घर के किसी सदस्य द्वारा घर के बाहर एकान्त में डलवा दें पुण्यः वाचन करते समय सावधानी के साथ ही पात्रों में जल डालें प्रथम पात्र का जल इधर उधर गिरजाए तो कोई बात नहीं मगर द्वितीय पात्र का जल बड़ी सावधानी पूर्वक द्वितीय पात्र में ही डालना चाहिए तो इधर उधर नहीं गिरना चाहिए और ना हि उसके छीटें कहीं पड़ने चाहिए जल के मार्जन के उपरान्त बताए गए नियमानुसार निम्न वैदिक मन्त्रों द्वारा ब्राह्मण अपना आशीर्वाद प्रदान करें-

यजमान - ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण - वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

यजमान - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः! मम ..... करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम ....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान - पृथिव्यामुद्धतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।

(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारर गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्यापाम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाह चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह

भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान - ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम दिवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान - ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बभ्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (दूसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (तीसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान - ॐ समुद्रमनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

(पहली बार) हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

यजमान - ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् धुरवलामशयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण - ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

मुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान - ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्मां सास्तु सद्यनि।।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान - प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मण - ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।।

प्रण्यः वाचन के उपरान्त प्रथम पात्र का जल लेकर ब्राह्मण यजमान की पत्नी को यजमान बाग में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तथा सम्भव हो तो पूरे परिवार को पूजा स्थल पर बैठकार प्रथम पात्र के जल से निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ माजन करे-

यजमान - **आयुष्पते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।**
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।
देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे।
एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम।।

ब्राह्मण - **ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ प्रति पन्थामपद्यहि स्वस्तिगामनेहसम्।

येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु।।

यजमान - **अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

दक्षिणाका संकल्प - कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्धर्थं पुण्याह

ॐ पयः पृथिव्यांपय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो थाः।

सरस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो

देशेऽभवत्सरित्।।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्टा साम्राज्येनाभि विश्चाम्यसौ। (शु० य० 9/30)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।।

(शु० य० 18/3)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिंचामि सरस्वत्यै।

भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिंचामि।।(शु० य० 20/3)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भंद्रतन्न आ सुव।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।

सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।। (शु० य० 20/7)

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिरः।

रक्षा तोकमुत त्मना।(शु० य० 18/77)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।

शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।

एते त्वामभिषिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।

शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान- ॐ अद्य...... कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः सांगता-सिद्धर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

पुण्याहवाचन-3

बोध प्रश्न

1 पुण्यहवाचन के समय यजमान ब्राह्मण को अक्षत क्यो देता है।

1धन प्राप्ति के लिए 2 कीर्ति के लिए

3 दीर्घ बायु यश और बल के लिए

4 या अन्य

2 पुण्याह वाचन के कितने प्रकार होते है।

1 एक 2 दो

3 तीन 4 या उससे अधिक

3 पुण्याहवाचन अभिषेक के समय पत्नी यजमान के किस ओर रहती है।

1 दांए 2 बांऐ

3 आगे 4 पीछे

4 पुण्याहवाचन के पहले किस कलश कि स्थापना होती है।

1 रूद्र कलश 2 इन्द्र कलश

3 वरूण कलश 4 इनमे से कोई नही

5 पुण्याहवाचन विधा है।

1 वेद की 2 पुराण की

3 इतिहास की 4 अन्य की

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पूण्याहवाचन में कितने पात्रों का विधान है।

प्रश्न - 2 पूण्याहवाचन में प्रथम पात्र का मंत्र।

प्रश्न - 3 पूण्याहवाचन में द्वितीय पात्र का मंत्र।

प्रश्न - 4 पूण्याहवाचन में दक्षिणा के बाद ब्रह्मणों को क्या बोलना चाहिए।

प्रश्न - 5 पूण्याहवाचन में अक्षत के बाद ब्राह्मणों को क्या कहना चाहिए।

♦♦♦

इकाई- 14 स्वस्तिपुण्याहवाचन- 4
षोडशमातृकापूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में षेडशमात्रिका का निर्माण ध्यान और पूजन पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. षोडशमातृका का निर्माण।

ख. षोडशमातृका की संख्या का ज्ञान।

ग. षोडशमातृका के आवाहन का विधान।

घ. षोडशमातृका के पूजन का विधान।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. षेडशमात्रिका आवाहन का।

ख. षेडशमात्रिका पूजन का।

पूण्यः वाचन के उपरान्त पूजन क्रम में षोडश मातृका के पूजन का विधान है। सबसे पहले यजमान के दाहिनी ओर किसी चौकी या पाटे पर या वेदी पर ही कपड़ा बिछाकर सोलह चौकोर खानों का निर्माण करें, तथा प्रत्येक खानों में चावल गेहूँ रखकर एक एक देवताओं द्वारा आवाहन करें।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मन:कुलदेवता १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

आ॰ कु॰ देवता

16 (लाल)

लोकमाता

12 (पीला)

देवसेना

8 (लाल)

मेधा

4 (पीला)

तृष्टि

15 (पीला)

माता

11 (लाल)

जया

7 (पीला)

शची

3 (लाल)

पुष्टि

14 (लाल)

स्वाहा

10 (पीला)

विजया

6 (लाल)

पद्मा

2 (पीला)

धृति

13 (पीला)

स्वधा

9 (लाल)

सावित्री

5 (पीला)

1 गौरी लाल

गणेश

(धूम्र)

अथ षोडशमातृकाणामावाहनं पूजनंच

(मातृका वेदी के सामने पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठकर अक्षत छोड़कर क्रमशः आवाहन करें।)

गणेश आवाहनम्

ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवा महे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।

त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

1. गौरी-आवाहनम्

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

एकतन्त्रेण मातृकाणामावाहनम् -

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि आत्मनः कुलदेवताः।

गणेशेनाधिका ह्येता बृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

2. पद्मा-आवाहनम्

ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्य्यश्च। आरोहतं व्वरुण मित्त्र गर्तं ततश्चक्षाथामदिर्तिं दितिं च मित्त्रोऽसि व्वरुणोऽसि।।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरु-संस्थिताम्।

जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

3.शची-आवाहनम्

ॐ निवेशनः संगमनो व्वसूनां व्विश्चा रूपाभिचष्ट्टे शचीभिः।

देव ऽइव सविता सत्य-धम्मर्ेन्द्द्रो न तस्त्थौ समरे पथीनाम्।।

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचि-कुण्डल-धारिणीम्।

रक्तमुक्ताद्यलंगकारां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।

4. मेधा-आवाहनम्

ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः।

मेधामिन्द्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।

बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावहयामि स्थापयामि।

5. सावित्री-आवाहनम्

ॐ सविता त्वा सवाना गुं सुवतामग्निर्ग्गृहपतीना गुं सोमो व्वनस्प्पतीनाम्। बृहस्प्पति र्व्वाचऽइन्द्द्रो ज्ज्यैष्ठ्ठ्याय रुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्त्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम्।।

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव-मातृकाम्।

वेदगभां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

6. विजया-आवाहनम्

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ23त।

अनेशत्रस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषंगगधिः।।

सर्वास्त्र-धारिर्णीं देवीं सर्वाभरण-भूषिताम्।

सर्वदेवस्तुतां वन्धां विजयां स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयावाहयामि स्थापयामि।

7. जया-आवाहनम्

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्त्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य।

इषुधिः संगकाः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठ्ठे निनद्धो जयति प्प्रसूतः।।

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभय-प्रदाम्।

त्रैलोक्य-वन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।

8. देवसेना-आवाहनम्

ॐ इन्द्द्र ऽआसात्रेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः।

देवसेनानामभि-भंजतीनांजयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

मयूर-वाहनां देवीं खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम्।

आवाहयेद् देवसेनां तारकासुर-मर्दिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

9. स्वधा-आवाहनम्

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धदध्वम्।।

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।

पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

10. स्वाहा-आवाहनम्

ॐ स्वाहा प्प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः। पृथिव्व्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।

तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहायाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

11. मातृ-आवाहनम्

ॐ आपो ऽअस्म्मात्मातरः शुन्धयनतु घृतेन नो घृतप्प्वः पुनन्तु। व्विश्व गुं हि रिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि। दीक्षा-तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा गुं शग्ग्मां परिदधे भद्द्रं व्वर्णं पुष्ष्यन्।।

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।

सर्वकल्याण-रूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातृ आवाहयामि स्थापयामि।

12. लोकमातृ-आवाहनम्

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्ट्टिश्च मे व्विभु च मे प्प्रभु च मे पूर्ण्णंच मे पूर्ण्णतरंच मे कुयवंच मेऽक्षितंच मेऽन्नंच मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।

आवाहयेल्लोक-मातृर्जयन्ती-प्रमुखाः शुभाः।

नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोक-हितावहाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृ आवाहयामि स्थापयामि।

13. धृति-आवाहनम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्प्रजासु। यस्मात्र ऽऋते किंचन कर्म्म क्क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्प्पमस्तु।।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।

हर्षोत्फुल्लास्य-कमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

14. पुष्टि-आवाहनम्

ॐ अंगात्र्यात्क्मि्भषजा तदश्विनात्क्मानमंगैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप गुं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाः।।

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेह-प्रभवैर्नवैः।

शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

15. तुष्टि-आवाहनम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम-सोममरातीयतो निदहाति-वेदः।

सनःपर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव-सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोष-कारिणीम्।

प्रसाद-सुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

16. आत्मकुलदेवता-आवाहनम्

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्व्यानाय स्वाहा।

चक्षुषे स्वाहा श्रोत्त्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।

नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

17. मातृणां प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जूषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज गुं समिमन्दधातु। व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ्ठ।।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा

कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामित्र्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्त्विन्द्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्रवमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि

समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्स्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम गुं सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः। सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः:-

ऐसा कहते हुए वैदिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

आवाहन के उपरान्त पूर्व लिखित विधा द्वारा षोड्शो प्रचार पूजन करना चाहिए ध्यान रहे मातृका यज्ञोपवीत न चढ़ाया जाए तथा विशेष अर्ध का भी विधान माहका के लिए नहीं है बाकि सभी देवताओं के पूजा की अनुरूप इनकी भी पूजा करें तथा निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें-

प्रार्थना

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।1।।

बर्द्धन्तां कुलमातरो हि सततं धान्यं वाहनम्।

दीर्घायुंच यशश्च श्रीः समतां ज्ञानं महद् गौरवम्।।

पुत्रं पौत्रमथास्तु मंगलसदा सर्वत्र निर्विघ्नता।

पीडां पापरतिं हरन्तु जाड्यं तन्वन्तु छत्रं सुखम्।।2।।

हाथ में जल लेकर "अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।" कहकर सामने जल गिराकर पूजन समर्पित करें।

षोडश मात्रिका पूजन

बोध प्रश्न

1 षोडशमातृका पूजन मे षोडशमातृका चक्र मे गौरी गणेश का स्थान कहा रहता है।

1 पूर्व ईशान 2 अग्नि कोण मे

3 वायव्य कोण मे 4 नैकृत्य कोण मे

2 षेडशमातृका पूजन मे कुलदेवता का आवाहन किस दिशा मे होता है।

1 पूर्व अग्नि कोण 2 अग्नि दक्षिण

3 पश्चिम नैऋतृय कोण 4 या ईशान पूर्व

3 यज्ञ मण्डप मे षोडश मातृका का स्थान कहा दिया गया है।

1 वास्तु के बगल 2 वरूण कलश के बाये

3 योगिनी के बगल 4 इनमे से कोई नही

4 षोडशमातृका मे देवियो के साथ और किसका आवाहन होता है।

1 रूद्र 2 विष्णु

3 इन्द्र 4 गणेश

5 षोडशमातृका पूजन होता है।

1 यज्ञ की सिद्धि के लिए 2 विद्या के लिए

3 धन के लिए 4 उपरोक्त सभी के लिए

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 पूण्याहवाचन में लक्ष्मी के आशीर्वाद का मंत्र बतायें।

प्रश्न - 2 पूण्याहवाचन में आशेग्यता को प्राप्त करने का मंत्र बतायें।

प्रश्न - 3 पूण्याहवाचन में शांती प्राप्त करने का मंत्र बतायें।

प्रश्न - 4 षोडश मात्रिका निर्माण का विधान बतायें।

प्रश्न - 5 षोडश मात्रिका पूजन का विधान बतायें।

♦♦♦

इकाई- 15 स्वस्तिपुण्याहवाचन- 5
सप्तघृतमातृका पूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में देव पूजन क्रम में सप्तघृतमातृका निर्माण की विधि तथा सप्तघृतमात्रिका के पूजन पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. सप्तघृतमातृका का निर्माण।

ख. सप्तघृतमातृका की संख्या का ज्ञान।

ग. सप्तघृतमातृका के आवाहन का विधान।

घ. सप्तघृतमातृका के पूजन का विधान।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. सप्तघृतमातृका आवाहन का।

ख. सप्तघृतमातृका पूजन का।

षोड्स मातृका के पूजन के उपरान्त सप्तघृत मातृका का आवाहन पूजन क्रमानुसार बताया गया है, किसी लकड़ी के पाटे पर सफेद कपड़ा बाँधकर अंकित चित्रानुसार श्री शब्द से सुसाज्जत कर आगनेय कोण में रख देना चाहिए तथा निम्न मन्त्रों द्वारा आवाहन करना चाहिए-

सप्तघृत-मातृका-निर्माण-विधिः

अग्निकोण में दिवाल में या पीढ़े को वस्त्रावेष्टित करके रोली या सिन्दूर से चित्रानुसार ऊपर से नीचे तक एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह और सात बिन्दुओं को बनाकर अर्थात् ऊपर एक बिन्दु, उसके नीचे दो बिन्दु, पुनः उसके नीचे तीन बिन्दु, इसी प्रकार क्रमशः सात बिन्दु तक निर्माण करें तथा उन बिन्दुओं के ऊपर भाग में 'श्रीः' लिखें।

अथ सप्तघृत-मातृकाणामावाहनं पूजनंच

घृतधाराकरणम्- (सप्तघृतमातृकाओं पर घी से सात धार बनावें)

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतशारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्रधारम्।

देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्प्वा..........

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

अथवा

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

अथवा

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

अथवा

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

अथवा

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनीय जलं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

अथवा

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामित्रद्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विदद्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्विन्द्द्र ते हरी।।

अथवा

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुड्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

अथवा

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

अथवा

दूर्वाडकुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि

यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्त्वदूर्म्मिभिः पित्त्वमानः।।

अथवा

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अथवा

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

अथवा

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

अथवा

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्र्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्र्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

अथवा

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

अथवा

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि

मध्ये-मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

अथवा

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के

अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

अथवा

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

अथवा

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

अथवा

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

अथवा

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

तत पश्चात् पूर्व लिखित पूजा पद्धति द्वारा षोड़सो द्वारा पूजन करना चाहिए तथा पूजन के उपरान्त हाथ में पुष्प लेकर निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिए।

सप्तघृत मातृका पूजन

बोध प्रश्न

1 सप्तघृत मातृका पूजन मे किसका आवाहन होता है।

1 गौरी 2 गणेश

3 दुर्गाजी 4 श्री लक्ष्मी जी का

2 सप्तघृत मातृका का निर्माण किसमें बताया गया है।

1लोहे 2 मिट्टी

3 काष्ठ मे 4 या अन्य

3 सप्तघृत मातृका मे कुल कितने बिंदु होते है।

1 बीस 2 पन्द्रह

3 पच्चीस 4 अट्ठाइस

4 सप्तघृत मातृका देवी को और किस नाम से जाना जाता है।

1 दुर्गा जी 2 काली जी

3 कात्यनी 4 वसाधरा

5 सप्तघृत मातृका का पूजन में होता है।

1 यज्ञ में 2 श्राद्ध में

3 भोजन में 4 तर्पण में

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 शप्त धृत मात्रिका पूजन क्रम में कब किया जाता है।

प्रश्न - 2 शप्त धृत मात्रिका निर्माण की विधि बतायें।

प्रश्न - 3 शप्त धृत मात्रिका में देव आवाहन का वैदिक मंत्र लिखें।

प्रश्न - 4 शप्त धृत मात्रिका पूजन का विधान ।

प्रश्न - 5 शप्त धृत मात्रिका वशोह धारा का मंत्र।

♦♦♦

खण्ड- 4

इकाई- 16 वेदिकास्थापन-पूजन- 1

चतुष्षष्टियोगिनी, वास्तुपुरुष

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वेदिका पूजन के समय चतुष्षष्टियोगिन एवं वास्तु पुरूष निर्माण आवाहन एवं पूजन की विधि पर प्रकाश डाला गया है।इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों की जानकारी प्राप्त होगी।

क. चतुष्षष्टियोगिन का निर्माण।

ख. चतुष्षष्टियोगिन का पूजन।

ग. वास्तु पुरूष का निर्माण।

घ. वास्तु पूजन की विधि

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. चतुष्षष्टियोगिन के निर्माण का।

ख. वास्तु पुरूष के निर्माण का।

ग. चतुष्षष्टियोगिन के आवाहन का।

ख. वास्तु पुरूष के आवाहन का।

वेदिका स्थापन पूजा

सनातन परम्परानुसार वैदिक क्रमानुसार पूजन क्रम में षोड़शमातृका सप्तघृत मातृका पूजनोपरान्त यजमान के दाईं ओर या पूर्वाभिमुख बैठे साधक के दाहिने आगनेय कोण पर चतुर खष्ट योगिनी की रचना करनी चाहिए जिसमंे चौसठ खाने होते हैं प्रत्येक खानों में चित्रानुसार रंगयुक्त चावल रखना चाहिए ध्यान रहे वेदी का निर्माण सफेद या लाल वस्त्र बिछाकर चौसठ खानों का निर्माण करना चाहिए, तथा चावल से सुसज्जित कर लिम्नलिखित मन्त्रों द्वारा चतुर पष्ठी योगिनी का आवाहन सावधानी पूर्वक करना चाहिए, पंक्तिबद्ध तरीके से आचार्य के निर्देशानुसार साधक हाथ मंे चावल लेकर एक-एक कोष्ठक में डाले तथा आचार्य प्रत्येक नाम मन्त्रों से आवाहन करें, पूर्व और दक्षिण के कोने को आगनेय कोण कहा जाता है, तथा चित्रानुसार रचना करके वेदी का आवाहन तथा वैदिक मन्त्रों द्वारा पूर्व लिखित विधानुसार श्रद्धायुक्त होकर पूजन करना चाहिए।

चतुःषष्टि योगिनी मण्डलम्

पूर्व

आवाहन-मन्त्र

अथ चतुःषष्ठि-योगिनीनामावाहनं पूजनश्च

आग्नेय दिशा में (पूर्व दक्षिण के कोने में) योगिनी वेदी रख करके अक्षत छोड़ते हुए बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से छोड़ते हुए वेदी के बांयी ओर दक्षिण दिशा की ओर से पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः 64 योगिनीयों का आवाहन करें-

प्रथम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

1. ॐ भूर्भुवः स्वः गजाननायै नमः, गजाननामावाहयामि-स्थापयामि।

2. ॐ भूर्भुवः स्वः सिंमुख्यै नमः, सिंहमुखीमावाहयामि-स्थापयामि।

3. ॐ भूर्भुवः स्वः गृध्रास्यायै नमः, गृध्रास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

4. ॐ भूर्भुवः स्वः काकतुण्डिकायै नमः, काकतुण्डिकामावाहयामि-स्थापयामि।

5. ॐ भूर्भुवः स्वः उष्ट्रग्रीवायै नमः, उष्ट्रग्रीवामावाहयामि-स्थापयामि।

6. ॐ भूर्भुवः स्वः हयग्रीवायै नमः, हयग्रीवामावाहयामि-स्थापयामि।

7. ॐ भूर्भुवः स्वः वाराहयै नमः, वाराहीमावाहयामि-स्थापयामि।

8. ॐ भूर्भुवः स्वः शरभाननायै नमः, शरभाननामावाहयामि-स्थापयामि।

द्वितीय पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

9. ॐ भूर्भुवः स्वः उलूकिकायै नमः, उलूकिकामावाहयामि-स्थापयामि।

10. ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाख्यायै नमः, शिवाख्यामावाहयामि-स्थापयामि।

11. ॐ भूर्भुवः स्वः मयूर्यै नमः, मयूरीमावाहयामि-स्थापयामि।

12. ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः, विकटाननामावाहयामि-स्थापयामि।

13. ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्रायै नमः, अष्टवक्रामावाहयामि-स्थापयामि।

14. ॐ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः, कोटराक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

15. ॐ भूर्भुवः स्वः कुब्जायै नमः, कुब्जामावाहयामि-स्थापयामि।

16. ॐ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः, विकटलोचनामावाहयामि-स्थापयामि।

तृतीय पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

17. ॐ भूर्भुवः स्वः शुष्कोदर्यै नमः, शुष्कोदरीमावाहयामि-स्थापयामि।

18. ॐ भूर्भुवः स्वः ललजिह्वायै नमः, ललजिह्वामावाहयामि-स्थापयामि।

19. ॐ भूर्भुवः स्वः श्वदंष्ट्रायै नमः, श्वदंष्ट्रामावाहयामि-स्थापयामि।

20. ॐ भूर्भुवः स्वः वानराननायै नमः, वानराननामावाहयामि-स्थापयामि।

21. ॐ भूर्भुवः स्वः ऋक्षाक्ष्यै नमः, ऋक्षाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

22. ॐ भूर्भुवः स्वः केकराक्ष्यै नमः, केराक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

23. ॐ भूर्भुवः स्वः वृहत् तुण्डायै नमः, वृहततुण्डामावाहयामि-स्थापयामि।

24. ॐ भूर्भुवः स्वः सुराप्रियायै नमः, सुराप्रियामावाहयामि-स्थापयामि।

चतुर्थ पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

25. ॐ भूर्भुवः स्वः कपालहस्तायै नमः, कपालहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

26. ॐ भूर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः, रक्ताक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

27. ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्यै नमः, शुकीमावाहयामि-स्थापयामि।

28. ॐ भूर्भुवः स्वः श्येन्यै नमः, श्येनीमावाहयामि-स्थापयामि।

29. ॐ भूर्भुवः स्वः कपोतिकायै नमः, कपोतिकामावाहयामि-स्थापयामि।

30. ॐ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः, पाशहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

31. ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः, दण्डहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

32. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः, प्रचण्डामावाहयामि-स्थापयामि।

पंचम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

33. ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः, चण्डविक्रमामावाहयामि-

स्थापयामि।

34. ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः, शिशुघ्नीमावाहयामि-स्थापयामि।

35. ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः, कालीमावाहयामि-स्थापयामि।

36. ॐ भूर्भुवः स्वः पापहन्त्र्यै नमः, पापहन्त्रीमावाहयामि-स्थापयामि।

37. ॐ भूर्भुवः स्वः रुधिरपायिन्यै नमः, रुधिरपायिनीमावाहयामि-स्थापयामि।

38. ॐ भूर्भुवः स्वः वसाधयायै नमः, वसाधयामावाहयामि-स्थापयामि।

39. ॐ भूर्भुवः स्वः गर्भभक्षायै नमः, गर्भभक्षामावाहयामि-स्थापयामि।

40. ॐ भूर्भुवः स्वः शवहस्तायै नमः, शवहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

षष्ठ पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्वकी ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

41. ॐ भूर्भुवः स्वः आन्त्रमालिन्यै नमः, आन्त्रमालिनीमावाहयामि-स्थापयामि।

42. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलकेश्यै नमः, स्थूलकेशीमावाहयामि-स्थापयामि।

43. ॐ भूर्भुवः स्वः वृहत्कुक्ष्यै नमः, वृहतकुक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

44. ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पास्यायै नमः, सर्पास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

45. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रेतवाहनायै नमः, प्रेतवाहनामावाहयामि-स्थापयामि।

46. ॐ भूर्भुवः स्वः दन्त शूक-करायै नमः, दन्तशूक-करामावाहयामि-

स्थापयामि।

47. ॐ भूर्भुवः स्वः क्रौंचयै नमः, क्रौंचीमावाहयामि-स्थापयामि।

48. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगशीर्षायै नमः, मृगशीर्षामावाहयामि-स्थापयामि।

सप्तम पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

49. ॐ भूर्भुवः स्वः वृषाननायै नमः, वृषाननामावाहयामि-स्थापयामि।

50. ॐ भूर्भुवः स्वः व्याव्तास्यायै नमः, व्यात्तास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

51. ॐ भूर्भुवः स्वः धूमनिश्वासायै नमः, धूमनिश्वासमावाहयामि-स्थापयामि।

52. ॐ भूर्भुवः स्वः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः, व्योमैक-चरणोर्ध्वदृशमावाहयामि-स्थापयामि।

53. ॐ भूर्भुवः स्वः तापिन्यै नमः, तापिनीमावाहयामि-स्थापयामि।

54. ॐ भूर्भुवः स्वः शोषणीदृष्ट्यै नमः, शोषणीदृष्टिमावाहयामि-स्थापयामि।

55. ॐ भूर्भुवः स्वः कोटर्यै नमः, कोटरीमावाहयामि-स्थापयामि।

56. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलनासिकायै नमः, स्थूलनासिकामावाहयामि-स्थापयामि।

अष्टम पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

57. ॐ भूर्भुवः स्वः विद्युत् प्रभायै नमः, विद्युत् प्रभामावाहयामि-स्थापयामि।

58. ॐ भूर्भुवः स्वः वलाकास्यायै नमः, वलाकास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

59. ॐ भूर्भुवः स्वः मार्जार्यै नमः, मार्जारीमावाहयामि-स्थापयामि।

60. ॐ भूर्भुवः स्वः कटपूतनायै नमः, कटपूतनामावाहयामि-स्थापयामि।

61. ॐ भूर्भुवः स्वः अट्टाट्ट-हासायै नमः, अट्टाट्ट-हासामावाहयामि-स्थापयामि।

62. ॐ भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः, कामाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

63. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यैः नमः, मृगाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

64. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः, मृगलोचनामावाहयामि-स्थापयामि।

वेदी के पूर्व भाग में जो तीन कोष्ठक हैं उनमें तीन कलश रखकर, कलश का आवाहन करें - ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मांविशताद्द्रयिः। दक्षिण में काली, मध्य में लक्ष्मी तथा उत्तर वाले में सरस्वती का आवाहन करें-

1. ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महाकालयै नमः,

श्री महाकालीमावाहयामि-स्थापयामि।

2. ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः,

श्री महालक्ष्मीमावाहयामि-स्थापयामि।

3. ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महासरस्वत्यै नमः,

श्री महासरस्वतीमावाहयामि-स्थापयामि।

ॐ आवाहयाम्यहं देवीम् योगिनीम् परमेश्वरीम्।

योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यान समन्विताः।।

चतुःषष्टि समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।

पूजां गृहण्न्तु मद्दतां पुत्र-पौत्र-प्रवर्धिनीम्।।

आवाहिताः चतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।।

वेदी कलशों के ऊपर क्रमशः महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती तीनों की मूर्ति (सोने, चाँदी या ताँते की मूर्ति) अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा करके स्थापित कर पूजन करें। प्रतिमा के अभाव में नारियल रखें।

आवाहन के उपरान्त निम्न वैदिक मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए-

प्रतिष्ठा-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयान्तामोम्3प्रतिष्ठा।

पूजन -

ॐ चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः अथवा श्रीसूक्तमंत्रों से पाद्य-अर्घ्य-आचमन-स्नान-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी- दक्षिणा फल आदि चढ़ा कर पूजन करें।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त

भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान्

समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयामि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्त्रदत्रूर्म्मिभिः पित्त्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣸ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम ꣳ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ᳪ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ᳪ शुना ते अ ᳪ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्‌वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्‌ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्‌धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्‌भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

तथा श्री सूक्त मन्त्रों द्‌वारा षोड्शो प्रचार पूजन करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 यज्ञादि मे चतुष्षति योगिनि कि दिशा कौन सी है।

1 पूर्व ईशान कोण 2 पूर्व अग्नि कोण

3 दक्षिण नैऋृतय 4 वायव्य कोण

2 योगिनी को नही चढाना चाहिए।

1 हल्दी 2 पुष्प

3 दूर्वा 4 यज्ञोपवीत

3 चतुःष्ठि योगिनी के साथ सबसे पहले किसका आवाहन होता है।

1 गणेश 2 रूद्र

3 गौरी

4 महाकाली महा लक्ष्मी महा सरस्वती का

4 चतुःष्ठि योगिनी मे किस योगिनी का आवाहन पहले होता है।

1 दिव्य यौगायै 2 विरूपाक्ष्यै

3 कलप्रियायै 4 उग्रचामुण्डायै

5 चतुःष्ठि योगिनी वेदी मे कुल कितने चक्र होते है।

1 पचास 2 शोलह

3 नव 4 चैसठ

वास्तु पुरुष-

वैदिक परम्परानुसार यज्ञ के पूजा क्रम में पश्चिम और दक्षिण के कोनों से चौकोर समबाहु वेदी का निर्माण करना चाहिए तथा चित्रानुसार इसमें भी सौसठ खाने बनाने चाहिए तथा वास्तु पीठ में नौ नौ उर्ध्व तिर्यक रेखाएँ चित्रानुसार खीचना चाहिए तथा चित्रानुसार रंगे हुए चावल से प्रत्येक कोष्ठक को भर लेना चाहिए ध्यान रहे वास्तु पुरुष देवता वास्तु के प्रधान देवता होते हैं, वास्तु (घर) देवता घर की शान्ति, सुख, समृद्धि में वृद्धि करते हैं, चित्रानुसार वेदी रचना के उपरान्त पूर्व बतायी गयी विद्या द्वारा नाम मन्त्रों से आवाहन आचार्य के निर्देशानुसार करना चाहिए तथा साधक द्वारा हाथ चावल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा चावल डालते हुए आवाहन करना चाहिए-

वास्तुमण्डल निर्माण विधि

एक हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर आठ-आठ खाने कुल चौसठ (64) खाने बनावे तथा चारों कोने के तीन-तीन खानों को आधे से रेखांकित करें, तत्पश्चात् पुस्तक के अन्त में दिये गये वास्तु-मण्डल वेदी चित्र के अनुसार उन खानों को रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञमण्डल अथवा पूजन स्थल के नैर्ऋत्यकोण में रखकर आवाहन व पूजन करें।

वास्तुपीठ में जो 9-9 उर्ध्व तिर्यक रेखाएँ होती हैं, उन रेखाओं के देवताओं का नाम भी प्राप्त होता है अतः उनका भी आवाहन पूजन समीचीन होगा।

८१ कोष्ठात्मक गहवास्तु मण्डलम्

पूर्व

रेखा देवता आवाहनम्

पश्चिम से पूर्व के रेखा देवता

1. ॐ लक्ष्म्यै नमः। 2. ॐ यशोवत्यै नमः। 3. ॐ कान्तायै नमः। 4. ॐ सुप्रियायै नमः। 5. ॐ विमलायै नमः। 6. ॐ शिवायै नमः। 7. ॐ सुभगायै नमः। 8. ॐ सुमत्यै नमः। 9. ॐ इडायै नमः।

दक्षिण से उत्तर के रेखा देवता

1. ॐ धन्यायै नमः। 2. ॐ प्राणायै नमः। 3. ॐ विशालायै नमः। 4. ॐ स्थिरायै नमः। 5. ॐ भद्रायै नमः। 6. ॐ जयायै नमः। 7. ॐ निशायै नमः। 8. ॐ विरजायै नमः। 9. ॐ विभावायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवताभ्यो नमः, सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अथ वास्तुमण्डल-देवानामावाहनं पूजनंच

(अक्षत पुष्प से क्रमशः वास्तुमण्डल चित्र में लिखे गए क्रम के अनुसार देवताओं का आवाहन करें।)

1. ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः, शिखिनमावाहयामि-स्थापयामि।

2. ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः, पर्जन्यमावाहयामि-स्थापयामि।

3. ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः, जयन्तमावाहयामि-स्थापयामि।

4. ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि-स्थापयामि।

5. ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि-स्थापयामि।

6. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्याय नमः, सत्यमावाहयामि-स्थापयामि।

7. ॐ भूर्भुवः स्वः भृशाय नमः, भृशमावाहयामि-स्थापयामि।

8. ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशय नमः, आकाशमावाहयामि-स्थापयामि।

9. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि-स्थापयामि।

10. ॐ भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः, पूष्णमावाहयामि-स्थापयामि।

11. ॐ भूर्भुवः स्वः वितथाय नमः, वितथमावाहयामि-स्थापयामि।

12. ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः, गृहक्षतमावाहयामि-स्थापयामि।

13. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि-स्थापयामि।

14. ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः, गन्धर्वमावाहयामि-स्थापयामि।

15. ॐ भूर्भुवः स्वः भृंगराजाय नमः, भृंगराजमावाहयामि-स्थापयामि।

16. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि-स्थापयामि।

17. ॐ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यः नमः, पितृनावाहयामि-स्थापयामि।

18.ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः, दौवारिकमावाहयामि-स्थापयामि।

19. ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः, सुग्रीवमावाहयामि-स्थापयामि।

20. ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्ताय नमः, पुष्पदन्तमावाहयामि-स्थापयामि।

21. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।

22. ॐ भूर्भुवः स्वः असुराय नमः, असुरमावाहयामि-स्थापयामि।

23. ॐ भूर्भुवः स्वः शोषाय नमः, शोषमावाहयामि-स्थापयामि।

24. ॐ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः, पापमावाहयामि-स्थापयामि।

25. ॐ भूर्भुवः स्वः रोगाय नमः, रोगमावाहयामि-स्थापयामि।

26. ॐ भूर्भुवः स्वः अहये नमः, अहिमावाहयामि-स्थापयामि।

27. ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्याय नमः, मुख्यमावाहयामि-स्थापयामि।

28. ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाटाय नमः, भल्लाटमावाहयामि-स्थापयामि।

29. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि-स्थापयामि।

30. ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाय नमः, सर्पमावाहयामि-स्थापयामि।

31. ॐ भूर्भुवः स्वः अदित्यै नमः, अदितिमावाहयामि-स्थापयामि।

32. ॐ भूर्भुवः स्वः दित्यै नमः, दितिमावाहयामि-स्थापयामि।

33. ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि-स्थापयामि।

34. ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्राय नमः, सावित्रमावाहयामि-स्थापयामि।

35. ॐ भूर्भुवः स्वः जयाय नमः, जयमावाहयामि-स्थापयामि।

36. ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि-स्थापयामि।

37. ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः, अर्यमणमावाहयामि-स्थापयामि।

38. ॐ भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः, सवित्रमावाहयामि-स्थापयामि।

39. ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वते नमः, विवस्वतमावाहयामि-स्थापयामि।

40. ॐ भूर्भुवः स्वः बिबुधाधिपाय नमः, बिबुधाधिपमावाहयामि-स्थापयामि।

41. ॐ भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि-स्थापयामि।

42. ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मणे नमः, राजयक्ष्माणमावाहयामि-स्थापयामि।

43. ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधराय नमः, पृथ्वीधरमावाहयामि-स्थापयामि।

44. ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः, आपवत्समावाहयामि-स्थापयामि।

45. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि-स्थापयामि।

46. ॐ भूर्भुवः स्वः चरक्यै नमः, चरकीमावाहयामि-स्थापयामि।

47. ॐ भूर्भुवः स्वः विदार्यै नमः, विदारीमावाहयामि-स्थापयामि।

48. ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः, पूतनामावाहयामि-स्थापयामि।

49. ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः, पापराक्षसीमावाहयामि-स्थापयामि।

50. ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि-स्थापयामि।

51. ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः, अर्यम्णमावाहयामि-स्थापयामि।

52. ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः, जृम्भकमावाहयामि-स्थापयामि।

53. ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः, पिलिपिच्छमावाहयामि-स्थापयामि।

54. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि-स्थापयामि।

55. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि-स्थापयामि।

56. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि-स्थापयामि।

57. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि-स्थापयामि।

58. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।

59. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि-स्थापयामि।

60. ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि-स्थापयामि।

61. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि-स्थापयामि।

62. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मामावाहयामि-स्थापयामि।

63. ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि-स्थापयामि।

64. ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि-स्थापयामि।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्श्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विदद्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्त्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाङ.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा

चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्त्रदत्रूर्म्मिभिः पित्त्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣸ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम ७ सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूय्यर्र्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣸ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ꣸ शुना ते अ ꣸ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गड्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूर्व में दिये गये मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

आवाहन और प्रतिष्ठा के उपरान्त पूर्व पूजन करना चाहिए तथा पूजन के उपरान्त हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करनी चाहिए जिसके मन्त्र निम्नलिखित हैं-

वास्तु मन्त्र-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहयस्मान् स्वादेशो ऽअनमीवो भवानः।

यत्वेमहे प्रतितत्रो जुषस्व शत्रो भव द्विपदे सं चतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः। वास्तुपुरुषं आवाहयामि स्थापयामि।

बोध प्रश्न

1 वास्तु वेदी की दिशा कौन सी है।

1 पूर्व ईशान कोण 2 पूर्व अग्नि कोण

3 पश्चिम वायव्य कोण 4 दक्षिण नैॠत्य

2 यज्ञादि क्रिया मे वास्तु कितने पद का बनता है।

1 शोलह 2 नव

3 इक्यासी 4 चैसठ

3 वास्तु वेदी को किस देवता का चक्र माना गया है।

1 रूद्र 2 इन्द्र

3 विष्णु 4 या अन्य

4 वास्तु पीठ मे और किसका आवाहन होता है ।

1 गणेश 2 गौरी

3 भैरव 4 शिख्यादि देवता

5 वास्तु पुरूष का पूजन होता है ।

1 श्राद्ध में 2 यज्ञ में

3 शयन में 4 पूजन में

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 चतुष्षष्टियोगिनी निर्माण की विधि बतायें।

प्रश्न - 2 चतुष्षष्टियोगिनी निर्माण में कोष्ठकों की संख्या बतलायें।

प्रश्न - 3 वाष्तु पुरुष निर्माण की विधि बतायें।

प्रश्न - 4 वाष्तु पुरुष निर्माण की संख्या बतायें।

प्रश्न - 5 योगिनी पुरुष तथा वाष्तु पुरुष पर प्रकाश डालें।

♦♦♦

इकाई- 17 वेदिकास्थापन-पूजन- 2
क्षेत्रपाल, कुण्डस्थ देवता-पूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वेदिका पूजन क्रम में क्षेत्रपाल एवं हवन कुण्ड के निर्माण तथा आवाहन एवं पूजन पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों की जानकारी प्राप्त होगी।

क. क्षेत्रपाल का निर्माण।

ख. क्षेत्रपाल का पूजन।

ग. हवन कुण्ड का निर्माण।

घ. हवन कुण्ड पूजन की विधि।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. क्षेत्रपाल वेदी के निर्माण का।

ख. हवन कुण्ड के निर्माण ।

ग. क्षेत्रपाल देवता के आवाहन के पूजन का।

घ. कुण्डस्थ देवता के आवाहन पूजन का।

क्षेत्रपाल

वैदिक परम्परा में यज्ञिक पूजन क्रमानुसार पश्चिम और उत्तर

के कोने में समबाहु निर्माण कर उसको सफेद वस्त्र से सुसज्जित कर लें तथा चित्रानुसार नौ कोष्ठक (खाने) में बांटना चाहिए तथा प्रत्येक खानों में एको पंचासत क्षेत्रपाल रचना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक प्रत्येक खानों में आचार्य के निर्देशानुसार नाम मन्त्रों द्वारा हाथ में चावल लेकर साधक क्षेत्रपाल का आवाहन करें, क्षेत्रपाल क्षेत्र की तथा यज्ञ के रक्षक देवता होते हैं, इनकी पूजा पूरी श्रद्धा के साथ करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र

पूर्वदले सप्तकोष्ठेषु (पूर्वदल के सात कोष्ठकों में आवाहन करें)

1. ॐ भूर्भुवः स्वः अजराय नमः, अजरमावाहयामि स्थापयामि।

2. ॐ भूर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः, व्यापकमावाहयामि स्थापयामि।

3. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः, इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि।

4. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्त्तये नमः, इन्द्रमूत्तिमावाहयामि स्थापयामि।

5. ॐ भूर्भुवः स्वः उक्षाय नमः, उक्षमावाहयामि स्थापयामि।

6. ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः, कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि।

7. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

आग्नेयदले सप्तकोष्ठेषु (अग्निकोण वाले दल के सात कोष्ठकों में आवाहन करें)

8. ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि स्थापयामि।

9. ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः, विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि।

10. ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकामाय नमः, लिप्तकाममावाहयामि स्थापयामि।

11. ॐ भूर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः, लीलाकमावाहयामि स्थापयामि।

12. ॐ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः, एकदंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि।

13. ॐ भूर्भुवः स्वः ऐरावताय नमः, ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि।

14. ॐ भूर्भुवः स्वः ओषधिघ्नाय नमः, ओषधिघ्नमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षिणदले षड्कोष्ठेषु (दक्षिण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

15. ॐ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः, बन्धनमावाहयामि स्थापयामि।

16. ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यकाय नमः, दिव्यकमावाहयामि स्थापयामि।

17. ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि स्थापयामि।

18. ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः, भीषणमावाहयामि स्थापयामि।

19. ॐ भूर्भुवः स्वः गवयाय नमः, गवयमावाहयामि स्थापयामि।

20. ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टाय नमः, घण्टामावाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यदलेषड्कोष्ठेषु (नैर्ऋत्यकोण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

21. ॐ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः, व्यालमावाहयामि स्थापयामि।

22ः. ॐ भूर्भुवः स्वः अणवे नमः, अणुमावाहयामि स्थापयामि।

23. ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः, चन्द्र-वारुणमावाहयामि स्थापयामि।

24. ॐ भूर्भुवः स्वः पटाटोपाय नमः, पटाटोपमावाहयामि स्थापयामि।

25. ॐ भूर्भुवः स्वः जटालाय नमः, जटालमावाहयामि स्थापयामि।

26. ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः, क्रतुमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिमदलेषड्कोष्ठेषु (पश्चिम दल के छः कोष्ठकों मंे आवाहन करें)

27. ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः, घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

28. ॐ भूर्भुवः स्वः विटंगकाय नमः, विटंगकमावाहयामि स्थापयामि।

29. ॐ भूर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः, मणिमानमावाहयामि स्थापयामि।

30. ॐ भूर्भुवः स्वः गणबन्धवे नमः, गणबन्धुमावाहयामि स्थापयामि।

31. ॐ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः, डामरमावाहयामि स्थापयामि।

32. ॐ भूर्भुवः स्वः ढुण्डिकर्णाय नमः, ढुण्डिकर्णमावाहयामि स्थापयामि।

वायव्यदले षड्कोष्ठेषु (वायव्यकोण के दल में छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

33. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः, स्थविरमावाहयामि स्थापयामि।

34. ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः, दन्तुरमावाहयामि स्थापयामि।

35. ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः, धनदमावाहयामि स्थापयामि।

36. ॐ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः, नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि।

37. ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः, महाबलमावाहयामि स्थापयामि।

38. ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः, फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरदलेषड्कोष्ठेषु (उत्तर दिशा के दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

39. ॐ भूर्भुवः स्वः चीकराय नमः, चीकरमावाहयामि स्थापयामि।

40. ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः, सिंहमावाहयामि स्थापयामि।

41. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि स्थापयामि।

42. ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षाय नमः, यक्षमावाहयामि स्थापयामि।

43. ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः, मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि।

44. ॐ भूर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः, तीक्ष्णोष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

ईशानदलेषड्कोष्ठेषु (ईशानकोण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

45. ॐ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः, अनलमावाहयामि स्थापयामि।

46. ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्लतुण्डाय नमः, शुक्लतुण्डमावाहयामि स्थापयामि।

47. ॐ भूर्भुवः स्वः सुधालापाय नमः, सुधालापमावाहयामि स्थापयामि।

48. ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः, बर्बरकमावाहयामि स्थापयामि।

49. ॐ भूर्भुवः स्वः पवनाय नमः, पवनमावाहयामि स्थापयामि।

50. ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः, पावनमावाहयामि स्थापयामि।

मध्यदले (मध्यदल के कोष्ठक में आवाहन करें)

51. ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।

- वेदी के सामने (या ऊपर) कलश स्थापन करें- ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्द्रयिः।
- वेदी के मध्य में एक धातुकलश स्थापित कर उसका पूजन करके कलश के ऊपर भैरव की ताम्र या लौह की मूर्ति का आवाहन करके अग्न्युत्तारण, प्रतिष्ठा कर पूजन करें। मूर्ति के अभाव में यंत्र अथवा नारियल रख सकते हैं।

भैरव-आवाहन मंत्र-

ॐ नहि स्पश मवि दत्र न्य मस्माद् वैश्वानरात् पुरुएतारमग्नेः।

एमेन म वृधत्रमृता अमर्त्यम् वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः।।

ॐ भूत प्रेत पिशाचाद्यैरावृतं शूल-पाणिनम्।

आवाहये क्षेत्रपालं तु कर्मण्यस्मिन् सुखायनः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भैरवाय नमः भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७

समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् 3 प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादिमण्डलदेवता सहित री क्षेत्रपालय नमः, सुप्रतिष्ठतो वरदो भव।।

पूजन -

ॐ भूर्भुवः स्वः सभैरव अजरादि क्षेत्रपालमण्डलदेवताभ्यो नमः अथवा पुरुषसूक्त के मंत्रों से षोडशोपचार पाद्य-अर्घ्य-आचमन।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ँ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ँ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामित्रद्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्विन्द्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुड्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्त्रदत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ॐ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम ७सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्र्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्र्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣳह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ७ शुना ते अ ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु्ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

बोध प्रश्न

1 क्षेत्रपाल वेदी यज्ञ तण्डप मे किस दिशा मे रहती है।

1 पूर्व ईशान 2 दक्षिण अग्नेय

3 पश्चिम वायव्य 4 पश्चिम नैऋृव्य

2 क्षेत्र पाल वेदी मे कितने देवता का आवाहन होता है।

1 दस 2 बीस

3 इक्यासी 4 इक्यावन

3 क्षेत्र पाल वेदी को क्या कहते है।

1 शिख्यादि मण्डल 2 नवग्रहमण्डल

3 अजरादि मण्डल 4 या अन्य

4 क्षेत्रपाल के पीठ मे किस देवता का आवाहन होता है।

1 रूद्र 2 गणपति

3 विष्णु 4 भैरव

5 क्षेत्रपाल वेदी मे प्रत्येक काष्ठक मे कितने पद होते है।

1 नव-नव 2 पाच-पाच

3 तीन-तीन 4 छः छः

निर्माण विधि

एक हाथ लम्बी, चौड़ी तथा ॐची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत, रक्त या पीत वस्त्रावेष्टित करके चार-चार तिर्यक एवं ऊर्ध्व रेखा करने पर नव कोष्ठक का मण्डल बनेगा जिसमें प्रत्येक कोष्ठक में छः-छः पद (चित्रानुसार) बनावे, पूर्व एवं अग्निकोण के कोष्ठक में सात-सात पद तथा मध्य के कोष्ठक में एक पद बनाने पर इक्यावन (51) पद का क्षेत्रपाल मण्डल बनेगा।

कुण्डस्थ देवता पूजन

यज्ञशाल के मध्य में हवन कुण्ड की रचना करें, हवन कुण्ड में कण्ठ तथा तीन परिधि (सतरज तम) तथा कुण्ड के ऊपर योनी की रचना करें तथा कुण्ड की रचना के उपरान्त सर्वप्रथम निम्न मन्त्रों द्वारा **विश्वकर्मा का आवाहन मन्त्र**

आवाहनम् - (कुण्ड को स्पर्श करते हुए आवाहन करें)

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म-विनिर्मितम्।

शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः, कुण्डमावाहयामि स्थापयामि।

तथा विश्वकर्मा के आवाहन के पश्चात् श्वेत वर्णालंकृत ऊपरी मेखला (ऊपर की परिधि में) निम्न मन्त्र से विष्णु का आवाहन निम्न मन्त्रों द्वारा करें-

यहाँ बनाना है

उपरिमेखलायाम् श्वेतवर्णालंकृतायां विष्णु आवाहनम् -

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ॐ सुरे स्वाहा।।

विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन।

विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नमः, मावाहयामि स्थापयामि।

तथा मध्य में रक्त वर्णालंकृत ब्रह्मा का आवाहन निम्न मन्त्रों द्वारा करें-

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालंकृतायां ब्रह्माऽवाहनम् -

ॐ ब्रह्म-जज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्धिसी-मतः सुरुचो व्वेनऽआवः। सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठ्ष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च व्विवः।।

हंसपृष्ठसमारुढ आदिदेव जगत्पते।

रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

इसके उपरान्त अधोमेखला (नीचे वाली परिधि) कृष्ण वर्णालंकृत मेखला में भगवान रुद्र का आवाहन निम्न मंत्रों से करें-

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालंकृतायां रुद्रावाहनम्ः -

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।

गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर।

आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं राक्षसां गणात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

मेखला में देवताओं के आवाहन के उपरान्त मध्य कुण्ड के ऊपर रचित योनी का निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आवाहन करें-

योन्यावाहनम् -

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मात्वा हिऽसीत्र्माहिऽसीः।।

आगच्छ देवि कलयाणि जगदुत्पत्तिहेतुके।

मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः, योनिमावाहयामि स्थापयामि।।

और हवन कुण्ड के कण्ठ में निम्न मन्त्र द्वारा भगवान रुद्र का पुनः आवाहन करें-

कुण्डस्य रुद्रावाहनम् -

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिव रुद्द्राऽउपश्श्रिताः। तेषा साहस्र-योजनेवधत्र्वानि तत्र्मसि।। नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः। तेषाः सहस्र-योजनेवधत्र्वानि सत्र्मसि।।

कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसत्रिभः।

अस्मित्रावाहये रुद्रं शितिकण्ठं कपालिनम्।।

कुण्ड मंगलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः।

परितोमेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

कण्ठ के आवाहन के पश्चात कुण्ड के मध्य में नाभि का आवाहन करें जिसके मन्त्र निम्न हैं-

कुण्डमध्ये नाभ्यावाहनम् -

ॐ नाभिर्म्मे चित्तं व्विज्ञानपायुर्म्मे पचितिर्व्भसत्। आनन्द-नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्ग्यम्पसः। जंगधाभ्याम्पभ्दयां धर्म्मोसि व्विशि राजा प्प्रतिष्ठितः।।

पद्माकाराऽथवा कुण्ड-सद्दशाकृति-बिभ्रती।

आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः, नाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

पूजा क्रम में पुनः कुण्ड के अन्दर नैवित्य कोण में वास्तु पुरुष का आवाहन निम्न मन्त्रों से करें-

कुण्डाभ्यन्तरे नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम्-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहयस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः।
यत्वेमहे प्रतितत्रो जुषस्व शत्रो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्।
देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल-तलवासिनम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः, वास्तुपुरुषनाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

(इस प्रकार आवाहन करके प्रतिष्ठा करें।)

तथा आवाहन के उपरान्त वैदिक मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा एवं पूर्व लिखित विधा द्वारा षोड्सोपचार पूजन करना चाहिए तथा किसी पत्ते पर दही उड़द रख कर निम्न मन्त्रों से बलिदान करना चाहिए तथा दाहिने हाथ में जल लेकर के समर्पित करना चाहिए मन्त्र-

प्रतिष्ठा -

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ, समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों 3 प्रतिष्ठा।।

ॐ भूर्भुवः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः। अथवा पुरुषसूक्त मन्त्रों से कुण्ड के आवाहित सभी देवताओं का एक तंत्र से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

कुण्डस्य देवता पूजन

बोध प्रश्न

1 कुण्ड का आवाहन कैसे करना चाहिए

1 चावल छोड़ते हुए 2 स्पर्श करते हुए

3 हाथ जोडकर 4 ध्यान करते हुए

2 कूण्ड के आवाहन के बाद किसके आवाहन का क्रम है ।

1 मेखला 2 योनि

3 विश्वकर्मा 4 इनमे से कोई नही

3 कुण्ड कि पहली परिधि मे किसका आवाहन होता है।

1 ब्रह्म 2 विष्णु

3 रूद्र 4 या अन्य

4 कुण्ड के प्रथम परिधि का रंग क्या है।

1 लाल 2 हरा

3 श्वेत 4 काला

5 पूजा के क्रम मे कुण्ड के अन्दर नैऋत्य कोण मे किसका आवाहन होता है।

1 क्षेत्रपाल 2 योगिनी का

3 षोडषमातृका का 4 वास्तु पुरूष का

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 क्षेत्र पाल निर्माण की विधि बतायें।

प्रश्न - 2 क्षेत्र पाल निर्माण में कोष्ठकों की संख्या बतायें।

प्रश्न - 3 क्षेत्र पाल देवता का आवाहन मंत्र लिखें।

प्रश्न - 4 हवन कुण्ड निर्माण की विधि बतायें।

प्रश्न - 5 गुंड पूजन पर प्रकाश डालें।

♦♦♦

इकाई- 18 वेदिकास्थापन-पूजन- 3
नवग्रह, स्थापन एवं पूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वेदिका पूजन क्रम में नवग्रह वेदी के निर्माण तथा आवाहन पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से ग्रहों का स्थान निर्माण तथा निम्न बातों की जानकारी प्राप्त होगी।

क. नवग्रह पीठ का निर्माण।

ख. नवग्रह का आवाहन।

ग. नवग्रह पीठ पर देवताओं का स्थान।

घ. नवग्रह पीठ पर देवताओं का पूजन।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. नवग्रह वेदी के निर्माण का।

ख. नवग्रह वेदी में देवताओं के आवाहन का।

ग. नवग्रह वेदी में आवाहित देवताओं के पूजन का।

नवग्रह स्थापना एवं पूजन -

यज्ञ मण्डप में उत्तर पूर्व के कोने में (इसान) समबाहु एक वेदी की रचना करनी चाहिए जिसमें सफेद वस्त्र डालकर चित्रानुसार नौ

खानों में बांट देना चाहिए प्रत्येक खानों में चित्रानुसार एक-एक मन्त्रों द्वारा आवाहन करना चाहिए वेदी में सभी गृहों का स्थान निश्चित है निश्चित स्थान पर ही गृहों को स्थान देना चाहिए।

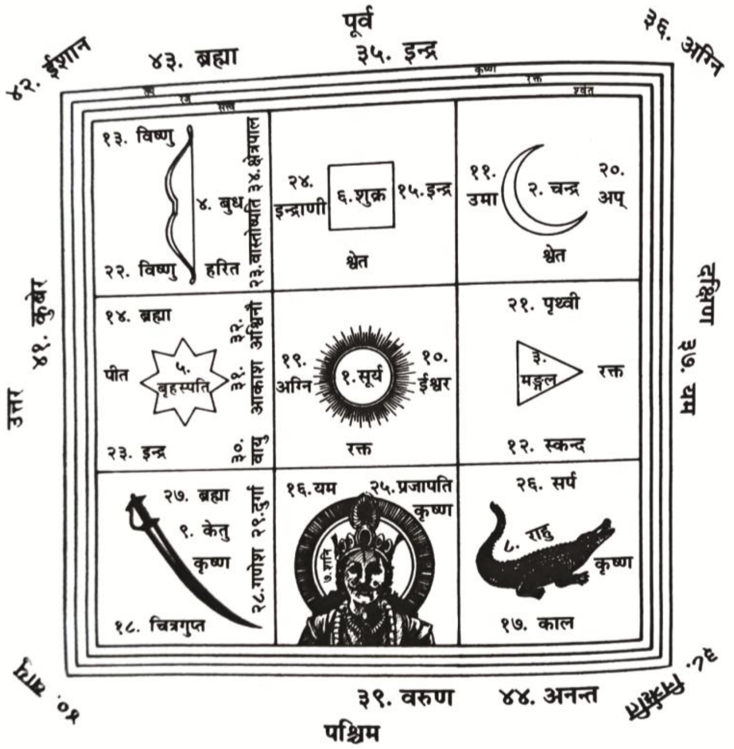

निर्माण विधि

एक हाथ लम्बी, चौड़ी तथा ऊँची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत, रक्त या पीत वस्त्रावेष्टित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर चार-चार रेखा करने से नव पद का नवग्रह मण्डल बनता है, चित्रानुसार ग्रहों की आकृति का निर्माण रंगीन अक्षत से करके यज्ञमण्डप में (पूजन स्थल में) ईशान कोण में रखकर इनका आवाहन पूजन करना चाहिए। ग्रहों के प्रत्येक कोष्ठक में दाहिनी ओर

अधि देवताओं का तथा बाईं ओर प्रत्यधि देवताओं का आवाहन होता है, साथ ही पंचलोकपालों का वेदी के बाहर दशों दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पालों का आवाहन पूजन किया जाता है।

सूर्यावाहन

वेदी के मध्य में भगवान सूर्य का आवाहन निम्न मन्त्र द्वारा करें-

1. सूर्यावाहनम -(नवग्रह वदा के मध्य कोष्ठक में)

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयत्रमृतं मर्त्यंच।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

जपा-कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

नवगृह वेदी के अग्नि कोण वाले कोष्ठक में चन्द्रमा का आवाहन निम्न मन्त्रों से करें-

2. चन्द्र-आवाहनम् -

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ꣳ सुबद्धवम्महते क्षत्त्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्ज्यायेन्द्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्त्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना ꣳराजा।।

दक्षिण कोष्ठक में मंगल (भौम) का आवाहन मन्त्र-

3. भौम-आवाहनम् -

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्व्याऽअयम्। अपा ꣳ

सि जित्वति।।

इसानुकोण के कोष्ठक में बुद्ध का आवाहन मन्त्र-

4. बुध-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के ईशानकोण के कोष्ठक में)

ॐ उदबुध्यस्वाग्ग्ने प्प्रतिजागृहि त्वमिष्ट्टापूर्त्ते स ৺ सृजेथामयंच। अस्म्मिन्त्सधस्थे अद्ध्युत्तरस्म्मिन् व्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्।।

वेदी के उत्तर कोष्ठक में बृहस्पति का आवाहन करें-

5. बृहस्पति-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के उत्तर कोष्ठक में)

ॐ बृहस्प्पते ऽअति यदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजात तदस्म्मासु द्द्रविणं धेहि चित्त्रम्।।

नवगृह के पूर्व खाने में शुक्र का आवाहन

6. शुक्र-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के पूर्व कोष्ठक में)

ॐ अत्रात्परिस्त्रुतो रसं व्व्रह्मणा व्व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान गंु शुक्क्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

नवगृह वेदी के पश्चिम कोष्ठक में शनि का आवाहन

7. शनि-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के पश्चिम कोष्ठक में)

ॐ शन्नो देवीरभिष्ट्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये।

शः व्योरभिस्त्रवन्तु नः।।

नवगृह वेदी के नैदित्व कोण में राहु का आवाहन

8. राहु-आवाहनम् -

ॐ कया नश्चित्त्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा।

कया शचिष्ठ्ठया व्वृता।।

नवगृह वेदी के वायब्य कोण में केतु का आवाहन

9. केतु-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के वायव्यकोण के कोष्ठक में)

ॐ केतुं कृण्ण्वत्रकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

वैदिक मन्त्रों द्वारा आचार्य के निर्देशानुसार बने हुए मण्डल पर चावल डालते हुए नवगृह का आवाहन करना चाहिए, तथा वैदिक मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करके पूर्व लिखित विधा द्वारा पूजन करना चाहिए।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्‌यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्‌ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्‌धादक स्नानम् - (शुद्‌ध जल से स्नान करावे)

शुद्‌धवालः सर्व्वं शुद्‌धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्‌द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्‌द्रा नभोरूपाः पार्ज्जत्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्घु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए

चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात्

यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ঌ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यैयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विदद्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्त्विन्द्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣳ सं प्परिपातु व्विश्श्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम ७ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ꣸ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣸ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ ☬ शुना ते अ ☬ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु्र्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

बोध प्रश्न

1 यज्ञ मण्डप मे नवग्रह वेदी स्थापन कि दिशा कौन सी है।

1 पूर्व दक्षिण के कोने मे 2 दक्षिण पश्चिम के कोने मे

3 उत्तर पश्चिम के कोने मे 4 उत्तर पूर्व के कोने मे

2 नवग्रह वेदी मे बुध का आवाहन किस कोण मे होता है

1 वायव्य कोण 2 नैऋत्य कोण

3 अग्नि कोण 4 ईशान कोण

3 नवग्रह वेदी मे अधि देवता प्रत्याधि देवता का आवाहन कहा होता है।

1पूवञ्ञ्ज शुक्र के पास 2 ईशान बुध के पास

3 सूर्य के उत्तर दक्षिण 4 या अन्य

4 नवग्रह मण्डल मे केतू शनि के किस तरफ रहते है।

1 दाए 2 बाए

3 ऊपर 2 अन्य

5 नवग्रह पूजन किया जाता है।

1 यज्ञ सिद्धि के लिए 2 देवता की प्रसन्नता के लिए

3 लक्ष्मी के लिए 4 उपरोक्त सभी के लिए

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 नवग्रह वेदी की निर्माण विधि बतायें।

प्रश्न - 2 नवग्रह वेदी पर सूर्य का स्थान बतायें।

प्रश्न - 3 नवग्रह वेदी पर शुक्र का स्थान बतायें।

प्रश्न - 4 नवग्रह वेदी पर शोम का स्थान बतायें।

प्रश्न - 5 नवग्रह पूजन का विधान विधि पूरवक लिखें।

♦♦♦

इकाई- 19 वेदिकास्थापन-पूजन- 4 असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वेदिकास्थापन के क्रम में असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई के अध्ययन से असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन निम्न बातों की जानकारी प्राप्त होगी।

क. असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल का स्थान।

ख. अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल का स्थान।

ग. आवाहन का ज्ञान।

घ. पूजन का ज्ञान।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. असंख्यातरुद्र इन्द्रादिदशदिक्पाल स्थान एवं आवाहन पूजन का।

ख. अष्टद्वारपाल तथा पंचलोकपाल स्थान एवं आवाहन पूजन का।

ग. इन्द्रध्वज के आवाहन पूजन का।

घ. हनुमत्ध्वज के आवाहन पूजन का।

असंख्यात रुद्र -

असंख्यात रुद्र तथा इन्द्राधि दसधिक पाल नवगृह वेदी के दाहिनी ओर दक्षिण दिशा की तरफ असंख्यात रुद्र की रचना करके कलश स्थापन करना चाहिए, मन्त्र-

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्मा त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माव्विशताद्द्रयिः।।

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।

तेषा ऽ सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

रुद्राः रुद्रगणाश्चैव असंख्याताः प्रकीर्तिताः।

तेषामावाहये भक्त्या स्वीकुर्वन्त्वर्चनं मम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः, असंख्यात रुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ ७ समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः, असंख्यातरुद्रानः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु।

पूर्व लिखित पूजन विधा द्वारा षोड्शो पचार पूजन करना चाहिए-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ꣬ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣬ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यौयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विदद्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मतीयोजात्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣸ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम ७ सस्निनतमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ᳪ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ॠतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣳ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ॠतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं

समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।
हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूजन के उपरान्त निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिए-

बोध प्रश्न

1 असंख्यात रूद्र कि वेदी नवग्रह के किस लगती है।

1 पूर्व 2 पश्चिम

3 उत्तर 4 दक्षिण

2 असंख्यात वेदी मे किसका आवाहन होता है।

1 विष्णु 2 शंकर

3 कृष्णजी 4 या अन्य

3 असंख्यात रूद्र पूजा विधान प्राप्त होता है।

1 वेद से 2 पुराण से

3 इतिहास से 4 अन्य से

4 असंख्यात रूद्र पूजा की जाती है।

1 साधना सिद्धि के लिए 2 मंत्र सिद्धि के लिए

3 यज्ञ रक्षा के लिए 4 उपरोक्त सभी के लिए

5 असंख्यात रूद्र का आशय है।

1 शक्ति 2 विष्णु

3 शिव 4 नवग्रह

प्रार्थना

ॐ रुद्राः रुद्रगणाश्च रुद्र-सुहृदाः शान्तं शिवं शंकरम्।

कैलाशाचल-वासिनः शिव-समाः सर्वे च शूलं धराः।।

वृषभस्था च भुजंगहार-भसिता-भस्मांगरागान्विताः।

ते सर्वे शिवरूपि-भद्ररुद्राः कुर्वन्तु नः मंगलम्।।

हाथ में जल लेकर के असंख्यात रुद्र को समर्पित करें-

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करें- अनेन पुजनेन असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्तां न मम।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे असंख्यातरुद्रकलशस्थापनं पूजनश्च सम्पूर्णम्।)

इन्द्राधि दसदिक पाल-

दसदिक पाल यज्ञ मण्डप में इन्द्राधि दसदिक पाल का स्थान रखना चाहिए पात्र में जल भर कर नारियल से पूर्ण करते हुए निहित स्थानों पर रखना चाहिए।

पूर्व दिशा में इन्द्र का आवाहन मन्त्र-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र, हवेहवे सुहव, शूरमिन्द्रम्।

ह्नयामि शक्क्रं पुरुहूतमिन्द्र, स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।

आवाहये यज्ञसिद्धयै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

अग्निकोण में अग्नि का आवाहन मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

2. अग्निः- (अग्निकोण में अग्नि का आवाहन करें)

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तत्र्वश्श्च व्वन्द्य।

त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष, रक्षमाणस्तव व्व्रते।।

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमर्द्धानं द्विनासिकम्।

षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षिण दिशा में यम का आवाहन मन्त्र -

3. यमः- (दक्षिण में यम का आवाहन करें)

ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।

स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्त्रे।।

महामहिषमारुढ़ दण्डहस्तं महाबलम्।

यज्ञ-संरक्षणार्थाय यममावाहायाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

नेरित्व कोण में नेरित्व का आवाहन मन्त्र-

4. निर्ऋतिः- (नैऋत्यकोण में निर्ऋति का आवाहन करें)

ॐ असुत्र्वत्र्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामत्र्वहि तस्क्करस्य। अत्र्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु।।

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।

आवाहये यज्ञसिद्धयै नरारूढं वरप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन मन्त्र-

5. वरुण:- (पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।)

ॐ तत्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वत्र्दमानस्तदाशास्तै यजमानो

हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश, स मा न ऽआयुः प्रमोषीः।।

शुद्ध-स्फटिक-संगाश जलेशं यादशां पतिम्।

आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायब्य में वायु का आवाहन मन्त्र-

6. वायु:- (वायव्य कोण में वायु का आवाहन करें।)

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर, सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

मनोजवं महातेजं सर्वश्चारिणं शुभम्।

यज्ञ-संरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायते नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तर में सोम का आवाहन मन्त्र करें-

7. सोम:- (उत्तर दिशा में सोम का आवाहन करें।)

ॐ व्व्यय, सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः।

प्रजावन्तः सचेमहि।।

इसान कोण में इसान का आवाहन मन्त्र-

8. ईशान:- (ईशान कोण में ईशान का आवाहन करें।)

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जित्रवमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेद-सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।

आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इसान और पूर्व के मध्य में ब्रह्मा का आवाहन मन्त्र-

9. ब्रह्मा:- (पूर्व-ईशान के मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।)

ॐ अस्म्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहतौ सजोषाः। यः श, सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्जेष्ठा ऽअस्माँ2 ऽअवन्तु देवाः।।

पद्मयोनिं चतुर्मूर्ति वेदगर्भं पितामहम्।

आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञ-संसिद्धि-हेतवे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

नैरित्य और पश्चिम के मध्य में अनन्त का आवाहन मन्त्र-

10. अनन्त - (नैऋत्य-पश्चिम के मध्य में अनन्त का आवाहन करें।)

ॐ स्योना पृथिविनो भवात्रृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।

जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा मन्त्र -

पूर्व में लिखित मंत्रों द्वारा प्रतिष्ठा करें।

पूर्व विधा द्वारा इनकी भी पूजा करके प्रार्थना करनी चाहिए।

ॐ तस्म्मादृयज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृहयताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृहयताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए

गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामित्र्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्र्विन्दद्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाडकुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्त्रदत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ꣸ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि

समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम ७ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣳ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु्ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

बोध प्रश्न

1 दशदिक्पाल मे यम का आवाहन किस दिशा मे होता है।

1 पूर्व 2 पश्चिम

3 उत्तर 4 दक्षिण

2 दशदिक्पाल आवाहन मे अनन्त की दिशा कौन सी है।

1 पूर्व ईशान के मध्य मे   2 पूर्व अग्नेय के मध्य मे

3 दक्षिण नैॠत्व्य के मध्य मे 4 पश्चिम नैॠत्व्य के मध्य मे

३ दशदिक्पाल में अग्नि का आवाहन कहा होता है।

1 पूर्व और दक्षिण के कोने में

2 दक्षिण और पश्चिम के कोने में

3 पश्चिम और उत्तर के कोने में

4 उत्तर और पूर्व के कोने में

4 दशदिक्पाल की पूजा की जाती है।

1 दिशाओं की रक्षा के लिए 2 लक्ष्मी प्राप्त के लिए

3 विद्या प्राप्त के लिए   4 उपरोक्त में से कोई नहीं

५ दशदिक्पाल की पूजा का विधान प्राप्त होता है।

1 वेदों से   2 पुराणों से

3 इतिहास से 4 अन्य से

पंचलोक पाल

यज्ञशाल में किसी पात्र में सुपारी या पांच कलश या नवगृह में भी पंचलोकपाल का आवाहन सुविधानुसार करें जिसके स्थान एवं मन्त्र निम्नलिखित हैं-

गणेश का आवाहन मन्त्र-

1. गणपतिः- (राहो उत्तरे गणपतिमावाहयत्।)

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ, हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ, हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ, हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।

आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकरम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गा का आवाहन मन्त्र-

2. दुर्गाः- (शनेरुतरे दुर्गामावाहयेत्।)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातितीयतो वेदः।

स नः पर्षदति दुर्गाणि नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।

नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

वायु का आवाहन मन्त्र-

3. वायुः- (सूर्यस्योत्तरे वायुमावाहयेत्।)

ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि।

नियुत्वान्सोमपीतये।।

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणाम्।

सर्वाधारं महावेगं गृगवाहनमीश्चरम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाश का आवाहन मन्त्र-

4. आकाश:- (राहीर्दक्षिणे आकाशमावाहयेत्।)

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तर-स्थितम्।

आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्वनिकुमार का आवाहन मन्त्र-

5. अश्विनौ - (केतोर्दक्षिणे अश्विनौ आवाहेत्।)

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।

तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

प्रतिष्ठा मन्त्र-

पूर्व में लिखित मन्त्रों द्वारा प्रतिष्ठा करें।

एवं पूर्वालिखित विधा द्वारा पूजन करना चाहिए।

बोध प्रश्न

1 पंचलोक पाल देवता के आवाहन के अन्त्तगत नवग्रह वेदी में गणेश का आवाहन किसके साथ होता है। (बगल)

1 बुध के बाये 2 गुरू के दाहिने

3 शनि के उत्तर 4 राहू के उत्तर

2 पंचलोक पाल आवाहन के समय सूर्य के उत्तर किस लोकपाल का आवाहन होता है।

1 गणेश 2 दुर्गा

3 वायु 4 आकाश

३ पंचलोक पाल का पूजन होता है।

1 सांध्या में 2 स्नान के समय

3 पूजन के समय 4 भोजन के समय

४ पंचलोक पाल कहते है।

1 गणेशादि पांच देवताओं को

2 नवग्रह को

3 भैरवादि देवताओं को

4 मातृका आदि को

5 पंचलोक पाल के पाचवें देवता कौन है।

1 गणेश जी	2 दुर्गा जी
3 वायु जी	4 अश्विनी कुमार जी

अष्ट द्वार पाल:-

यज्ञ मण्डप की रचना में द्वार पालों का स्थान बतलाया गया है, प्रारम्भ में भी द्वार पाल के स्थान पर द्वारपालों का स्थापन एवं पूजन करना चाहिए।

इन्द्रद्ध्वज-हनुमतध्वज -

इन दोनों ध्वजों की चर्चा भी पूर्व की जा सकी है, पूर्व लिखित निर्देशानुसार इसका भी पूजन एवं स्थापन करें।

बोध प्रश्न

1 अष्ट द्वारपाल में किसका आवाहन पहले होता है।

1 विजय　　2 जय

3 या इनमे से कोई नही

2 अष्ट द्वार पाल मे विजय और जय का स्थान किस द्वार पर दिया गया है।

1 पूर्वी　　2 उत्तरी

3 पश्चिमी　　4 दक्षिणी

३ अष्ट द्वारपाल का पूजन क्यों है।

1 कार्य सिद्धि के लिए

2 विजय प्राप्त के लिए

3 प्रवेश अधिकार प्राप्त के लिए

4 उपरोक्त में से कोई

4 अष्ट द्वार पाल पूजन का क्रम क्या है।

1 गणेश पूजन के उपरांत 2 पृथ्वी पूजन के उपरांत

3 वेदी पूजन के पश्चात 4 सर्व प्रथम

5 अष्ट द्वार पाल में दक्षिण दिशा में किसका आवाहन होता है।

1 गणेश का 2 धात्र का

3 विधात्री का 4 उपरोक्त में से कोई नहीं

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न - 1 असंख्या तरूद्र निर्माण की दिशा बतायें।

प्रश्न - 2 द्वद्रादि दस दिगपाल का वैदिक आवाहन मंत्र लिखें।

प्रश्न - 3 अष्ट द्वार पाल के स्थानों पर प्रकाश डालिये।

प्रश्न - 4 पंचलोक पाल का आवाहन मंत्र लिखिए।

प्रश्न - 5 पूजा विधि बतायें।

♦♦♦

इकाई- 20 वेदिकास्थापन-पूजन- 5
प्रधानपीठस्थापन-पूजन

प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वेदिका स्थापन के पूर्व कर्म में प्रधानपीठ के निर्माण तथा आवाहन पूजन पर प्रकाश डाला गया है जिस देवता के निवत्त कार्य किया जाय उन्हीं को प्रधान देवता के रूप में स्थापित किया गया है यहा पर उदाहरण के लिए सर्वोतोभद्र देवता को प्रधान पीठ के रूप में वर्णित किया गया है इस इकाई के अध्ययन से निम्न बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

क. प्रधानपीठ के निर्माण की विधि।

ख. आवाहन का विधान।

ग. पूजन का विधान।

घ. प्रार्थना का विधान।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी को बोध होगा।

क. प्रधानपीठ के स्थान का।

ख. प्रधानपीठ वेदी के निर्माण का।

ग. प्रधानपीठ देवताओं के आवाहन का।

घ. प्रधानपीठ देवताओं के पूजन का।

यज्ञशाला के मध्य में या अग्नि या इसान कोण के मध्य में एवं पूर्व दिशा में एक विशेष वेदी का निर्माण करना चाहिए जिसकी लम्बाई, चौड़ाई सब वेदियों से बड़ी हो यहां पर प्रधान वेदी के रूप में सर्वतो भद्र मण्डल देवता की चर्चा कर रहे हैं, एक चौकोर वेदी की रचना कर सफेद वस्त्र पर ऊपर नीचे से चित्रानुसार 18 कोष्ठक बनाएं-

निर्माण विधि

काठ की सवा हाथ लम्बी, चौड़ी एवं ॐची चौकी अथवा वेदी में श्वेत, पीत अथवा वस्त्रावेष्टित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर (खड़ी एवं तिरछी) उन्नीस रेखा खींचने से अठारह-अठारह कोष्ठक का सर्वतोभद्र मण्डल (वेदी) बनता है। वेदी के चारों कोनों में तीन पद का श्वेत खण्डेन्दु, पांच कोष्ठक कृष्ण श्रृंखला ग्यारह पद की हरित या नीला वल्ली नव कोष्ठक का रक्त भद्र चौबीस पर का श्वेत वापी, बीस पद की पीत परिधि (वेदी के अन्दर की परिधि) तथा मध्य वेदी में पांच श्वेत पद में अष्टदल बनाना चाहिए। वेदी के बाहर सत्व-श्वेत से, रज-रक्तवर्ण से तथा तम-कृष्ण से तीन परिधि बनावें। उक्त पदों (कोष्ठकों) को रक्त, पीत, हरित एवं कृष्ण वर्ण से तण्डुल (अक्षत) रंगकर पूरित करना चाहिए। वेदी बनाकर यज्ञमण्डप में (पूजा स्थल में) पूर्व दिशा के मध्य में स्थापित करके पूजन करना चाहिए। यज्ञमण्डप के छोटे या बड़े होने पर उसी अनुपात में वेदी की लम्बाई चौड़ाई भी कम ज्यादा आधी डेढ़ गुणा या दो गुना करना चाहिए।

सर्वतोभद्र मण्डलम्

पूर्व

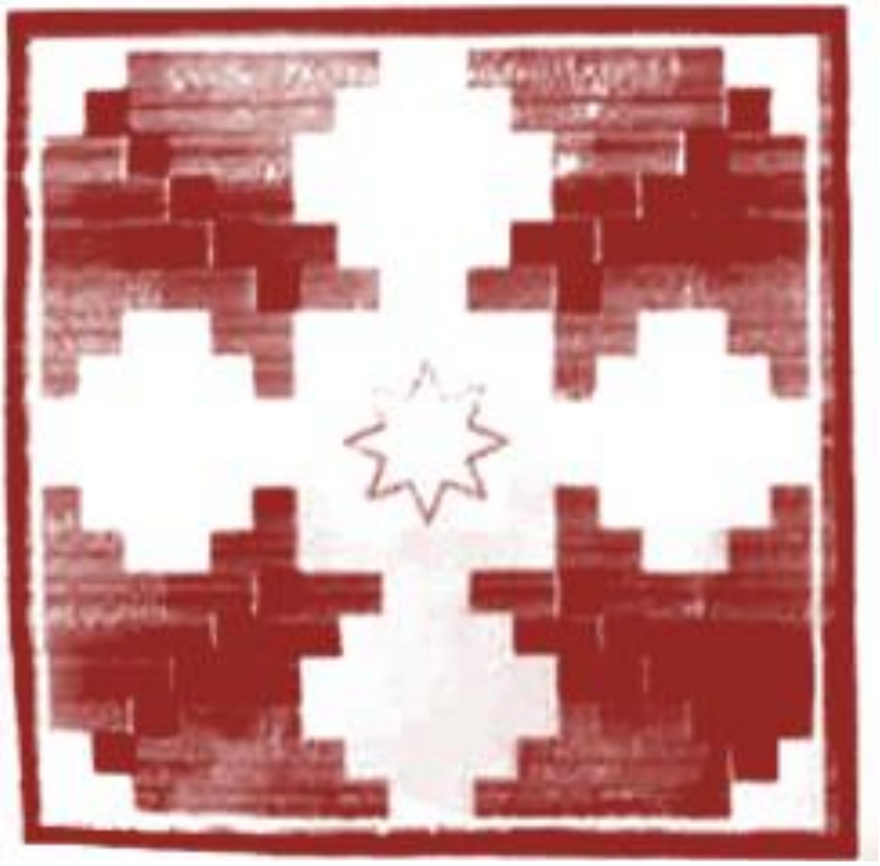

नोट-अक्षत ही पूजन में ग्राह्य एवं सर्वश्रेष्ठ है अतः वेदी रंगीन अक्षतों से ही पूरित करना चाहिए कुछ लोग नानावर्ण की दाल प्रयुक्त करते हैं वह शास्त्रसम्मत नहीं है। वैसे भी अनुष्ठानादि कार्य में द्विदल (दाल) वर्जित है।

रंगीन चावलों से सुसज्जित करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा देवताओं का आवाहन करें मन्त्र-

सर्वतोभद्र-मण्डल (वेदी) निर्माण-विधिः

सवा हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर 18-18 खाने बनावे तथा पुस्तक के अन्त में दिये गये सर्वतोभद्र वेदी चित्र के अनुसार उन खानों में रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञ मण्डप अथवा पूजन स्थल के पूर्व भाग में, मध्य में रखकर आवाहन व पूजन करें।

अथ सर्वतोभद्र-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनश्च

(किसी भी देवी देवताओं के पूजन, अनुष्ठान यज्ञादि में प्रधान वेदी के रूप में सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण तथा पूजन किया जा सकता है। प्रायः लोग विष्णु इत्यादि देवताओं के पूजन में इसका प्रयोग करते हैं।

- **अक्षत छोड़ते हुए देवताओं का आवाहन करें।**
- **आवाहयामि.. के बाद स्थापयामि, पूजयामि का भी उच्चारण करें।**

1. **ब्रह्मा (मध्य कर्णिकायाम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।**
2. **सोमः (उत्तरवाप्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।**
3. **ईशानः (ऐशान्यां खण्डेन्दौ) - ॐ भूर्भुर्व स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।**

4. इन्द्रः (पूर्वे वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

5. अग्निः (आग्नेय्यां खण्डेन्दौ) - ॐ भूभुर्व स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

6. यमः (दक्षिणे वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः यमाम नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

7. निर्ऋतिः (नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ) - ॐ भूभुर्व स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

8. वरुणः (पश्चिमे वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

9. वायुः (वायव्यां खण्डेन्दौ) - ॐ भूभुर्व स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

10. अष्टवसवः (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवावाहयामि स्थापयामि।

11. एकादशरुद्राः (यम-निर्ऋतिमध्ये) - ॐ भूभुर्व स्वः एकादश-रुद्रभ्यो नमः, एकादश-रुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

12. द्वादशादित्याः (ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

13. अश्विनौः (इन्द्राग्निमध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

14. विश्वेदेवाः (अग्नि-यममध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः सर्पतृक-

विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि।

15. सप्तयक्षाः (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) - ॐ भूर्भुव स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानामावाहयामि स्थापयामि।

16. नागाः (निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे) - ॐ भूर्भुव स्वः अष्टकुल-नागेभ्यो नमः, अष्टकुल-नागानावाहयामि स्थापयामि।

17. गन्धर्वाप्सरसः (वरुण-वायुमध्ये भद्रे) - ॐ भूर्भुव स्वः गन्धर्वाऽप्सराभ्यो नमः, गन्धर्वऽसरस आवाहयामि स्थापयामि।

18. स्कन्दः (ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिंगो वा) - ॐ भूर्भुव स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

19. वृषभः (तदुत्तरे) - ॐ भूर्भुव स्वः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

20. शूलमहाकालौ (तदुत्तरे) - ॐ भूर्भुव स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः, शूलमहाकालौ आवाहयामि स्थापयामि।

21. दक्षादिसप्तगणाः (ब्रह्मेशानमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूर्भुव स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादि-सप्तगणान् आवाहयामि स्थापयामि।

22. दुर्गा (ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्) - ॐ भूर्भुव स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

23. विष्णुः (तत्पूर्वे) - ॐ भूर्भुव स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

24. स्वधा (ब्रह्माग्निमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

25. मृत्युरोगाः (ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगान् आवाहयामि स्थापयामि।

26. गणपतिः (ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

27. अपः (ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि स्थापयामि।

28. मरुतः (ब्रह्म-वायुमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुत आवाहयामि स्थापयामि।

29. पृथ्वी (ब्रह्मणः पादमूले) - ॐ भूभुर्व स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

30. गंगादि नद्यः (तदुत्तरे) - ॐ भूभुर्व स्वः गंगादिनदीभ्यो नमः, गंगादिनदी आवाहयामि स्थापयामि।

31. सप्तसागराःः (तदुत्तरे) - ॐ भूभुर्व स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरान् आवाहयामि स्थापयामि।

32. मेरुः (कर्णिकापरिधौ) - ॐ भूभुर्व स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

33. गदा (सत्वबाह्यपरिधौ) - ॐ भूभुर्व स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।

34. त्रिशूलः (ऐशान्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः त्रिशूलाय नमः,

त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

35. वज्रः (पूर्वे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

36. शक्तिः (योग्नेय्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

37. दण्डः (दक्षिणे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

38. खड्गः (नैर्ऋत्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

39. पाशः (पश्चिमे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।

40. अंकुशः (वायव्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः अंकुशाय नमः, अंकुशमावाहयामि स्थापयामि।

41. गौतमः (तद्धाह्यो उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण) - ॐ भूर्भुर्व स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।

42. भरद्वाजः (ईशान्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

43. विश्वामित्रः (पूर्वे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

44. कश्यपः (आग्रेय्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

45. जमदग्निः (दक्षिणे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

46. वशिष्ठः (नैर्ऋत्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

47. अत्रिः (पश्चिमे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

48. अरुन्धती (वायव्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

49. ऐन्द्रीः (पूर्वे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः ऐन्द्रयै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

50. कौमारी (आग्नेय्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

51. ब्राह्मीः (दक्षिणे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः ब्राह्मयै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

52. वाराही (नैर्ऋत्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः वाराहयै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

53. चामुण्डाः (पश्चिमे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

54. वैष्णवी (वायव्ये) - ॐ भूर्भुर्व स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

55. माहेश्वरीः (उत्तरे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः माहेश्वर्यै नमः,

माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

56. **वैनायकी (ईशान्याम्) - ॐ भूर्भुव स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।**

आवाहन के उपरान्त वैदिक मन्त्र से प्रतिष्ठा करें- मन्त्र-

प्रतिष्ठाः-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट य्यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामौ3 प्रतिष्ठा।।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं

समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप ꣳ संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्त्रद्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विदद्वान्त्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्ठया मतीयोजात्विन्द्र ते

हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्चा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्र्दत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न्पुमान् पुमा ॐ सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्निनतम ७ सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्र्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्र्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣳ ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

> **ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।**
>
> **गङ्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।**
>
> **चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।**
>
> **करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।**
>
> **ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।**

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

> **ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।**
>
> **व्वसन्न्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।**
>
> **पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।**
>
> **एलादिचु◌ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।**
>
> **ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।**

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूर्व लिखित विधा द्वारा पूजन तथा हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-मन्त्र-

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् |

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् |

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् |

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् |

पुनः हाथ में जल लेकर समर्पित करें।

विशेष वेदी के ऊपर कलश स्थापन का विधान है तथा वेदी के सम्मुख जल पूरित कलश रखने का विधान है जल से युक्त कलश यदि वेदी पर रखा जाए तो वेदी बिगड़ सकती है इसलिए वेदी के ऊपर धातु कलश वस्त्र से आक्षादित करके रखना चाहिए तथा सम्मुख सुविधानुसार वरुण कलश भी रखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

1 सर्वतोभद्र मण्डल वेदी के चारो दिशाओ मे किसका आवाहन होता है।

1 गणेश 2 पंचलोकपाल

3 शस्त्रो को 4 वेदो का

२ प्रधान पीठ में कितनी कोष्ठक होते है।

1. 16 2. 64

3. 72 4. 81

3 प्रधान पीठ के कितने प्रकार होते है।

1. 2   2. 4

3. यज्ञ के अनुसार   4 अधिक

4. प्रधान पीठ चारो कोने पर किस देवता का आवाहन होता है।

1. गणेश जी   2. दुर्गा जी

3. चारों वेदों का   4 उपनिषदों का

5. प्रधान पीठ किस देवता का आवाहन होता है।

1. गणेश जी   2. दुर्गा जी

3. विष्णु जी   4 समस्त देवताओं का

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न - 1   प्रधान-पीठ निर्माण की विधि बतायें।

प्रश्न - 2   प्रधान-पीठ निर्माण में कोष्ठक की संख्या बतायें।

प्रश्न - 3   प्रधान पीठ आवाहन की विधि बतायें।

प्रश्न - 4   प्रधान पीठ पूजन विधि पर प्रकाश डालें।

प्रश्न - 5   प्रधान पीठ आरती तथा पुष्पान्जली का विस्तार पूर्वक वर्णन करें।

♦♦♦

परिशिष्ट

चतु- वष्टि पदात्मक यज्ञ वास्तु मण्डलम्

पूर्व

एकलिंगतो भद्र मण्डलम्

पूर्व

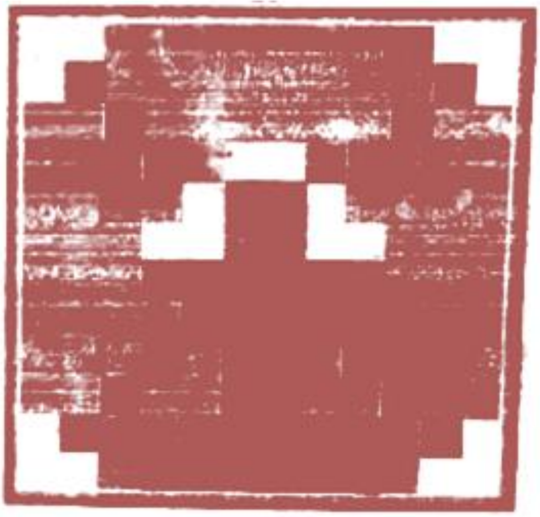

सप्तदश कोष्ठात्मक चतुर्लिंगतोभद्र मण्डलम्

पूर्व

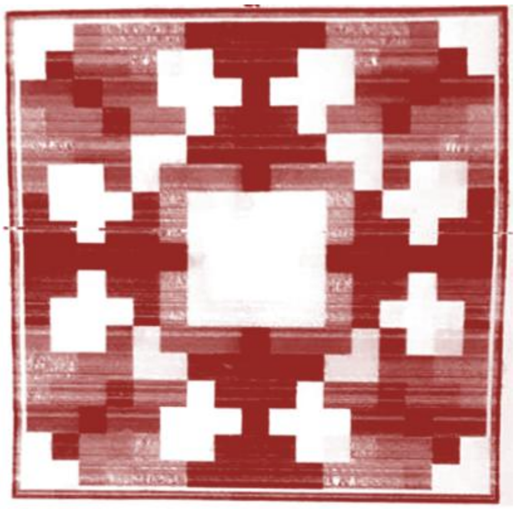

त्रयस्त्रिशं् कोष्ठात्मक द्वादशलिंगतोभ्रद मण्डलम्

पूर्व

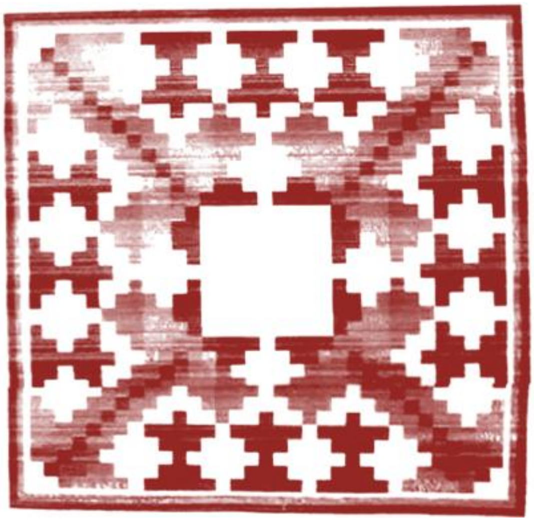

क्षेत्रपाल मण्डलम्

पूर्व

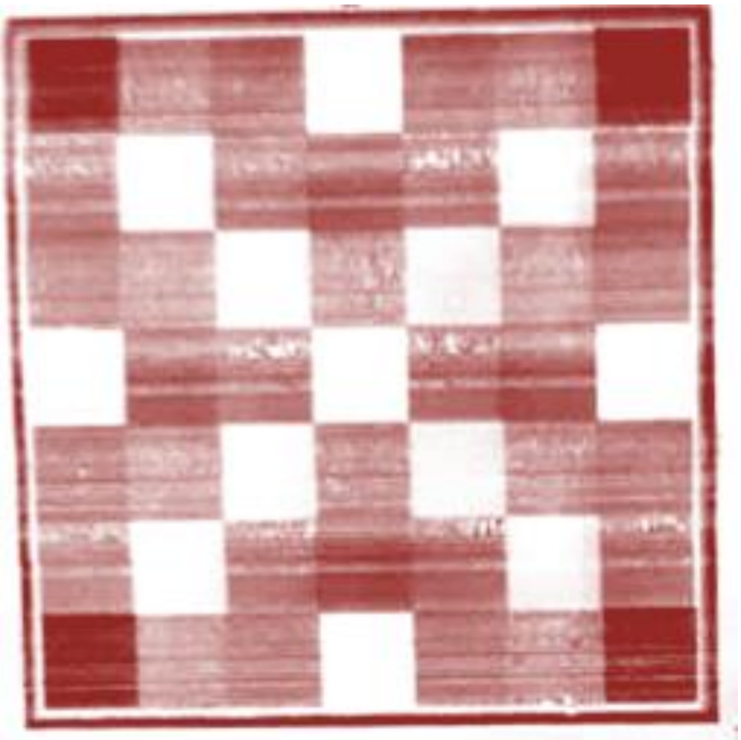

अष्ट मुदाएं

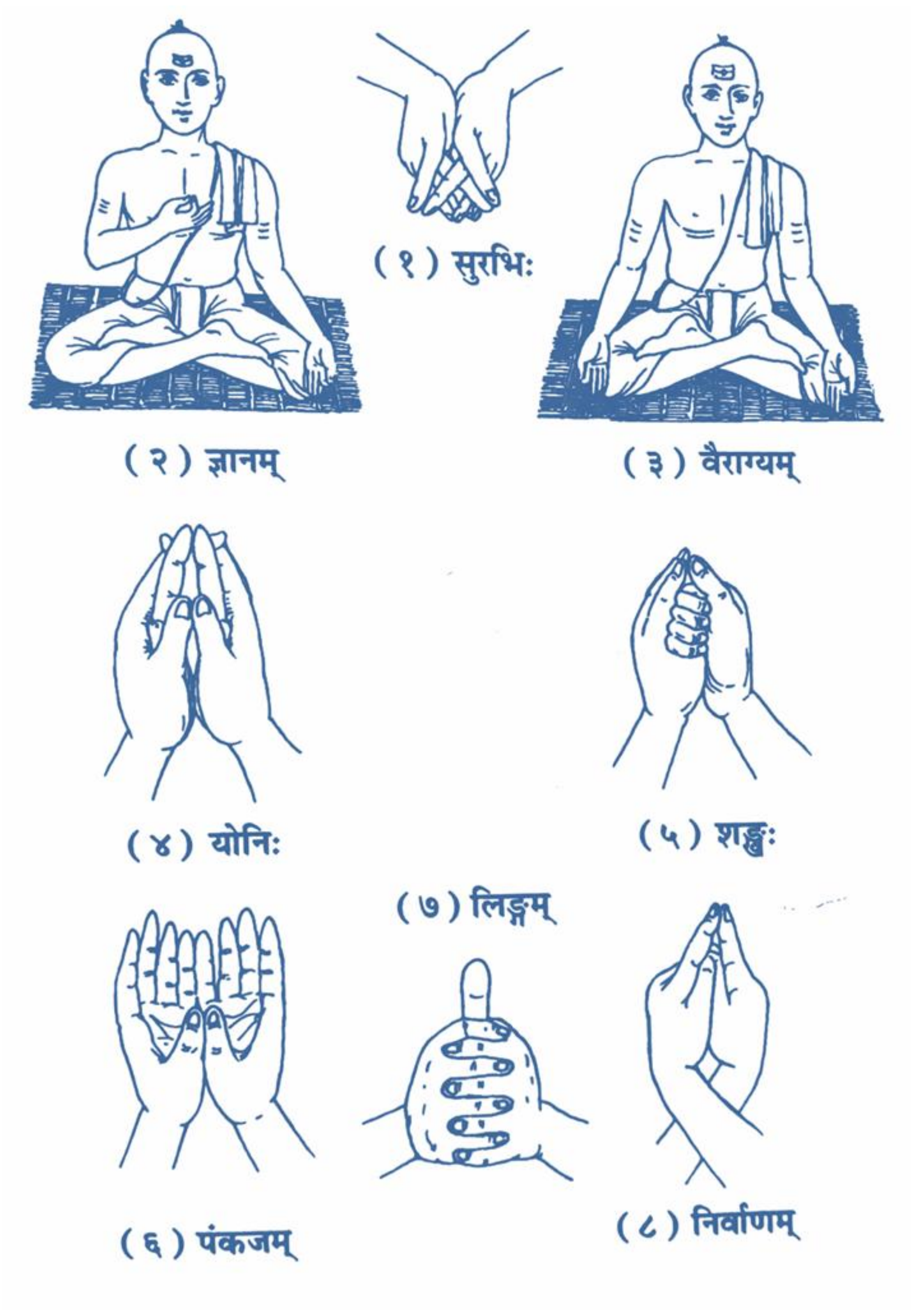

प्रातःकालीन सूर्योपस्थापन

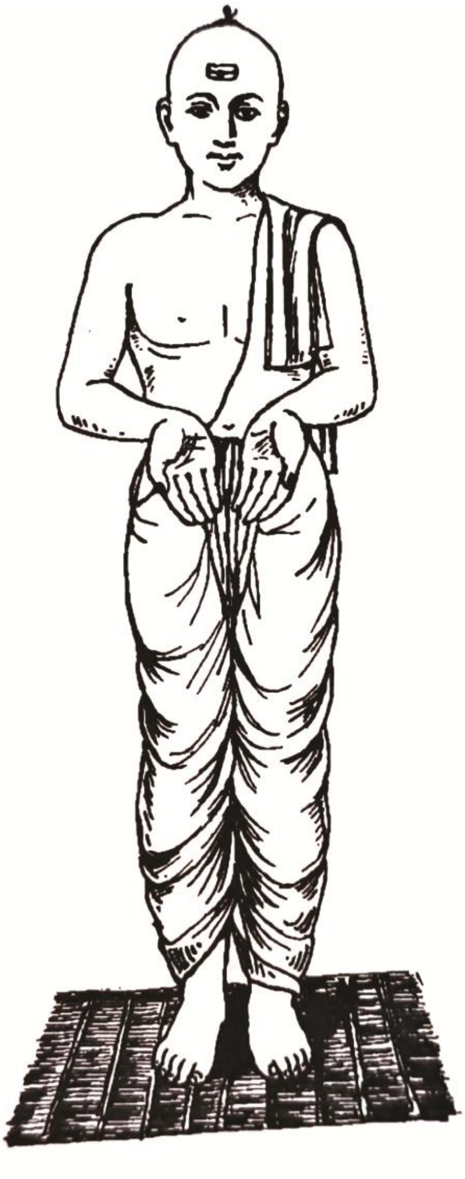

सूर्यार्ध्य

संध्या पात्र

षडङ्गन्यास

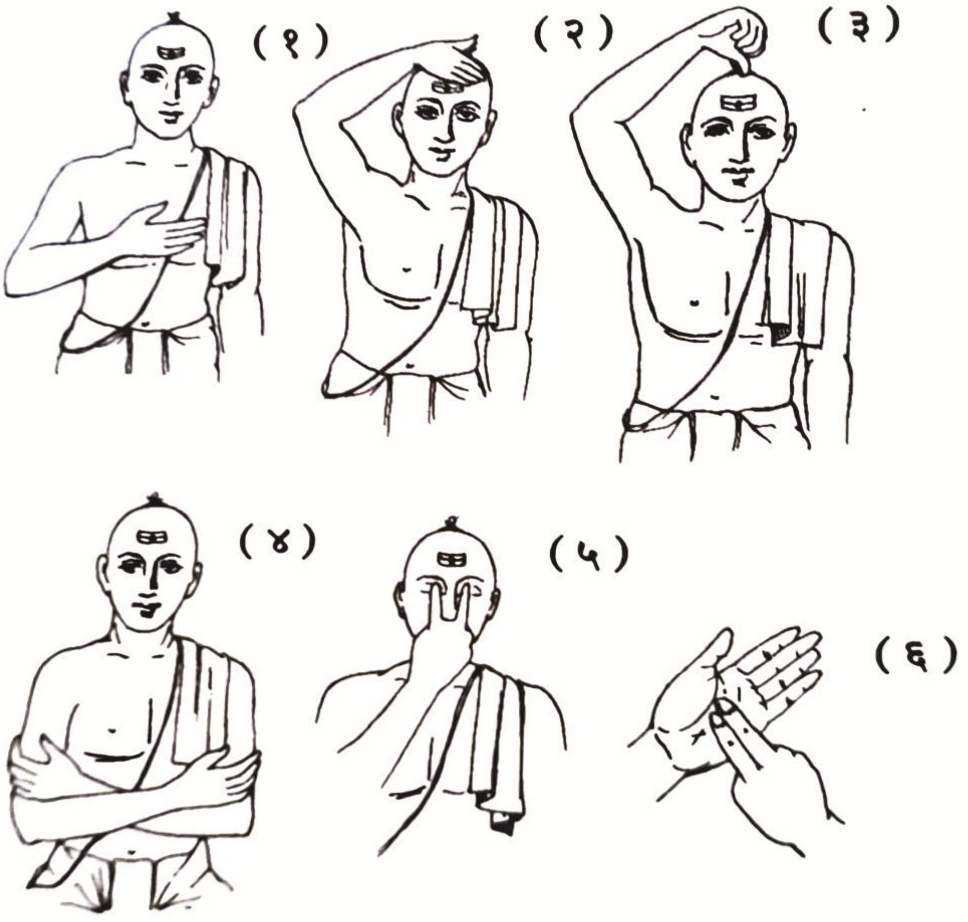

बलिहरण-मण्डल

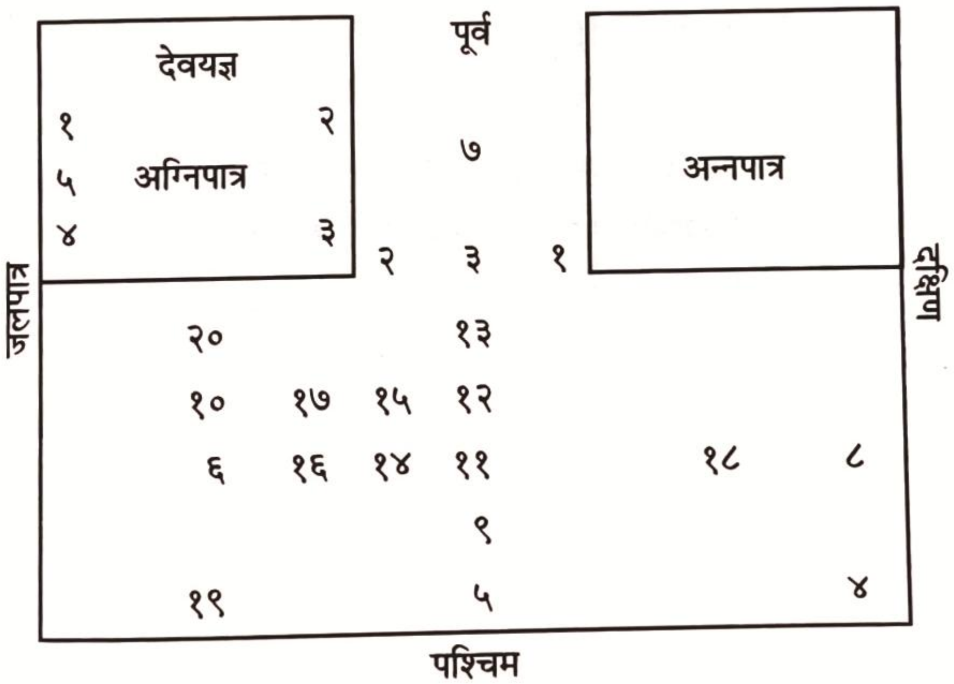
पूर्व
देवयज्ञ
१
२
७
अन्नपात्र
५
अग्निपात्र
४
३
२
३
१
जलपात्र
दक्षिण
२०
१३
१०
१७
१५
१२
६
१६
१४
११
१८
८
९
१९
५
४
पश्चिम